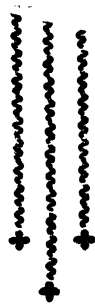
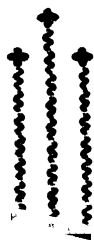


UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180142

UNIVERSAL
LIBRARY

योरोपीय साहित्य



लेखक

विनीदशङ्कर व्यास

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H 880**
V 99E Accession No. **P. G. H 1743**
Author **०यास , विनोदशङ्कर**
Title **योरोपीय साहित्य . 1955.**

This book should be returned on or before the date last marked below.



सत्साहित्य-प्रकाशन-ग्रंथ

(पूर्वकाल)

लेखक

विनोदशङ्कर व्यास

प्रकाशक

सत्साहित्य-प्रकाशन-ग्रंथ

बनारस ।

प्रधान वितरक—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय



कापीराइट १९५५ ई०
लेखक द्वारा सुरक्षित

प्रथम संस्करण
विजया १९५५ ई०
मूल्य
दो रुपये

मुद्रक
श्री राधाकान्त खण्डेलवाल 'साहित्यरत्न'
खण्डेलवाल प्रेस,
भैलपुर, बनारस ।

क्रम-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
मानव	११
साहित्य का विकास	१३
यहूदी-साहित्य	२१
तालमुद्	२४
ओल्ड टेस्टामेन्ट	२४
बाइबिल की कविता	३२
न्यू टेस्टामेन्ट	३७
यूनानी साहित्य	४०
कवि हिंसोड	४०
महाकवि होमर	४२
इलियड	४३
आडेसी	४८
यूनानी गीति-काव्य	५३
यूनानी नाटक	६२
इसकाइलस	६७
साफोक्लीज	७१
इडिपस एट कालोनूस	७६
एण्टीगोन	७८
यूरिपिडीज	८१

एरिस्टोफिनीज	८४
यूनानी दर्शन	८६
यूनानी इतिहास	९७
लैटिन साहित्य	१०४
ल्यूक्रीटियस	१०७
कैटलस	१०९
वर्जिल	१०९
होरेस	१२३
एलिजी कविता की धारा	१२४
ल्यूकन	१२६
दर्शन शास्त्र	१२८
रोमन इतिहास	१३३
जूलियस सीजर	१३३
सलूस्ट	१३४
लेवी	१३५
टेसिटस	१३६
नाटक	१३६
गद्य-साहित्य	१३९
सिसरो	१३९



निवेदन

श्रद्धेय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक विश्व-इतिहास की झलक में योरोपीय साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में संकेत किया था। वास्तव में हिन्दी में इस विषय की कोई पुस्तक नहीं थी। उन शब्दों ने मुझे प्रेरणा दी और मैं इस कार्य में तन्मय हो गया। ६ वर्षों के घोर परिश्रम के पश्चात् मैंने नीचे लिखी हुई तीन पुस्तकें प्रस्तुत कीं—(१) योरोपीय उपन्यास साहित्य, (२) योरोपीय साहित्यकार, (३) योरोपीय साहित्य।

१९५२ ई० में योरोपीय साहित्यकार का सचित्र सुन्दर संस्करण प्रकाशित हुआ, किन्तु दुर्भाग्य और असफलताओं ने ही सब ओर से इसका स्वागत किया। राष्ट्रभाषा का गौरव और महत्त्व कितना ही समझाया जाय, किन्तु यह अटल सत्य है कि हिन्दी में ऐसी पुस्तकों की माँग नहीं है। अंग्रेजी में इस विषय की एक अमेरिकन पुस्तक के चार संस्करण केवल दो मास में ही समाप्त हो गये थे लेकिन हिन्दी में तीन वर्षों में एक सौ प्रतियाँ भी नहीं निकल सकीं।

जनता की रुचि अश्लील और 'सेक्स' सम्बन्धी पुस्तकों के प्रति विशेष है। लेखक अपनी सफलता के लिए उसी ओर अपना ध्यान जमा लेते हैं। आज इसी तरह की पुस्तकें हिन्दी में धूम से बिक रही हैं। हमारे देश में इस समय सबसे बड़ी

आवश्यकता अच्छे साहित्य की है। जब साहित्य के निर्माता को जीवन में सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार दिखाई पड़ता है तब प्रकाश की किरणें वह कैसे बिखेर देगा? बिहार-वालों को प्रान्तीयता और जातीयता के लिए भले ही कोसा जाय, किन्तु वहाँ जितना ध्यान लेखकों पर दिया गया है, उतना अन्य किसी प्रान्त में नहीं दिखाई पड़ता है। कोई भी आत्मसम्मानी लेखक भिच्चा माँग कर दुकड़ों पर जीना नहीं पसन्द करेगा; वह केवल अपना पारिश्रमिक चाहेगा। जब पुस्तकें ही नहीं बिकेंगी तो उसे मिलेगा क्या? दूसरी ओर प्रकाशकों की नीति लेखकों के प्रति और भी घातक है।

ऐसे युग में जब अपने अपने नहीं हो रहे हैं तब संसार को एक चित्र के रूप में देखना तभी सम्भव होगा जब सभी देशों के साहित्य और संस्कृति का पूर्ण रूप से अध्ययन किया जाय। और तभी उन देशवालों के प्रति आकर्षण और सहानुभूति जागरित हो सकती है। साहित्य द्वारा ज्ञान की आँखें खुलती हैं।

हिन्दी में पाश्चात्य साहित्य पर जब कोई पुस्तक निकलती है तब लोगों की प्रायः धारणा हो जाती है कि यह अंग्रेजी की किसी पुस्तक का अनुवाद है। मैंने इस विषय की सैकड़ों पुस्तकों का अध्ययन कर अपने दृष्टिकोण से ही यूरोपीय साहित्य प्रस्तुत किया है। साहित्य का इतिहास जैसे रुखे विषय को कथा के रूप में ढालकर मैंने इसे सरस बनाने का प्रयत्न किया है जिसमें साधारण शिक्षित पाठक भी इसका

आनन्द ले सकें। ऐसी पुस्तकें किसी को पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकतीं, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैंने जब 'जागरण' पत्र निकाला था तब एक साहित्यिक मित्र ने कहा था कि हिन्दी में पचास वर्ष बाद ऐसे शुद्ध साहित्यिक पत्र की आवश्यकता होगी। उस पत्र का बन्द होना ही उनके कथन का प्रमाण है। ठीक वही बात आज भी मेरी इन पुस्तकों के साथ है।

यूरोपीय साहित्य का सम्पूर्ण इतिहास प्रकाशित करने की व्यवस्था नहीं हो सकी। इस सम्बन्ध में बहुत प्रयत्न करने पर भी निराश ही होना पड़ा। इस पुस्तक में पूर्वकाल के यहूदी, यूनानी और लैटिन साहित्य के विकास का विवरण प्रस्तुत किया गया है। यूरोपीय देशों के साहित्य के मूलाधार ये ही तीन साहित्य हैं। यूनानी साहित्य का प्रभाव समस्त यूरोपीय साहित्य पर पड़ा है अतएव पूर्वकाल के इतिहास का अध्ययन करने पर उनकी संस्कृति और साहित्य का यथार्थ परिचय प्राप्त होता है। आज के युग में ऐसी पुस्तकों की अत्यन्त आवश्यकता है।

छोटी कहानियाँ लिखने में अभ्यस्त होने के कारण मूल तत्वों को भी मैंने, संक्षिप्त रूप में उपस्थित करने का प्रयत्न किया है। प्रचार की दृष्टि से कम मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित करना भी उचित प्रतीत होता है। परिस्थितियों के कारण पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ रह गई हैं, जिसके लिए मैं विवश था।

छोटे टाइप में अधिक मैटर देकर पुस्तक को विशेष सुन्दर नहीं बनाया जा सका ।

युग बदल रहा है । देश में सर्वत्र शिक्षा का विस्तार हो रहा है । साहित्य द्वारा ही मानव-हृदय में प्रकाश की उज्ज्वल रेखाएँ अंकित हो जाती हैं । मेरी यह पुस्तक यदि कुछ सहायक हो सकी तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा ।

नीचे लिखे लेखकों का काल उनके सम्बन्ध में इस पुस्तक में विवरण पढ़ते समय पाठक ध्यान में रखेंगे । प्रूफ को असावधानी के कारण इन लेखकों का काल नहीं जा सका ।

१. ल्यूक्रीटियस—(६५-५१ ई० पूर्व)
२. कैटलस—(८७-४७ ई० पूर्व)
३. वर्जिल—(७० ई० पूर्व-१९ ई०)
४. होरेस—(६४-८ ई० पूर्व)
५. ल्यूकन—(३९-६५ ई०)
६. जूलियस सीजर—(१०२-४४ ई० पूर्व)
७. सलूस्ट—(ई० पूर्व ८६-३५)
८. लेवी—(५९ ई० पूर्व-१९ ई०)
९. टेसिटस—(५४-१२० ई०)
१०. सिसरो—(१०६-४३ ई० पूर्व)

विजया
१९५५ ई०

}

विनोदशङ्कर व्यास

योरोपीय साहित्य

मानव

“मानव को रचना कैसी विचित्र है ! युक्ति में महान्, बुद्धि में असीम, आकृति प्रकृति और गति में निर्वचनीय एवं मनोहर है । वह अपनी कृति में देवदूत के समान और विचार में देवताओं की भाँति है ।”

सचमुच कैसा विलक्षण जन्तु यह मानव है ! वह अपने चमत्कारों का जाल आकाश, पृथ्वी और जल में बिछाये हुए है । असम्भव को सम्भव करने वाला मानव, अपनी बुद्धि और ज्ञान के बल पर कितना महान् है, सर्व शक्तिमान् है । दूसरी ओर विध्वंस और युद्ध की मनोवृत्ति के कारण वह कैसा हिंसक और वर्वर बन जाता है । स्वार्थ और विजय की लालसा में वह मदान्ध होकर कैसे अपनी ही जाति के लोगों का सर्वनाश करने के लिए आतुर हो जाता है । वह अणु बम और कीटाणुओं का अनुसंधान कर अपनी ही जाति को छिन्न-भिन्न कर देता है ।

लेकिन मानव जीवन में परमार्थ की भावना ही मानवता है । इसी परमार्थ की भावना में लीन होकर वह देवता बन जाता है । मानव, मानव के कल्याण के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग करके अमर होता है । अपने कृत्यों की कहानी छोड़ कर अन्त में स्वयं वह पंचभूत में विलीन हो जाता है ।

आरम्भ में मनुष्य भी जन्तु के समान था । वह अपने पेट की पूजा में ही व्यस्त रहता था । गुफा में निवास करता था । धीरे-धीरे परिवार बना । जाति और श्रेणी का निर्माण हुआ । मस्तिष्क का विकास हुआ । ज्ञान और बुद्धि के बल पर सामाजिक नियम बने । सभ्यता निरन्तर विकसित हुई ।

इस सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई और मनुष्य कब उत्पन्न हुआ यह बड़ा रहस्यमय प्रश्न है । अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास लेखक यच० जी०

वेल्स ने पृथ्वी का आरम्भ दो अरब वर्ष से माना है। हमारे वैदिक संकल्प संवत् के अनुसार भी १६७२६४००५३ वर्ष होते हैं।

विकासवाद के अनुसार मनुष्य की उत्पत्ति १ लाख वर्ष से ६० लाख वर्ष पूर्व तक की मानी जाती है। इस सम्बन्ध में अग्रणीत अनुसंधान हुए और हो रहे हैं, किन्तु इसका निश्चित उत्तर देना कठिन ही नहीं असम्भव है। प्राचीन संवत् और इतिहासों से स्पष्ट हो जाता है कि आर्यों का सृष्टि संवत् और मनुष्योत्पत्ति काल कितना प्रमाणिक है। हमारे यहाँ मनु आर्य जाति के प्रथम पुरुष हैं। मनु का सम्बन्ध समस्त मानव जाति से पाया जाता है। उनके जलप्लावन की कथा पृथ्वी की समस्त मनुष्य जातियों में प्रचलित है। मनु की मछली और नोआ एक ही वस्तु है। जिस प्रकार मनु से सूर्यवंश और चन्द्रवंश चलते हैं, उसी तरह नूह के पुत्र हेम और शेम से समस्त मानव जाति की उत्पत्ति मानी जाती है।

यह इतिहास प्रसिद्ध है कि हजरत नूह के बेटों का नाम हेम और शेम था। हेम से हेमिटिक और शेम से सेमिटिक जाति की उत्पत्ति हुई है। संसार के सभी तरह के लाल, पीले, काले और सफेद रंग के चारों समुदाय, काकेसिक विभाग से ही उत्पन्न हुए देखे जाते हैं। यह बात सर्वमान्य है कि काकेसिक विभाग में आर्य, हेमिटिक और सेमिटिक तीन उप विभाग हैं और तीनों विभागों में से दो विभाग, नूह-पुत्र हेम और शेम की सन्तति हैं।

विद्वानों ने अग्रणीत प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि हजरत नूह आर्य थे। नूह का तूफान, वैवस्वत मनु की मछली वाली कथा का अनुवाद ही है। नूह के बड़े पुत्र हेम की सन्तति, जो मिस्र में रहती है, अपना सम्बन्ध राजा मनु से बतलाती है, अपने को सूर्यवंशी कहती है और मनु वैवस्वत के मूल विवस्वान् सूर्य को अपना इष्ट समझती है।

मनु की मछली अर्थात् नूह के जल-प्लावन की कथा मिस्र, बेबिलन, सीरिया, चीन आदि संसार के समस्त देशों में समस्त जातियों में पाई जाती है। इससे यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि हेम और शेम

से ही, नूह या मनु से ही समस्त मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई है। जो सन् संवत् महाराज मनु का है वही हजरत नूह का है।

सृष्टि में जल-वृषिक की पहले उत्पत्ति हुई। इसके बाद रीढ़ वाले जन्तुओं (मछलियों) की उत्पत्ति हुई, फिर रेंगने वाले जीव उत्पन्न हुए, फिर दूध पिलाने वाले जीव प्रकट हुए, फिर बन्दर, लंगूर और बनमानुष हुए और इसके बाद मनुष्य हुआ। यह वैज्ञानिक अनुसंधान है।

आरम्भ में मनुष्य किस स्थान में उत्पन्न हुआ ? इस सम्बन्ध में बहुतेरे मत हैं। भिन्न-भिन्न विद्वानों का अपना अलग-अलग अनुसंधान है। हिमालय, उत्तरीय ध्रुव, अफ्रिका, जावा आदि स्थानों में मनुष्य के उत्पन्न होने का प्रमाण दिया गया है। किन्तु हम योरोपीय साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं, अतएव हमें यह देखना है कि आरम्भ में योरोप में मनुष्य कहाँ उत्पन्न हुए ? इस सम्बन्ध में स्पेन और फ्रांस का नाम प्रमुख रखा जाता है।

साहित्य का विकास

सभ्यता के सूर्योदय के पूर्व जब न तो मनुष्य लिखना पढ़ना जानता था और न उसके ज्ञान में लिखने पढ़ने की कोई सामग्री ही थी, उस समय भी साहित्य का अस्तित्व था तथा उसका सृजन अज्ञात और अनवरत रूप से हो रहा था। अपने मनोभावों को साकार रूप देने के लिए मनुष्य ने सबसे पहिले वाणी का उपयोग किया होगा। अन्य व्यक्ति तक हृदय गत भावनाओं से संघटन का कार्य सार्थक शब्दों के पारस्परिक विनिमय द्वारा ही हो सका होगा। इतना निश्चित है कि विचारधाराओं की सृष्टि हुई होगी। मनुष्य जब जंगलों और गुफाओं में रहता था तब भी साहित्य था। भयंकर बरनों और पर्वत-प्रदेशों के जीव जन्तुओं का विविध ज्ञान उसे नित्य के पर्यटन और आखेट में निश्चय ही नये अनुभव के रूप में प्राप्त होता रहा होगा। इतर जातियों से युद्ध का कार्य भी अनिवार्य रहा होगा। वह इन विविध भावनाओं और अनुभवों को कथा के रूप में न कह कर, हृदय-कोश में संचित कर बन्द रख

सका हो, यह कदापि सम्भव नहीं। सुख-दुःख में गुणगुना कर उसने अपने करुण अथवा हर्ष के भावों को अभिव्यंजित कर कविता की सृष्टि की होगी। अपनी सन्तानों को परम्परागत नियम और धर्म को शिक्षा उसने दी होगी।

प्राचीन काल की कथाओं में ऐसी शिक्षाप्रद और ज्ञान-वर्धक बातें मिलती हैं कि उन्हें आरम्भिक न कह कर प्रौढ़ और उन्नतकाल की कहना उचित होगा। इनके विकास में अनेक पीढ़ियों का समय अवश्य लगा होगा। शान्त, एकान्त निर्जन स्थानों में रहने वाले असभ्य, नैतिकता, चरित्र और आत्मबल में नगर निवासी सभ्यों की अपेक्षा तब की तुलना में आज के विकास युग से वे कहीं अच्छे थे। उनके पास अलिखित साहित्य का भंडार भरा रहता था। प्रायः लोग यही समझते हैं कि उस युग के मनुष्य जंगली थे, किन्तु उनके इन्हीं पूर्वजों ने सर्व प्रथम साहित्य के मौलिक आधार निर्मित किये थे।

जन्म काल से ही मनुष्य का साहित्य से ऐसा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, जिसका अज्ञात रूप से विकास होता रहता है। माताएँ, बच्चों को गीत सुनाती हैं, परियों की कहानी कहती हैं—वास्तव में यहीं से साहित्य की शिक्षा आरम्भ हो जाती है। लिखित साहित्य का मूलाधार यह अलिखित साहित्य ही है। जंगली तथा पहाड़ी लोगों को अनेक ऐसी पुरानी कविताएँ कंठगत रहती हैं, जो अनेक ऐसी वंश परम्पराओं से चली आती आज भी सुरक्षित हैं। आधुनिक विद्वानों ने इन निरक्षरों की कंठस्थ रचनाओं को मुद्रित एवं लिखित पाठों से जब मिलाया तो चकित होकर देखा कि उनमें अत्यधिक साम्य है।

निरक्षरों में भी साहित्य रहता है और बराबर उसका विकास होता रहता है। लिखित कला की शिक्षा पाकर मनुष्य अपने भावों को स्पष्ट करता है। विचारों के प्रकाशन और लेखन की प्रतिक्रिया सर्वदा होती रहती है और यह कहना कठिन है कि कौन एक दूसरे को अधिक प्रभावित करता है। व्यापक अर्थ में मनुष्य सदैव साहित्य लिखता अथवा

शब्दों द्वारा व्यक्त करता रहता है। यद्यपि यह कार्य अनजान में और बिना किसी कौशल के प्रयोग में आता रहता है।

मानव अपने जीवन में गद्य-पद्य दोनों का सृजन करता है। गद्य लिखने के बहुत पहिले ही उसने कविता बनाकर गुन-गुनाया था। भावनाओं की भाषा ही तो कविता है। हाँ, गद्य का आधार अवश्य तर्क बताया जाता है। कहा जाता है कि सर्वप्रथम लेखक और कवि पादरी अथवा धर्म प्रचारक ही थे। उन्होंने धर्म और युद्ध सम्बन्धी कविताएँ तथा कहानियाँ लिखीं। इतना तो निश्चित है कि गद्य की अपेक्षा मनुष्य पद्य सरलतापूर्वक याद कर लेता है। कविता गद्य की तुलना में मनुष्य को अधिक प्रिय है। यह स्वाभाविक प्रवृत्ति सर्वत्र दिखलाई पड़ती है।

साहित्य सृजन का प्रारम्भिक इतिहास, मनोवैज्ञानिक आधार के आवरण में निहित है। यह बात उस समय अधिक स्पष्ट हो जाती है जब हम देखते हैं कि अधिकांश बालकों की अभिव्यंजनशैली कोमल कान्त पदावली से युक्त कवितामय होती है। क्या व्यक्ति और क्या समष्टि दोनों के ही इतिहास में साहित्य का आरम्भ कविता से ही होता है। अनेक कवियों ने ज्ञान की विविधता के रहते हुए भी बालकों के सरल और छल-कपट रहित दृष्टिकोण से ही कविता करने का प्रयत्न किया है। अनेक शताब्दियों पूर्व लिखित कविताओं में आज भी जो आकर्षण है, उसका सम्भवतः यही रहस्य है।

शेक्सपियर ने नाटक साधारण दर्शकों और श्रोताओं के लिए लिखे थे, अध्ययन के लिए नहीं। गद्य का विकास भी वक्तृत्व से ही माना जाता है। पठन के पूर्व लोगों ने भी श्रवण किया था और लिखने के पहिले उसकी अभिव्यक्ति की थी। इसी अभिव्यंजन शक्ति का विकास लिखित साहित्य में हुआ है। सेन्ट जॉन का कथन है कि, 'विश्व में सबसे पहिले शब्द ही था।' यही बात समस्त विश्व की रचनाओं पर लागू होती है।

मिस्र और ईरान की सभ्यता का यूनान पर प्रभाव पड़ा और यूनान की सभ्यता की छाप समस्त योरोप पर पड़ी। ६ से ७ हजार ईसा पूर्व मिस्र और ईरान में नगर और मन्दिरों का निर्माण हो गया था। उनके यहाँ सामाजिक व्यवस्था और खेती सिंचाई का भी प्रबन्ध था। सुमेरियनों की अपनी भाषा थी। आरम्भ में चित्र अंकित कर वे अपना भाव प्रकट करते थे। बाद में मिट्टी की ईंटों पर लीपि का प्रयोग हुआ। मिस्र में पायरस (पेड़ की छाल) पर नरकट की लेखनी से लिखा जाता था। चित्रों द्वारा ही विचारों के प्रदर्शन के पश्चात् लिपि की उत्पत्ति हुई। सुमेरियन और मिस्री प्रयोगों द्वारा ही बाद में अक्षरों का निर्माण हुआ। मिट्टी की ईंटों पर ही कानून का लेखा प्रस्तुत होता था और राजा अथवा पुरोहित की आज्ञा भी इसी भांति लिखी जाती थी। उसको चिरस्थायी और प्रामाणिक बनाने के लिए उन पर मोहर लगा दी जाती थी।

सुमेरिया (ईरान) में पुरोहितों का शासन चलता था और मिस्र में पेरोह राज्य करता था; वह ईश्वर के रूप में पूजा जाता था। पुरोहित स्वप्नों के द्वारा ही जीवन के क्रम को व्यवस्थित करते थे। वह अशुभ की सूचना देते और बलिदान के लिए आज्ञा देते थे। आकाश के तारे देख कर वे फसल बोने का निर्णय करते थे।

मिस्री और हेब्रू साहित्य पर बेबिलोनियन साहित्य और सभ्यता का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। बेबिलोनियन साहित्य और सभ्यता लगभग १५०० वर्षों तक (२००० से ५०० ई० पू०) फलती फूलती रही। मिस्री तथा हेब्रू साहित्य और सभ्यता पर ही नहीं, बल्कि यूनानी, रोमन और चीनी सभ्यता पर भी उसका विशेष प्रभाव पड़ा था। यही नहीं, चीनी सभ्यता तथा अन्य सभ्यताओं का भी प्रभाव बेबिलोनियन, मिस्री तथा हेब्रू साहित्य पर दृष्टिगोचर होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक दूसरे देश के व्यापारी वर्ग, युद्ध बन्दी तथा घुमकड़ जातियाँ अपने देश के साहित्य तथा सभ्यता की विरासत और परम्परा को लेकर अन्यान्य देशों में विचरण करती थीं। इस तरह उनकी सभ्यता से प्रभावित होती थीं

और अन्य देशों की सभ्यता उनकी सभ्यता से। वस्तुतः आज किसी भी देश की सभ्यता एकमात्र अपने देश की सभ्यता नहीं बल्कि अन्यान्य सभ्यताओं का संमिश्रण है, जो अपने देशी रूप में उसी देश की कहलाने लगती है।

प्राचीन काल की सभ्यता का सूत्रपात ८००० ई० पूर्व मिस्र में मिलता है, किन्तु वास्तव में लिखित अथवा चित्रित साहित्य २००० वर्ष ई० पूर्व के लगभग मिलना आरम्भ होता है। उस समय से मानवीय विचारों का एक तारतम्य मिलता है, जिससे सभ्यता के विकास का मूल्यांकन किया जा सकता है। सब से पहिले साहित्यिक महत्व की लिखित सामग्री आमेनहोतेप प्रथम के समय की मिलती है, जिसमें उसने अपने पुत्र को राजकीय परामर्श दिया है। वैसे कुछ लिखित सामग्री उससे पहिले की भी मिलती है।

आमेनहोतेप प्रथम की मृत्यु के १८० वर्ष बाद मिस्री साहित्य का विकास आरम्भ होता है। उसके पश्चात् आमेनहोतेप तृतीय के राज्य काल में साहित्य तथा अन्य कलाओं का विकास होता रहा। उसने लगभग ४५ वर्ष तक राज्य किया। उसके राज्य में शिल्प कला की काफी उन्नति हुई। रैमसीज द्वितीय के राज्य काल में—इसके लगभग ५०० वर्ष बाद (१२६० ई० पूर्व से १२२५) विशेष रूप से उन्नति हुई। उसके काल में न सिर्फ देश में ही मिस्री कला और साहित्य का विकास हुआ बल्कि समुद्र पार के अन्य देशों में भी इसका प्रचार हुआ, जिसकी स्मृति 'सिद्वाद जहाजी' जैसी कहानी में आज भी सुरक्षित है। अलीबाबा और चालीस चोर की कहानी इसी प्रकार की है।

इस काल में मिस्री साम्राज्य नील नदी के किनारे पतली बलुही पट्टी पर फैला हुआ था। यहाँ पर जंगली जानवरों द्वारा आक्रमण का भय बना रहता था, किन्तु अब उनका खतरा सर्वथा मिटा दिया गया था।

कई प्रकार की घुमक्कड़ जातियों से मिलकर हेब्रू जाति का निर्माण हुआ था। इसलिए इस जाति में बहुत कुछ उनके रीति-रिवाजों का सामंजस्य पाया जाता है। हेब्रू लोग भूमध्य सागर के किनारे-किनारे

मिस्र के उत्तर में बसे थे। यहाँ पर इन लोगों ने अपना एक उपनिवेश बसा लिया था, जो अब फिलीस्तीन के नाम से प्रसिद्ध है।

रैमसीज के राज्य के अन्तिम काल में हेब्रू लोगों ने फिलिस्तीन नाम का अपना एक संघ बना लिया था। इस स्थान पर उनका आधिपत्य तक बना रहा। इसके बाद जेरुजेलम का विघटन हुआ। यह विघटन ७० ई० पूर्व के बाद रोमन आधिपत्य के विरुद्ध यहूदियों के विद्रोह का परिणाम था। जैसे आज भी अरब और यहूदियों के झगड़े का प्रश्न है उसी प्रकार उस समय भी जेरुजेलम में रोमन बस्ती बसाने का विरोध हुआ था।

सब से महत्व पूर्ण बात यह है कि १४६० ई० पूर्व में हेब्रू लोगों ने नील नदी के किनारे अपना स्वतंत्र आधिपत्य स्थापित करना आरम्भ कर दिया था। मिस्री साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया था और हेब्रू जाति की संपन्न-शक्ति बढ़ती जा रही थी।

जोसेफ और रैमसीज के राज्य काल के मध्य के ३६० वर्ष बहुत ही ही महत्व पूर्ण रहे। इस बीच में अमेनहोपेत काल विशेष उल्लेखनीय है। इसी काल में सब से पहिले मोनोथीइज्म (एकेश्वरवाद) प्रचलित हुआ। इसके अनुसार सूर्य की किरणों से पूरा जीवन संचालित होता था। और सूर्य ही एक मात्र देवता माना जाता था। मिस्री साहित्य में अनेक प्रकार की सूर्य-स्तुति सम्बन्धी कविताएं मिलती हैं।

मिस्री साहित्य में सूर्य देवता से प्रार्थना के सामूहिक गीतों की परम्परा दिखलाई पड़ती है। जब कभी नदी में बाढ़ आती तो किसान मिलकर सामूहिक रूप से देवता की आराधना करते थे। मिस्री और हेब्रू साहित्य का पारस्परिक सम्पर्क भी गहरा था। रैमसीज के काल का साहित्य बहुत कुछ चीनी कविता के ढङ्ग का होता था। मिस्री साहित्य का सब से सुन्दर उदाहरण किसानों और राजगीरों के गीतों में मिलता है। उस काल में बड़े-बड़े सामन्त और धनिक वर्ग विलासी गीतों से अपना मनोरञ्जन करते थे। किसानों के गीतों और नाटकों को यह वर्ग बहुत गिरी दृष्टि से देखता था।

हेब्रू मजदूर पिरामिड बनाते समय अपने जीवन संघर्ष के गीत गाते थे। वे युद्ध-बन्दी के रूप में वहाँ लाये गये थे और उनका भाग्य वहाँ के अन्य मजदूरों के साथ बँध गया था। उस काल में मजदूरों की आर्थिक स्थिति बड़ी चिन्ताजनक थी। उनके रहने के लिए छोटी-छोटी भोपड़ियाँ थीं, जिनमें न रोशनी का प्रबन्ध था और न रहने का पर्याप्त स्थान ही था। उनको भोजन के लिए जो सामग्री मिलती थी, वह पूरी नहीं पड़ती थी और अधिकांश समय उपवास ही करना पड़ता था, जिसे वे गीत गाकर ही सहन करते थे। उन गीतों में उनके जीवन का दुख-दर्द मुखरित हो उठता था, वे आशा करते थे कि उनकी ध्वनि फरोह बादशाह के कानों तक पहुँच जायगी।

जब हेब्रू लोग लाल सागर को तरफ निकल कर गये तो वे विशेषतः घुमक्कड़, गानेवाली जाति के रूप में बन गये। उनके गीत में ओज होता था और जीवन में कटुसत्य से संघर्ष की प्रेरणा होती थी। गीत और कहानियाँ ही निराश्रित और निरीहों का एक मात्र अवलम्ब होती हैं।

पिछली सभ्यता के इतिहास के पृष्ठों को पलटने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय का साहित्य, जब तक कि उसमें साम्राज्यवाद की भावना प्रबल नहीं होने पाई थी, कितना ओजपूर्ण और सुन्दर था; किन्तु जैसे ही लोग धनी और दरिद्र होने लगे, उनमें विलासिता आ गई, तब से साहित्य जनता से हटकर धनिक वर्ग के महलों की चहार-दीवारी में सीमित हो गया। अन्त में राजाओं की हार-जीत और उनकी विलासिता पर ही साहित्य की रचना होने लगी।

इसके बाद मिस्र की भूमि पर अनेक राज्य आये और चले गये। उनके साथ उनकी संस्कृति पर भी सब की छाप पड़ती गई, लेकिन परिवर्तन काल में लेखक की शैली में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, भले ही कला में परिवर्तन हो। पत्थर पर शब्दों की खुदाई, मन्दिरों की दीवारों पर चित्रांकन, मिट्टी के चक्रों पर लिखना, आदि सभी बातें उसी क्रम से चलती रहीं।

मिस्री लोग शव को एक विशेष रीति से दफनाते थे। पत्थर के सन्दूक में शव को वैज्ञानिक रीति से सुरक्षित करके रख देते थे, जो हजारों वर्ष तक ज्यों का त्यों बना रहता था। कब्रों के पीछे गड़े पत्थरों पर मृतक की प्रशंसा में लिखे हुए वाक्य और कविताएँ मिलती हैं, जो मिस्री साहित्य की एक विशेष निधि है। ये पत्थर रूपी पुस्तकें सब मिलाकर एक हजार मील लम्बी है। इसमें मिस्री दर्शन और रहस्य का पुट मिलता है।

मिस्री लोग तीन प्रकार की आत्मा मानते थे। उनका विश्वास था कि मरने के बाद तीनों आत्माएँ शरीर से निकल जाती हैं। पहली आत्मा, जिसे चेतन आत्मा कहते हैं, हवा में मिल जाती है। दूसरी आत्मा, जिसे दैवी पत्नी कहते हैं। तबतक एक पेड़ से दूसरी पेड़ पर जाती और हजारों वर्षों तक इसी तरह घूमती-फिरती रहती है जब तक तीसरी आत्मा परमात्मा की स्वीकृति से शरीर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं पा लेती।

ईसा की आरम्भिक शताब्दी में हम साधारणतः सभी पूर्वी देशों में प्रचलित वैराग्य की विचारधारा पाते हैं। प्राकृतिक बन्धनों और कठिनाइयों के होते हुए भी उस काल में देशों में पारस्परिक निकटता अत्यन्त घनिष्ठ थी। पूर्वीय दार्शनिक विचारधारा के दो दृष्टिकोण प्रचलित थे। एक चीन के कनफ्यूशियस की और दूसरी बुद्ध की। दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते थे और दोनों में बहुत कुछ साम्य भी था।

आज भी उस काल की बहुत-सी ऐतिहासिक खोजों के लिए हमें चीन की पुस्तकों का आधार लेना पड़ता है और चीन को भारतीय पुस्तकों का।

१५०० ई० पू० के लगभग जब मनुष्य को अपने विचारों को लिखित स्वरूप देने की प्रवृत्ति हुई तो उसने सब से पहिले उन्हें ईंट पत्थरों के टुकड़ों पर लिपि बद्ध करना आरम्भ किया। आरम्भिक कठिनाई उसके सामने यह आई कि किस रूप में विचारों को सूचन और स्पष्ट

रूप में अंकित किया जाय । इसके लिए अनेक पूर्वोक्त देशों ने हाइरो-ग्लिफिक (वस्तुओं के चित्रों द्वारा शब्दांकन) की प्रणाली अपनाई ।

बाद में पत्थर और ईंट के अतिरिक्त लकड़ी, चमड़ा, मिट्टी के चक्के, धातु और एक विशेष प्रकार के पेड़ की छाल पर भी विचारों का अंकन किया जाने लगा । यह अंकन एक विशेष रीति द्वारा किया जाता था । जानवरों के बालों से तूलिका बनाई जाती थी और उसके द्वारा विभिन्न रङ्गों में अंकन किया जाता था ।

इस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों और समय के उतार-चढ़ाव से होता हुआ संघर्षशील मानव प्रगति करता गया और उसकी सभ्यता ने एक आधार स्थापित किया । भाषा ने संगठित रूप पाया ।

यहूदी-साहित्य

प्राचीन काल में अनेक जातियों के भगवान मूर्ति के आकार में मन्दिर में पूजे जाते थे । यदि मूर्तियाँ तोड़ दी जातीं या मन्दिरों का विध्वंस हो जाता तो भगवान का भी अन्त हो जाता था । भगवान के सम्बन्ध में यहूदियों की विचारधारा नवीन थी । स्वर्ग में रहने वाले उनके ईश्वर पुरोहितों और बलि से कहीं अधिक महान समझे जाते थे । यहूदियों का विश्वास था कि उनके ईश्वर अब्राहम द्वारा जेरुजेलम की स्थापना संसार में न्याय और सत्य का सूचक होगा ।

प्राचीन पुस्तकों की तिथि निर्धारित करना आज भी असम्भव-सा प्रतीत होता है । इस दिशा में सदियों से मनुष्य का प्रयास विशेष सफल नहीं हुआ । दो हजार वर्ष पूर्व ईसाई, पादरी या यहूदी लेखकों ने सत्य की खोज में काफी प्रयत्न किया और वे कुछ सफल भी हुए थे ।

ईसा की सदी से एक हजार वर्ष पूर्व हेब्रू जाति बहुत शक्तिशाली थी । धीरे-धीरे ईस्वी सदी के आरम्भिक वर्षों में उसका पतन आरम्भ हुआ और उसे अपनी मातृभूमि छोड़कर दर-दर भटकने पर विवश होना पड़ा । तब से लगातार भूमि रहित जाति की भांति हेब्रू लोग

यहाँ-वहाँ घूमते रहे, किन्तु जहाँ से भी वे हटे उनकी सभ्यता और साहित्य का प्रभाव बना रहा। विशेषतः स्पेन में सदियों बाद तक और अन्य देशों में भी वहाँ के गद्य-साहित्य के विकास में यहूदियों ने विशेष योग दिया।

यहूदी-साहित्य की भाषा और शैली में पर्याप्त परिवर्तन हुए। उनका गद्य-साहित्य अन्य पश्चिमी गद्य-साहित्य की भांति अपने प्राचीन रूप और शैली को छोड़कर नये परिधान में पुष्ट होता गया। उन लोगों ने प्राचीन मात्रा और छन्दों के संगठन में उस स्थान की जनता, जहाँ-जहाँ वे जाकर बसे, की भाषा के अनुरूप नवीन रूप से प्रस्तुत किया।

पुराने बाइबिल का ईश्वर अपने अपरिचितों के लिए भी निर्दयी नहीं है। वह मानव सुख के प्रति भी उदासीन नहीं है। उनका ईश्वर संध्या की ठंडी हवा में अपने बगीचे में सैर करता है। वह पकाये हुए माँस की सुगन्ध में आनन्द लेला है। वह सुसज्जित महलों में रहता है, उसे महलों की चमकती हुई सुनहली सजावट से भी प्रेम है।

साहित्य के विद्यार्थियों को सब से बड़ी कठिनाई यह होती है कि पुराने बाइबिल के भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं। इनमें से आज-कल के कट्टर यहूदियों के बीच प्रचलित पुराने बाइबिल के प्रथम पाँच ग्रन्थों को प्रमाणिक समझना चाहिये। कहा जाता है कि वास्तव में ये ग्रन्थ जेहोवा की प्रेरणा से बने थे। इसके अतिरिक्त सत्तर यहूदी लेखकों द्वारा तैयार किया गया यूनानी भाषा का सेन्टुवाजिन्ट (पुराने बाइबिल का एक रूप) — जो फाराओ, थोलेमी पिलाडेलफस (२८५, २४७ ई० पू०) आदि साहित्यिकों के उपयोग के लिए रचा गया — इसीका ही बाद में लैटिन में रूपान्तर हुआ और ईसाइयों के लिए प्रमाणिक ग्रन्थ माना गया। १६ वीं शताब्दी के रिफॉर्मेशन वालों ने इसका बहिष्कार किया, क्योंकि इसका रूपान्तर दोष पूर्ण समझा गया।

इन साहित्य रचनाओं का आरम्भ सोलोमन का राज्य-काल माना जाता है। सोलोमन साहित्यिक रुचि-सम्पन्न सम्राट था। उसने काव्य और सङ्गीत में महत्व प्राप्त किया था। इसी काल में पुराने बाइबिल के

प्रथम पाँच ग्रन्थ निर्मित समझे जाते हैं। यह ई० पू० दशम शताब्दी की बात है।

वेबिलोन द्वारा अधिकार होने के बाद यह ग्रन्थ जेरुजेलम से वेबिलोन लाया गया। ऐसा कहा जाता है कि बाद में ५१५ ई० तक (दारियस के राज्य काल में) नेहेमिया इन धर्मिक ग्रन्थों को फिर से जेरुजेलम में लाया। फारसियों—सिकन्दर के राज्य काल में, यूनानियों तथा तोलेमियों के आधीन यहूदी सम्पादकों ने इन ग्रन्थों में परिवर्तन और परिवर्द्धन किया। इस प्रकार वर्तमान हेब्रू बाइबिल ई० पू० पाँचवीं शताब्दी से बार-बार सम्पादित होकर आज के रूप में आई है।

यहूदी जाति प्रतिभा और शक्ति सम्पन्न जाति थी। इनकी सौन्दर्य-भावनाओं की अभिव्यक्ति इनके साहित्य में पायी जाती है। साधारण कवियों में अमोस गाँव का सम्पन्न और शिष्ट व्यक्ति मालूम पड़ता है, जिसके पास बहुत सी मूल्यवान भेड़ें रहती थीं। बाइबिल के लेखकों में इसीका एक ऐसा साहित्यिक व्यक्तित्व दिखाई पड़ता है जो आज के लेखकों से मिलता जुलता है।

निस्सन्देह बाइबिल के अन्तर्गत योरोपीय साहित्य का मूलाधार निहित है। हेब्रू साहित्य और धर्म का एकमात्र आधार 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' ही है। यही नहीं, ईसाई मतावलम्बी जनसंख्या का भी धर्मिक ग्रन्थ यही है। प्रायः यह देखा जाता है कि धर्म और साहित्य का प्रभाव पड़ोसी देशों पर भी पड़ता है। यही कारण है कि समस्त उत्तरी योरोप में एकमात्र ईसाई धर्म का प्रचार हो गया। 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' वास्तव में यहूदी और ईसाई दोनों धर्मों की आधारशिला है। कालान्तर में यहूदी और ईसाई धर्म अलग हो गये। सब से आश्चर्य की बात तो यह है कि मूल स्रोत से प्रादुर्भूत ये दोनों धर्म एक दूसरे के विरोधी हो गये। इन दोनों धर्मों का आधार 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' ही माना जाता है। ओल्ड टेस्टामेन्ट, के बाद ईसाई 'न्यू टेस्टामेन्ट' के साथ एक मार्ग से आगे बढ़े और यहूदियों ने 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' के पश्चात तालमुद के साथ दूसरे पथ से प्रस्थान किया।

तालमुद

तालमुद में अनेक पीढ़ियों के यहूदी न्यायाधिकारियों द्वारा दिये गये कानूनों का संग्रह और उन पर टिप्पणियाँ हैं। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि ये मौखिक परम्परा पर चली आयी हैं। इनकी प्राचीनता मोसेज (आदिकाल) से मानी जाती है। पुराने विचार के यहूदी आज भी इसे पवित्र मानते हैं। धर्म तथा जाति की रक्षा के लिये यूरोप के यहूदी जेनटाइल लोगों से सदा लड़ते थे, इससे उनका सम्बन्ध अपनी प्राचीन परम्परा से सदैव बना रहा। उसी समय से तालमुद एक उन्नतिशील जाति की प्रगति के ऊपर अपना प्रभाव डालता रहा। तालमुद की गणना विश्व के महान ग्रन्थों में होती है।

यहूदियों के विभिन्न देशों में विकेन्द्रीयकरण तथा उनकी आध्यात्मिक एकात्मता के कारण पार्श्ववर्ती साहित्यों पर तालमुद का प्रभाव नहीं के बराबर पड़ा है। जेनटाइल-साहित्य में तालमुद की बहुत सी लोकोक्तियाँ हैं और यहूदी जाति की विशेषता सूचक उद्धरण भी उसमें मिलते हैं।

ओल्डटेस्टामेन्ट

ओल्डटेस्टामेन्ट के अन्तर्गत उनतालिस पुस्तकें हैं। सैमुएल, किंग्स और क्रानिकल के विभाजन की यदि उपेक्षा की जाय तो ओल्डटेस्टामेन्ट में छत्तिस पुस्तकें आवेंगी। सैमुएल किंग्स और क्रानिकलस ओल्डटेस्टामेन्ट के कैनन कहे जाते हैं, किन्तु 'एपोक्राइफ' सर्वमान्य बाइबिल साहित्य के अन्तर्गत नहीं मानी जाती। इसाई धर्माधिकारी भले ही इन्हे विभेद की दृष्टि से देखें, किन्तु उससे साहित्यिक कोई प्रयोजन नहीं। ओल्डटेस्टामेन्ट की सर्वमान्य पुस्तकों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें प्रथम न्याय (बुक्स आव ला) सम्बन्धी पुस्तकें हैं, द्वितीयतः भविष्य वक्ताओं (बुक्स आव प्रोफेट्स) और

तृतीय विभाजन उन पुस्तकों का होगा जो मिश्रित बाइबिल साहित्य कहा जा सकता है, जिसमें रूथ तथा जात्र की पुस्तकें भी सम्मिलित की जा सकती हैं ।

साहित्य की दृष्टि से बाइबिल में सभी पुस्तकें समान महत्व की नहीं हैं । लम्बी वंशावलि, पादरियों के नियम आदि कुछ ऐसे प्रसंग हैं, जिनकी उपेक्षा कर उनमें वर्णित कहानियों और कविताओं की ओर सहज आकर्षण हो जाता है । यद्यपि धार्मिक दृष्टि से इसकी एक-एक पंक्ति बड़े महत्व की है, पर साधारण पाठक को बाइबिल से जो आन्तरिक उद्भावनायें प्राप्त होती हैं उनका मूल स्रोत इसकी घटनात्मक गाथाओं, नाटकीय अंशों, जीवन कथाओं, गीति काव्य और ईश्वरीय सन्देश वाहक कवितायें ही हैं । मानव जाति के इतिहास और उसके धार्मिक विकास के विवरण रोचक एवं बोधगम्य ही नहीं अपितु शुष्क और अत्यन्त गूढ़ है ।

इस गूढ़ता का मुख्य कारण बाइबिल के उक्त प्रसंगों का सूत्र रूप में रहना ही है । यह कहना कठिन है कि इस विशाल ग्रन्थ के अनेक लेखकों में से किसी के मन में उनकी व्याख्या अथवा विस्तार की बात क्यों न आयी । सम्भव है शब्दशक्ति के अनुसार कुछ शब्दों में बहुत कुछ कहने की शैली ही उन्हें श्रेयस्कर प्रतीत हुई हो ।

ओल्ड टेस्टामेन्ट की सर्व प्रथम पुस्तक जेनिसिस है । इसके प्रथम चार अध्याय सूत्रशैली में लिखे गये हैं । पंचम अध्याय के चौथे वर्स से आदि पुरुष एडम की मृत्यु का संकेत मिल जाता है । इसके बाद संक्षेप में विश्व सर्जन, इडेन के उपवन एडम तथा उसकी सहचरी ईव तथा केन, एबल आदि का समस्त इतिवृत्त समाप्त हो जाता है । जेनिसिस के शेष भाग में नोह, अब्राहम, इसाक, जैकब, जोसेफ तथा उनके भाइयों का जीवन सम्बन्धी विवरण है । जेनिसिस का यह अंश आधुनिक छोटे उपन्यास से भी अल्पकाय है । इसके सम्बन्ध में टाल्सटाय का कथन है कि जोसेफ की घटनात्मक कहानी कला की दृष्टि से अधिक सुन्दर है । वास्तव में जोसेफ का चित्र

पूर्णतया सजीव है। वह साहस और शौर्य की जीती जागती प्रतिमूर्ति है। एडम तक उसके पूर्वजों के चित्र तथा चरित्र धुंधले और छाया-मात्र प्रतीत होते हैं। पाश्चात्य आलोचक जोसेफ की कहानी को साहित्य की कसौटी पर परीक्षित सर्वोत्कृष्ट कृति स्वीकार करते हैं।

बाइबिल साहित्य सम्बन्धी प्राचीन परम्परा के अनुसार एवजोडस ओल्ड टेस्टामेन्ट की द्वितीय पुस्तक है तथा इसमें मोसेज की आत्मकथा वर्णित है। इस पुस्तक से इसराइल का इतिहास सम्बद्ध है। इसी प्रसंग में लेबीटिक्स, नम्बर्स, ड्यूटरोनामी से लेकर पेनटाय्यूख तक का विवरण है। वास्तव में यह पुस्तक वीर रस से ओत-प्रोत एक महाकाव्य है, जिसके एक महान नेतृत्व में प्रवास तथा जनसत्ता की स्थापना का वर्णन है।

मोसेज ने यहूदियों के लिए अनेक कानून बनाये थे। उनमें से कुछ का प्रभाव आज भी उक्त वर्ग विशेष में परिलक्षित होता है। बोधगम्यता तथा अध्ययन के विचार से उक्त कानून दुरुह नहीं। साहित्य की दृष्टि से तो इसका अधिक महत्व स्वीकार किया जाता है।

एवजोडस में सर्वत्र कविता की ऐसी कोमल कान्त भावमय पद-वली मिलती है, जिससे ओल्ड टेस्टामेन्ट के नीरस प्रसङ्गों में भी सरलता और सजीवता की संजीवनी धारा प्रवहमान हो जाती है। मोसेज का उत्तराधिकारी जाशुआ तीन आश्चर्यजनक कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। इसने इसराइल की जनता को जोरडन नदी बिना पैर भीगे ही पार करायी दूसरे रणवाद्यों एवं नादों द्वारा इसने जेरिको नगर पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और तीसरा आश्चर्यजनक कार्य था सूर्य चन्द्र की गति को रोक देना। जोशुआ की पुस्तक वीर रस आपूर्ण महाकाव्य के ही समान है जिसका कथानक एक वीर के साहस पूर्ण कार्यों और जाति का इतिहास है। इसमें प्राचीन परम्परा और धार्मिक भावनाओं का संमिश्रण है। इसी महाकाव्य में एक ऐसी लघुकथा है जो किसी नाटककार अथवा उपन्यासकार के लिए उत्कृष्ट सामग्री है। यह कथा-वस्तु रहस्य की कहानी है, जिसने अपना नगर जोशुआ को विश्वासघात

कर दे दिया था। उसके नागरिक जब तलवार की घाट उतारे जा रहे थे उस समय उसे प्राणदान किया गया था। जोशुआ की विजय एलेक्जेन्डर महान् के समान व्यापक न थी; किन्तु यहूदियों के इतिहास में उसका वही महत्व और उच्चस्थान है जो यूनानियों के राष्ट्रीय जीवन के विकास में एलेक्जेन्डर महान् का है।

इसके अनन्तर बुक आव जजेस् का क्रम आता है। इस पुस्तक के प्रारम्भ में ही वीर रमणी डेवोराह के दर्शन होते हैं। डेवोराह की गणना बाइबिल की मुख्य नायिकाओं में की जाती है। आधुनिक काल में इनकी तुलना फ्रान्स की राष्ट्रोद्धारक अमर वीरांगना 'जोन आव आर्क' से होती है। डेवोराह ने हतोत्साह वैरक में ऐसी जान फूक दी कि उसके नेतृत्व में जनता ने शत्रु को पराजित और पददलित कर दिया। विजय के पश्चात् वैरक और डेवोराह ने सम्मिलित प्रशंसा का संगीत गाया है। इस सम्बन्ध में पाश्चात्य समालोचकों का कथन है कि यह गीत प्राचीनतम हेब्रू कविताओं में एक है। इसी अमर कविता में कतिपय ऐसी पदावलियाँ हैं जिनसे आज भी विजय के इच्छुक प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

'जजेस्' पुस्तक में ही सैमसन की नाटकीय कथा है। कहा जाता है कि सैमसन हरक्युलस की वंश परम्परा का था। प्रतिशोध के सम्बन्ध में उसका अत्म बलिदान दुखान्त घटना की चरम सीमा है। इस कथा के आधार पर महाकवि मिल्टन ने 'सैमसन एगोनिस्टस्' नामक कविता पुस्तक का प्रणयन किया और फ्रेंच साहित्यकार सेन्ट सेइन्स ने एक नाटक की भी रचना की, जो आज भी आधुनिक नाटकों में श्रेष्ठ स्वीकार किया जाता है।

बाइबिल में सुन्दर कथानकों पर साहित्यिक दृष्टि से विचार करना आवश्यक है। राबर्ट लुई स्टीवेन्सन का कहना है कि घटनात्मक कहानी साहित्य की विशेष वस्तु है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि प्रायः प्रत्येक मनुष्य सभी अवसरों पर कहानी सुनने के लिए प्रस्तुत हो जायगा; किन्तु तर्क अथवा किसी व्याख्या के लिए ध्यान केन्द्रित करना उसके

लिए कठिन होगा। हेब्रू लेखकों ने अन्य जातियों के साहित्यकारों की भांति ज्ञान-विज्ञान की बहुत-सी बातें कथा के रूप में कह दी हैं।

घटनात्मक कथानक बाइबिल में प्रचुर परिमाण में मिलते हैं। ऐसे प्रसङ्गों को दो मुख्य भागों में विभक्त किया जा सकता है। पहला अंश वह है जिसमें क्रमानुसार घटनाओं का वर्णन है और दूसरा भाग नैतिक शिक्षा प्रदान करने वाले रूपक। यह बात केवल ओल्ड टेस्टामेन्ट के लिए ही नहीं अपितु न्यू टेस्टामेन्ट पर भी प्रयुक्त होती है।

‘बुक आफ जेजेस’ के बाद रूथ की पुस्तक क्रमानुसार आती है। इसमें छोटे-छोटे चार अध्याय हैं और समस्त कथा सौ से कम कविताओं में (वर्सों) वर्णित है। इस छोटी पुस्तिका का यहूदी जाति में बड़ा महत्व है। सम्भवतः इसका कारण यहूदी स्त्रियों के सामाजिक अधिकारों तथा उत्तराधिकार सम्बन्धी नियमों का इसमें होना है। इसके अतिरिक्त साधारण पाठक का इस पुस्तक के प्रति जो आकर्षण है, उसका प्रधान कारण इसमें करुण रस की धारा है। रूथ में दो महिलाओं के हृदय का रहस्योद्घाटन किया गया है जो इतना भावना-प्रधान है कि उसका विश्लेषण सम्भव नहीं। बज्र हृदय मनुष्य भी पुस्तक पढ़ने के बाद प्रसन्नता की लहरों से आन्दोलित हुए बिना नहीं रह सकता। दो स्त्रियों के जीवन-चरित्र की ऐसी धार्मिक कथा मानवीय अनुभूति की एक अलौकिक वस्तु है और ‘ओल्ड टेस्टामेन्ट’ साहित्य में उसका स्थान अत्यन्त उच्च है। इस पुस्तक में जन्मभूमि और गृह की स्मृति भावना का वर्णन इस कृति को समस्त विश्व की अपनी वस्तु बना देती है, जिसकी अनुभूति देश काल, जाति की सीमाओं का अतिक्रमण कर समस्त मानव को होती है।

बाइबिल में चार पुस्तकें ऐसी हैं जिनमें से दो को सैमुएल की और दो को राजाओं की पुस्तक कहते हैं। इनमें यहूदी साम्राज्य के सम्पन्न और गौरवशाली दिवसों की कहानी है। इसमें इसराइल की विजयों का विवरण है और उन स्थितियों का वर्णन है जब कि वह ईश्वर को विस्मृत कर अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है, जिसके परिणाम स्वरूप

उसे पराजय, दण्ड और बन्दी जीवन व्यतीत करना पड़ा था। वस्तुतः ये चारों पुस्तकें महाकाव्य के रूप में हैं और इनकी रचना अत्यन्त कलात्मक पद्धति से हुई है। इनके पठन के पश्चात् स्पष्टतया ज्ञात हो जाता है कि इनके प्रणयन में एक नहीं बल्कि अनेक उच्चकोटि के कवि संलग्न हुए होंगे। सैमुएल अपने शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करता है। वह वृद्ध हो जाता है और उसके पुत्र निर्बल तथा व्यसनी निकलते हैं। साउल परिस्थिति का सामना करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। किन्तु वह अपमानित किया जाता है। उसका पुत्र जोनाथन वीर योद्धा और शुद्ध आत्मा का पुरुष है किन्तु इसराइल का नेतृत्व ग्रहण करने की न तो उसमें शक्ति है और न अनुभव-वृद्धता।

इसी के उपरान्त डेविड का स्वरूप, जिसकी गणना ओल्ड टेस्टामेन्ट के मुख्य चरित्रों में की जाती है, हमारे सम्मुख आता है। यहाँ इतना समझ लेना अप्रासंगिक न होगा कि बाइबिल के प्रणेताओं ने डेविड को जेसस का पूर्वज क्यों बनाया। वंशावलियों के अनुसार स्थिति क्या है कहना कठिन है; किन्तु साहित्यिक एवं आध्यात्मिक रूप से उनका स्वरूप स्पष्ट है। बात यह है कि नये नायक और राजा के लिए उसका सम्बन्ध प्राचीन वीर शिरोमणि से अवश्य होना चाहिये।

डेविड एक राज-घराने के संस्थापक हैं। ईसा स्वर्ग के अभिनव राज्य अथवा प्राचीन राज्य के आविष्कर्ता हैं। डेविड स्वर्ग के आभूषणों और राजकीय-वस्त्रों को धारण करते थे, जब कि ईसा नंगे पैर चलते थे। डेविड ने अनेक रक्त प्रवाहित करने वाली लड़ाइयाँ लड़ीं, किन्तु ईसा पूर्णतया शान्तिवादी थे। नैतिक चरित्रों के विचार से भी डेविड पर आरोप लगाया जाता है किन्तु ईसा इसके अपवाद थे।

डेविड के चरित्र का उत्थान-पतन पूर्णतया सजीव है। यदि सजीवता का विचार किया जाय तो डेविड, जोसेफ और साउल की अपेक्षा कहीं अधिक मानवीय हृदय को प्रभावान्वित करने वाला सिद्ध होता है। महाकाव्यों के नायक की भांति उसमें भी दैविक शक्तियों का समावेश किया गया है। पर देवत्व के गुण रहते हुए भी उसमें

दुःख, क्रोध, प्रीति, दृढ़ता, वासनाओं आदि की ऐसी निर्बलताएँ हैं, जो उसे मनुष्य बनाती हैं। इलियड में ऐकीलीस के समान ही डेविड का चित्र अंकित किया गया है। संक्षेप में डेविड की कहानी कला की एक उत्कृष्ट कृति है।

डेविड के पुत्र महान सालोमन की कथा भी बाइबिल साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसराइल के सम्पन्न एवं गौरवशाली राज्य के विस्तार का इतिहास सालोमन का ही इतिहास है। राजा तथा उसके वैभवों का वर्णन लेखक ने उदात्त शैली में किया है। सालोमन की कथा में करुण रस का भी संमिश्रण है और इसका कारण यह बताया जाता है कि ये विवरण इसराइल के पतन के पश्चात् लिखे गये हैं। इसमें स्थान-स्थान पर यहूदियों के विगत वैभव पर प्रकाश डाला गया है। प्राचीन परम्परा के पुरुष सोलोमन के चरित्र में कतिपय विरोधी बातें भी मिलनी हैं। ये विश्व के विद्वान शिरोमणि माने जाते हैं, किन्तु वृद्धावस्था में सोलोमन महिलाओं द्वारा मूर्तिपूजा के प्रवर्तक बनते हैं। पहले सी बुद्धिमत्ता का इनमें अभाव रहता है और अन्तिम समय में अपना राज्य सुदृढ़ भित्ति पर नहीं छोड़ जाते। सोलोमन के उत्तराधिकारी भी अपने पिता तथा पितामह की अपेक्षा अयोग्य ही निकलते हैं।

राजतन्त्र के पतन के पश्चात् प्रोफेट एलिजा और उनके शिष्य इलीशा का क्रम आता है। आश्चर्यजनक कार्यों के लिए ये प्रसिद्ध हैं और इनकी कुछ कृतियाँ क्रमशः मोसेज और मसीहा के वीरपूर्ण तथा दानशील कार्यों से साभ्य रखती हैं। इतना होने पर भी इनका चरित्र सर्वजन प्रिय नहीं। जनता को सच्चे धर्म में आवद्ध रखने के असफल प्रयत्न में ये निर्दय और प्रतिशोध की भावना से युक्त रहते हैं। इलीशा की हँसी उड़ाने वाले चालीस शिशुओं को मृत्यु का कठोर दण्ड निर्दयता की पराकाष्ठा है।

हेब्रू इतिहासकारों की यह विशेषता है कि वे अपने नायकों और भिन्न पुरुषों के दुष्कर्मों पर आवरण डालने का तनिक भी प्रयत्न नहीं करते

और न उनका समर्थन ही करते हैं। हेजिकी और जोशिया आदि श्रेष्ठ राजाओं के बाद स्थिति बिगड़ती ही गई। बेबीलोन के सम्राट नेबु-चैडनेजार के द्वारा यरूशलम के पतन के अनन्तर यहूदियों के निर्वासन और कारावास के साथ इसराइल का वैभव विगत हो रहा था।

क्रानिकल्स की दो पुस्तकों में वही विवरण समानान्तर रूप से मिलते हैं जिनका वर्णन पिछली पुस्तकों में किया जा चुका है। इसके बाद की दो पुस्तकों, इजरा और नेहिमाह, में बेबिलोन से यहूदियों के पुनरागमन और यरूशलम के पुनर्निर्माण की कथा है। उक्त पुस्तकों के पठन के समय इसद्रास की दो पुस्तकों का भी अध्ययन आवश्यक है और वस्तुतः ये एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। पतन और अन्धकार के युग के अनन्तर इन पुस्तकों से नवीन अध्याय का श्रीगणेश होता है। नेहिमाह तथा इजरा महान् निर्माताओं के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। नेहिमाह ने यरूशलम का नवीन निर्माण किया और इजरा ने विनष्ट कानूनों और नियमों को पुनः व्यवस्थित किया। एक ने यरूशलम को शारीरिक चेतना प्रदान की और दूसरे ने उसमें आध्यात्मिक बल का सन्निवेश किया। इजरा और उसके साथ के पांच लेखकों ने चालीस दिनों में दो सौ चार पुस्तकों की रचना किस प्रकार कर डाली यह कहानी अत्यन्त मनोरंजक है।

इस्तर की पुस्तक साहित्य की दृष्टि से बड़े महत्व की है। यह यहूदियों और इसाइयों के धर्म-ग्रन्थों में है। इसमें एक ईरानी बाद-शाह की यहूदी रानी के सौन्दर्य और बुद्धिकौशल के स्वरूप का वर्णन है। रानी अपने पिता के सहयोग से यहूदियों को सर्वनाश से बचा लेती है। इसकी स्मृति में यहूदी आज भी प्यूरिम का उत्सव मनाते हैं। वास्तव में यह ऐतिहासिक रोमांस है जिसके पठन मात्र से रोमांच हो आता है। रक्तपात पूर्ण षड़यन्त्रों और कुचक्रों का विवरण, जिसके केन्द्र में अनुपम सौन्दर्य सम्पन्ना रानी है, अत्यन्त रोमांचक है। यह कहानी नपे तुले शब्दों में ध्वनिपूर्ण भाषा शैली में नियोजित की गयी है।

यूनानी और लैटिन बाइबिल में इस्तर के बाद नायिका जुडिथ का क्रम आता है। अंग्रेजी प्रोटेस्टेन्ट बाइबिल में जुडिथ को एपोक्राइफा के अन्तर्गत रखा गया है। जुडिथ की कहानी उत्तेजना और कौतूहल से पूर्ण है। वह होलोफर्नस को किस प्रकार आकर्षित करती और नशे की स्थिति में उसका किस प्रकार शिरच्छेद करती है, यह कथा बड़ी रोमांचक है। उपन्यास भले ही साहित्य का आधुनिक नवीन स्वरूप माना जाय; किन्तु कथानक और चरित्र उस समय भी विद्यमान थे।

बाइबिल साहित्य में सर्वाधिक कौतूहल पूर्ण और नाटकीय-कथा वस्तु 'बुक आव जाव' की है। इसमें विभिन्न परिस्थितियों में आवृत्त चरित्रों का संघर्ष दिखाया गया है। दृढ़ता एवं विश्वास से अन्त में आपत्ति और असत् पक्ष की पराजय होती है, मनुष्य, शैतान और ईश्वर के मुख्य चरित्रों का यह एक महान् नाटक है।

'बुक आव जाव' में वर्णित घटना की ऐतिहासिकता अथवा आध्यात्मिक व्याख्याएँ भले ही भिन्न-भिन्न हों किन्तु इसमें काव्यत्व एवं मानवीयतत्व ऐसी वस्तु है जिसकी उपेक्षा साहित्यिक दृष्टि से कदापि नहीं की जा सकती, यह नाटक सुखान्त है, कठिन परीक्षाओं के पश्चात् 'जाव' को सन्तति और सम्पत्ति दोनों की प्राप्ति होती है।

बाइबिल की कविता

हेब्रू भाषाविदों का कहना है कि मूलरूप में बाइबिल का जो सौन्दर्य है उसे किसी अन्य भाषा में अनुदित कर नहीं उपस्थित किया जा सकता, वास्तव में इस कथन की सत्यता अस्वीकार नहीं की जा सकती, फिर भी इतना कहा जा सकता है कि हेब्रू भाषा के बाद बाइबिल साहित्य का निकट दर्शन किया जा सकता है तो उसके अंग्रेजी रूपान्तर द्वारा ही।

सर्व प्रथम ओल्ड टेस्टामेन्ट हेब्रू तथा सेमेटिक भाषा अरैमिक में था। ईसा के पूर्व इसका अनुवाद यूनानी भाषा में हुआ, परम्परागत

के अनुसार इसे सेप्चुजिन्ट इसलिए कहते हैं कि इसका अनुवाद सत्तर विद्वानों ने किया था। लैटिन भाषा में भी इसका अनुवाद ईसा के बाद चौथी शताब्दी में जेरोम ने किया है, और यह 'वलगेट' के नाम से कतिपय संशोधनों के अनन्तर आज भी रोमन कैथलिक चर्च में व्यवहृत है।

१७ वीं शताब्दी के पूर्व अंग्रेजी भाषा में इसके अनेक अनुवाद हुए जिनमें श्री विलियम टिन्डेल का अनुवाद महत्व पूर्ण और उल्लेखनीय है। श्री टिन्डेल हेब्रू, ग्रीक और लैटिन भाषा-विज्ञ होने के अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रकान्ड पण्डित थे। इनके व्यक्तित्व की छाप अंग्रेजी बाइबिल में आज भी स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है, इसीलिए श्री टिन्डेल अंग्रेजी गद्य के पिता कहे जाते हैं। बाइबिल ने आधुनिक अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य को अत्यधिक अंशों में प्रभावित किया है।

१७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में किंग जेम्स की आज्ञा से बाइबिल का प्रामाणिक अनुवाद हुआ। इस कार्य में विश्वविद्यालयों के प्रसिद्ध विद्वानों ने अपूर्व सहयोगपूर्वक काम किया। इन विद्वानों ने सभी भाषाओं के इस समय तक के अनुवादों के गुण दोष का परीक्षण कर लिया था।

हेब्रू, ग्रीक और लैटिन भाषाओं के शब्दभंडार तथा उनकी कोमल कान्त पदावली से ये भली-भांति परिचित थे। उस समय अंग्रेजी भाषा में कविता जैसी लालित्य पूर्ण रचनाओं की बहुत आवश्यकता प्रतीत की जा रही थी। वह युग ही कविता का था। एलिजाबेथ और जेम्स के राज्यकाल का प्रत्येक महान गद्य लेखक बाइबिल जैसी अंग्रेजी शैली में लिखता था। यह कहा जा सकता है कि बाइबिल के अनुवादकों ने ही एलिजाबेथ काल की अंग्रेजी लिखी।

बाइबिल के हेब्रू, ग्रीक और लैटिन भाषाओं के अनुवाद से साम्यमूलक अर्थगाम्भीर्य और पदलालित्य के दर्शन इस अधिकृत अनुवाद में होते हैं। प्राचीन तथा अर्वाचीन बाइबिल के योग्य समालोचकों

ने बाइबिल के उक्त अधिकृत अनुवाद को साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कलाकृति स्वीकार किया है।

ऑल्ड टेस्टामेन्ट का हृदय प्रदेश—जाव, सल्य प्रोवर्वस, इकलिसि-एण्ट्स, दिसांग आव दि सांग्स, नामक रसमय कविताओं से सक्त हैं, इनमें आलंकारिकता भरी पड़ी है।

‘सांग आव सांग्स’ का अन्त मनोहारी कोमलकान्त पदावली में होता है। भविष्यवक्ताओं में ईसाह का क्रम सबसे पहले आता है। इन भविष्यवाणियों में वह स्थल विशेष द्रष्टव्य होता है जहाँ मनुष्य के पाप कर्मों की निन्दा करते हुए ईश्वरीय दंड की धमकी देते हैं और उसी समय ईश्वर में श्रद्धा न्यस्त करने का आदेश करते हैं। ये विभिन्न स्थल—चाहे वे करुणापूर्ण तथा निराशाजनक हों अथवा उनमें साहस एवं शौर्य की भावनाएँ अभिव्यंजित हों—निश्चितरूप से कवित्वपूर्ण हैं और इनसे इतना स्पष्ट हो जाता है कि ये अवश्यमेव महान् कवियों की कृतियाँ हैं।

भविष्यद्रष्टाओं में ईसाह का स्थान विशिष्ट है। वह न्यायाधीश भी है और सबसे सहानुभूति रखनेवाला भी। दुष्टों का वह घोर निन्दक है। उसका विश्वास है कि यरूशलम के उद्धार की शक्ति जेहोवा में है। ईसाह के चरित्र में महान् कट्टरता और आशाओं के मिश्रण के फलस्वरूप भावनाओं का विचित्र विरोधाभास हो गया है। इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का कथन है कि ईसाह में पारस्परिक विरोधी भावनाएँ अस्वाभाविक हैं। जो हो कला तथा मानवीय दृष्टि से किमी कवि का एक व्यक्ति विशेष में इन विभिन्न मुद्राओं का सन्निवेश करना कदापि अनुचित नहीं।

चार महान् भविष्यद्रष्टाओं में द्वितीय स्थान जेरिमीह का है। यद्यपि ईसाह के व्यक्तित्व उदात्त एवं उच्च नहीं तथापि अपने ढंग के ये विशेष व्यक्ति हैं। यहूदी इतिहास के अन्धकाराच्छन्न दिवसों से इनका सम्बन्ध रहता है और यरूशलम के पतन के पश्चात् जेरिमीह को कारावास तथा निर्वासन का दंड भोगना पड़ता है। ये निराशावादी कहे जाते हैं,

किन्तु जितना अधिक निराशावाद जेरिमीह पर आरोपित किया जाता है वस्तुतः वह उतनी मात्रा में 'बुक आव जेरिमीह' में हमें मिलता नहीं।

जेरिमीह केवल विपत्तियों के पर्वत को हिलानेवाला ही नहीं अपितु राजद्रोही भी है, जिसकी संज्ञा धर्म विरोधी के रूप में होती है। इसी विद्रोह के परिणाम स्वरूप साहित्य में एक नवीन आश्चर्यजनक भावना का उदय होता है और जो 'न्यू टेस्टामेन्ट' की जनक होती है। इस प्रकार जेरिमीह ऐसी भावना प्रादुर्भाव कर्ता है जो आज भी लाखों मनुष्यों के धर्म का मौलिक तत्त्व है। यह साहसी और विद्रोही स्वप्न देखने वाला व्यक्ति अन्त में अभूतपूर्व प्रमाणित होता है।

इजेकील भी स्वप्नप्रिय है और इसमें सुन्दर तथा साहित्यिक चित्रों के रूपकों की भरमार मिलती है। धार्मिक भावनाओं के वहन करने तथा हृदय पर छाप अंकित करने के लिए कथायें अत्यन्त उपयुक्त होती हैं। कथा के रूप में धार्मिक सिद्धान्तों का सन्निवेश करना इजेकील की अनुपम कला है और वह रहस्योद्घाटन साहित्य के उद्घाटकों का जनक है। इस प्रकार के साहित्य का उत्कृष्ट उदाहरण 'न्यू टेस्टामेन्ट' की अन्तिम पुस्तक रीवीलीशन है। वास्तव में रहस्योद्घाटक रूपक का सफल निर्वाह अत्यधिक प्रभावकारी होता है। इजेकील जब मिस्र के राजा के पतन का प्रतिनिधित्व उस ध्वस्त वृक्ष से करता है, जिसकी शाखायें क्षत-विक्षत हो चुकी हैं तो यह अत्यन्त कारुणिक और प्रभाव अंकित करने वाला होता है। इजेकील अपनी समस्त विचारधारायें रहस्य के आवरण में ही रखता हो यह बात नहीं। अलंकारिकता से मुक्त होकर जेरिमीह की भांति वह भी स्पष्ट शब्दों में नैतिक उपदेश के रूप में हमारे सम्मुख आता है। किन्तु उसका अधिकांश स्वरूप गूढ़ है, इसमें सन्देह नहीं।

महान् भविष्य द्रष्टाओं में चतुर्थ दानियाल की ख्याति बहुत अधिक है, वह शौर्य और साहस की प्रतिकृति है, दानियाल की छोटी सी पुस्तिका अनेक घटनाओं से आवृत्त है। इसका प्रतिपाद्य यहूदियों को सन्तोष और साथ ही उत्साह की भावना से युक्त करता है। इसमें सन्देह नहीं कि यह लक्ष्य अत्यधिक सरल साधनों से सम्पन्न किया गया है। पुस्तक

में वर्णित बेचिलोन में निवास करने वाले पुरुष के साथ यहूदियों के कारावास काल की घटनायें वास्तविक हैं अथवा वे लेखक की कल्पना प्रसूत हैं इसका विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं।

दानियाल सिद्ध पुरुष है। वह ऐसे स्वप्नों की व्याख्या करने में समर्थ है जो हिदेन जादूगरों की बुद्धि के परे है। इस ईश्वरीय देन के कारण एक विदेशी राजा के दरबार में वह प्रभुत्व का पद प्राप्त करता है। सिंहों की गुफा में डाल दिये जाने पर भी उसका कुछ न बिगड़ा। उसके तीन मित्रों को, जिन्हें अग्नि में डाल दिया गया था, किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट न पहुँचा। यहूदी बुद्धिकौशल और ईश्वरीय कृपा से शत्रु से रक्षा की बात नाटकीय ढंग से प्रदर्शित की गयी है। इजेकील के स्वप्न भ्रमात्मक एवं अत्यन्त गूढ़ हैं किन्तु दानियाल के स्वप्नों में यह बात नहीं। ये बालकों की कहानी की भांति सरल और सुस्पष्ट हैं। दानियाल अपने स्वप्न की व्याख्या तो करता ही है, राजाओं के स्वप्नों के रहस्य को भी सुगमता पूर्वक समझाता है। राजा और उसके मुसाहिवों के अतिरिक्त सभी जनसमुदाय दीवार पर लिखि हस्तलिपि हृदयंगम कर लेते हैं। यह कहना उचित होगा कि दानियाल दूसरा जोसेफ है। इन दोनों ने ही अपने बुद्धि-कौशल तथा ईश्वरीय अनुकम्पा द्वारा विदेशी सरकारों में उच्च पद प्राप्त कर लिया था।

ओल्ड टेस्टामेन्ट की लघु भविष्य द्रष्टाओं की द्वादश संक्षिप्त पुस्तकों में आकर्षण की न्यूनता का कारण यह है कि उनमें कथित अधिकांश तथ्यों का विवेचन पूर्व वर्णित पुस्तकों में विस्तारपूर्वक हो जाता है। इन लघु भविष्य द्रष्टाओं का महत्व इसलिए है कि इनमें से ही कुछ के कारण महान भविष्यद्रष्टाओं का अस्तित्व हमारे सम्मुख आता है। इस बात का पहले ही उल्लेख कर दिया गया है कि ओल्ड टेस्टामेन्ट की पुस्तकों का अनुक्रम व्यवस्थित रूप से नहीं प्राप्त होता।

एमास और होसी प्राचीनतम भविष्यवक्ताओं में हैं और बाद के लेखकों के प्रकाशस्तम्भ स्वरूप माने जाते हैं। एमास पहले भविष्य-द्रष्टा हैं, जिन्होंने भविष्य के सम्बन्ध में लिखित और मौखिक शिक्षा का

महत्व स्वीकार किया। होसी की प्राप्य वाणी ईसाह अथवा जेरिमीह जैसी नहीं तथापि इसमें आशा, निराशा, विश्वास, अविश्वास का ऐसा अन्तर्द्वन्द्व दृष्टिगत होता है जो ओल्ड टेस्टामेन्ट में यथेष्ट महत्वपूर्ण माना जाता है। गर्भवती जोन की चार अध्यायों की पुस्तक का भी यहाँ उल्लेख करना प्रासंगिक और आवश्यक है।

इस आश्चर्यजनक कथा में बताया गया है कि किस प्रकार जोन समुद्र के गर्भ में डाल दी जाने पर एक बड़ी मछली द्वारा उदरस्थ कर पुनः स्थल पर उगल दी गई थी। जोन उदरस्थ इसराइल का प्रतीक है जो इश्वरीय अनुकम्पा से पुनः प्रादुर्भूत होती है। इससे जोन की कथा का अत्यधिक महत्व प्रकट होता है। वस्तुतः यह उन भावनाओं में से एक है जिनसे यह प्रकट होता है कि इसराइल ही नहीं प्रत्युत समस्त मानव को पुनर्जन्म लेना है। इस भाव का पूर्ण विकास ईसा की कहानी न्यू टेस्टामेन्ट में दृष्टिगोचर होती है।

न्यू टेस्टामेन्ट

न्यूटेस्टामेन्ट ईसाई धर्मावलम्बियों के महानतम व्यक्तित्व की कहानी है। ईसाई जाति में शायद कोई अन्य पुस्तक ऐसी नहीं जिसका न्यू टेस्टामेन्ट के समान व्यापक रूप से अध्ययन किया गया हो और जिस पर इतना अधिक विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श हुआ हो। ईसाई धर्म से इतर लोगों को भी इसकी रूपरेखा विदित है। समस्त यूरोपीय देशों के जीवन और साहित्य पर इस महान् ग्रन्थ का प्रभाव अत्यधिक मात्रा में पड़ा है। न्यू टेस्टामेन्ट ईसा की आत्मकथा है जिसमें वे रूपकों में ही बोलते हैं। इस प्रकार लोगों को शिक्षा प्रदान करना उन्हें अत्यन्त प्रिय है।

मैथ्यू, मार्क, ल्यूक तथा जान के सन्देशों तथा एपास्टलस् के पूरक विवरण में ईसा की कहानी की रूपरेखा वर्णित है। इन सभी सन्देशों पर यदि समष्टि रूप से विचार करें तो एक दूसरे में पुनरावृत्ति दिखलाई

देगी। एपास्टलस तथा उनके उत्तराधिकारी वस्तुतः लेखक न थे वे अपने गुरुजनों की ही भांति देशाटन कर धर्म प्रचार और शिक्षा प्रदान कर लोगों को दीक्षा दिया करते थे।

ईसा की धर्म शिक्षा के प्रकाण्ड परिणत तथा महान व्याख्याता पाल के सन्देश ईश प्रार्थना के समान ही प्रतीत होते हैं जो विशेष परिस्थिति के परिणामस्वरूप इसलिए लिखे गये क्योंकि पाल एक ही समय सभी श्रोताओं के सम्मुख जाकर धर्म प्रचार न कर सकते थे।

क्रास पर ईसा के प्राण लिए जाने पर उनके सम्बन्ध में बृहत् साहित्य का निर्माण हुआ, किन्तु वह बाइबिल के अन्तर्गत नहीं समझा जाता। न्यूटेस्टामेन्ट तथा अन्य साधनों की सहायता से बहुत से लेखकों ने ऐतिहासिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि पर महात्मा ईसा के क्रमबद्ध जीवन चरित्र लिखे हैं और उनमें विभिन्न सन्देशों की व्याख्या तथा उनके पारस्परिक विरोध का समन्वय करने की चेष्टा की गई है। सुप्रसिद्ध फ्रेन्च दार्शनिक श्री अर्नेस्टरेना की पुस्तक लाइफ आव जेसस् ईसा का जीवन चरित्र साहित्य के विचार से उच्चकोटि की सर्वमान्य पुस्तक है।

विश्व साहित्य की व्यापक एवं विशाल राशि के दिग्दर्शन में यह सम्भव नहीं की बाइबिल के सम्बन्ध में बहुत अधिक विस्तारपूर्वक विवेचन किया जा सके। यह बात तो सर्व स्वीकृत है ही की बाइबिल में साहित्य की प्रभूत सामग्री यत्रतत्र सर्वत्र बिखरी पड़ी है जिसका स्वरूप बोध, गहन और धैर्यपूर्वक अनुशीलन द्वारा ही सम्भव है।

न्यूटेस्टामेन्ट की कथा सूत्ररूप में वर्णित है और अर्थों से गुम्फित हैं। इसमें विविध ज्ञान विज्ञान और साहित्य की इतनी अधिक बातें भरी पड़ी हैं जिनकी जानकारी न होने से यूरोपीय साहित्य के विकास का इतिहास सुस्पष्ट होने के बदले रहस्य से ही आवृत रहेगा। बाइबिल साहित्य का विस्तार कितने व्यापक परिमाण पर है उसकी सहज कल्पना हम जॉन के उस सन्देश से कर सकते हैं जिसमें उन्होंने कहा है कि ईसा द्वारा और भी वस्तुयें निर्मित हुईं। वे इतनी अधिक हैं कि यदि उनमें से प्रत्येक को लिपिवद्ध किया जाय तो मैं समझता हूँ कि संसार में उन्हें

रखने का स्थान ही न रहे। इससे स्पष्ट है कि उक्त साहित्य में अनेक विषयों का समावेश नहीं किया जा सका और अत्यधिक अंश में उनके सम्बन्ध में जनसाधारण को कुछ ज्ञान नहीं। जो हो जितनी सामग्री प्राप्य है और लिखित है वही पर्याप्त है।

न्यूटेस्टामेन्ट में ईसा की केवल जीवनी ही हो, यह बात नहीं। इसमें उनके शिष्यों तथा सन्देशवाहकों के रूप में उनके जीवन का क्रम बनाये रखा गया है। ईसा के बाद दूसरा स्थान सेन्टपाल का ही है जिसके बुद्धि कौशल के बिना गैलीलियन पश्चिमी संसार पर कदापि विजय न प्राप्त कर सकते। चार (गासफेलों) सन्देशवाहकों और रिवीलीशन के मध्य पाल ही प्रधान चरित्र और मुख्य विचारक हैं। पाल की रचनाओं में केवल उनका धार्मिक साहित्य और ईसा के सन्देश की व्याख्या ही नहीं मिलती प्रत्युत् उनका चरित्र उसमें अंकित है। उनका चरित्र अत्यन्त आकर्षक साहस वर्द्धक, प्रभावकारी और समन्वयवादी है। उनके धार्मिक और दार्शनिक व्याख्यानों से मतभेद हो सकता है किन्तु उनके भावाभिव्यंजन कौशल उनकी वीरता तथा शक्ति के अलौकिक गुणों की प्रशंसा किये बिना कोई नहीं रह सकता।

पाल के चरित्र के साथ उनके अनुयायियों ने जो चमत्कार का योग कर दिया है वह बहुत सम्भव है उनकी प्रशंसा और प्रशस्ति के रूप में हो। पाल ने स्वयं अपने व्यक्तित्व में अतिमानवीय शक्ति होने की चर्चा नहीं की है। उन्होंने विश्वास को ही अपनी सबसे बड़ी शक्ति माना है। पाल के जीवन की कहानी साधारण मानवीय स्तर की विश्वसनीय, उच्च और सुन्दर है।

एग्रिया के सम्मुख पाल की सफाई उसके पत्रों में प्राप्य स्पष्टता और साहसपूर्णता के अनुकूल ही है। वास्तव में पाल महान् व्यक्तियों में हैं। कठिन परिस्थितियों में उनके अधरों पर मुसकान और कभी कभी हास्य की रेखाएँ दिखलायी पड़ती हैं। पाल में तर्क की ओर विवेचन की ऐसी अद्भुत शक्ति थी कि वह सभी के मत को अपने मनोकूल परिवर्तित कर लेते थे। यह केवल प्रशंसक कल्पना नहीं अपितु ऐतिहासिक सत्य

है। न्यूटेस्टामेन्ट का अन्त 'सेन्ट जान दि डिवाइन' की रहस्यवादी कविता एपोकैलिप्सी से होता है। यह गूढ़ कविता इतने रूपकों और अलंकारों से आवृत है कि इसका समझना सरल नहीं। इसकी व्याख्या तथा स्पष्टीकरण के लिए बहुत अधिक कवित्वमय और विद्वतापूर्ण साहित्य लिखा गया है। इस सम्बन्ध में उल्लेख्य कृति अद्वारहवीं शताब्दी के स्वेडिश दार्शनिक और धर्माचार्य इमैन्युएल स्विडेनबार्ग की है। एपोकैलिप्सी के विवरण अधिकांशतः बोधगम्य नहीं। जो हो इस रहस्यवादी कविता की मुख्य भावभारा वह प्रतिज्ञा है, जिसमें इस पापपूर्ण संसार के पश्चात् एक पवित्र नगरी की बात कही गयी है। अग्निकुण्ड तथा ईश्वरीय अनुकम्पा से देदीप्यमान स्वर्णनगरी का पारस्परिक विरोधामास कविता तथा कला की दृष्टि से उच्च कोटि का है।

यूनानी साहित्य

कवि हिंसोड

हिंसोड यूनान का प्रथम कवि था। उसकी लिखी 'थियोगानी' यूनानी साहित्य की सर्व प्रथम रचना है। इस पुस्तक में सब से प्राचीन सामग्री प्राप्त हुई है। थियोगानी में देवताओं की उत्पत्ति और उनके सम्बन्ध में विवरण दिया गया है। इसमें बहुत से ऐसे देवताओं का नाम मिलता है जो संस्कृत साहित्य में भी पाये जाते हैं। इस पुस्तक की प्राचीनता के सम्बन्ध में निर्णय करना कठीन है। ई० पू० ६५० में सेमोनिडस ने इस पुस्तक का उद्धरण दिया था। यह एक विचित्र रहस्य है कि होमर के इलियड में थियोगानी का परिचय मिलता है और थियोगानी में इलियड और ओडसी का नाम सुनाई पड़ता है। जो कुछ ही, यदि उसे होमर के पूर्व का न मानें तो उसका समकालीन मानना पड़ेगा। विद्वानों का मत है कि वह होमर के पहले हुआ था।

हिसोड की लिखी हुई पुस्तकों में से तीन पुस्तकें सुरक्षित हैं। पहली 'थिअोगानी' दूसरी 'वर्क्स एण्ड डेज़' और तीसरी 'शील्ड आफ हेराक्लस'।

हिसोड का जन्म इओलिस के किमे प्रदेश में हुआ था। उसके पिता ने बाद में वीओटिया में आवास ग्रहण किया और आस्क्रा नाम के उर्वर गांव में रहने लगा। यह गांव हेलिकन की पहाड़ी के निचले भाग में था। उसका वर्णन करते हुए स्वयं हिसोड ने लिखा है—वह शरद में खराब रहता है और ग्रीष्म में अदुखदायी। इसी स्थान पर हिसोड भेड़ें चराया करता था और एक दिन काव्य की देवी ने निम्नलिखित शब्दों में उसका अभिवादन किया—जंगली खेतों के असभ्य लोग ! केवल उदर भरण की चिन्ता करना लजाजनक है। मैं सत्य सी दिखाई पड़ने वाली बहुत सी झूठी बातों को कहना जानती हूँ। पर इच्छा होने पर मैं वास्तविक सत्यों की कहानी भी कह सकती हूँ। इन्हीं शब्दों के प्रभाव ने हिसोड को कवि बना दिया।

उसके सम्बन्ध में लिखा है कि सिटीमेनी नाम की एक स्त्री के भाई ने उसकी हत्या की और उसे समुद्र में फेंक दिया था। डोलफिन्स लोग उसका शव ले आये और उसकी समाधि बनाई। कहा जाता है कि सिटीमेनी से ही विख्यात लिरिक कवि स्टेसीकरस का जन्म हुआ था। यह केवल कल्पना नहीं है, किन्तु प्राचीन सभी विद्वानों ने इसी आधार पर कार्य किया है।

'वर्क्स एण्ड डेज़' में कृषि के सम्बन्ध में कविताएँ हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि एक थका हुआ मनुष्य, दिन का कार्य समाप्त कर अपना अनुभव प्रकट करता है। इस पुस्तक में अनुभव के रूप में बहुत सी शिक्षा, चेतावनी और कहावतों का उपयोग किया गया है। ऋतुओं के वर्णन में यह रोचक है। जाड़े के एक महीने का वर्णन वह कितनी सुन्दरता से करता है—उत्तर की वायु ध्रुव से चल पड़ी है, पृथ्वी और वृक्षादि अपने को समेट लेते हैं। वह जंगलों के बड़े-बड़े बलूत और देवदार

के वृत्तों को धाराशायी कर देतो हैं। सारा वन कराहता है, वन्य पशु कांप रहे हैं और अपनी जांघों के बीच अपनी पूंछ छिपाये हुए हैं। इनके चमड़े, बालों से मोटे दिखाई पड़ते हैं, पर सर्दी उनको भी भेद रही है, वह बैलों और बकरों के घने बालों को पार कर रही है, लेकिन वह उस सुशीला बाला के पास नहीं पहुँच पा रही है जो अपनी माता के साथ कुटीर में बैठी है।

हिसोड उद्योग की प्रशंसा करना चाहता है। वह मनुष्यकी क्रियाओं, विशेष कर न्यायाधीशों की क्रियाओं का विरोध करता है। जज एक आलसी कुत्ता ही हो सकता है, जो संसार के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता और केवल कानून से ही प्रेम रखता है।

वास्तव में हिसोड क्या था? यह ज्ञात नहीं है। केवल उसकी परम्परा के सम्बन्ध में जो अनुमान है वही हम जानते हैं।

महाकवि होमर

‘महाकवि होमर ने लिखा है कि पृथ्वी के सभी जल स्रोत, नदी, नालों की उत्पत्ति समुद्र से हुई है।’

उसी भांति होमर रूपी साहित्य-समुद्र से ही यूरोप के साहित्य की सृष्टि हुई है।

होमर अन्धा कवि था, किन्तु शताब्दियों की पलकों में जो कुछ छिपा था, होमर ने उन सब पर प्रकाश डाला। मानव-जीवन की गूढ़ भावनाओं और भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियों का होमर ने सब से पहले वर्णन किया है।

होमर जिस युग में उत्पन्न हुआ था उस समय साहित्य की लिखित परम्परा नहीं चल रही थी। होमर ने अपने दोनों महाकाव्य ‘इलियड’ और ‘ओडसी’ लिखित रूप में प्रस्तुत नहीं किये थे। वह लायर (वाद्ययन्त्र) पर अपनी कविताएँ गा कर सुनाता था। जैसे हमारे

भारतीय पुराणों में प्राचीन वंशावलियों का अग्रणीत इतिहास भरा पड़ा है उसी भांति होमर की दोनों रचनाओं में यूनानी राजा और वीरों की नामावली और कथाएँ एक सूत्र में गूँथी हुई है। आरम्भ से ही कवियों के आश्रयदाता सामन्त और कुलीन सम्पन्न लोग ही रहे हैं, अतएव प्राचीन वीरों के वंश से अपना निकट सम्बन्ध स्थापित करने वाली गौरव-पूर्ण गाथा उन्हें अवश्य ही रुचिकर प्रतीत होती थी। उनकी प्रसन्नता और कृपा पर ही कवि की जीविका निर्भर करती थी।

होमर की दोनों रचनाओं में इतनी लम्बी नामावली है कि सब को स्मरण रखना कठिन ही नहीं, असम्भव है, नये-नये पात्र सहसा प्रकट होते हैं और अपना वक्तव्य देकर विलीन हो जाते हैं, किन्तु उसके प्रमुख पात्र सदैव सजीव से सम्मुख खड़े दिखाई पड़ते हैं।

इतने बड़े महाकाव्यों के कथा-भाग पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तब सचमुच बड़ा आश्चर्य होता है। इनकी कथा वस्तु बहुत ही साधारण है, किन्तु कवि की शैली और उसका प्रकाण्ड ज्ञान ही उत्सुकता की तरंगों के साथ पाठकों को आगे बढ़ाता है।

इलियड

यूनान के प्राचीन नगर ट्रॉय के सम्मुख समुद्र तट पर जहाजों की कतार खड़ी है, मैदान में भोपड़ियों में सैनिकों का दल भरा पड़ा है, नगर की लम्बी दीवार और उन भोपड़ियों के बीच के मैदान में युद्ध छिड़ा हुआ है।

ट्रॉय का राजा प्रायम है। उसका पुत्र पेरिस सुन्दरी हेलन को भगाकर ट्रॉय ले आता है। हेलन स्पार्टा के राजा मेनिलाज की पत्नी है। पेरिस और हेलन में प्रेम सम्बन्ध है। पेरिस किसी प्रकार भी हेलन से विलग नहीं होना चाहता। यही युद्ध का एक मात्र कारण है।

मेसिनी का सम्राट अगामेमनन, आक्रमण करने वाली सेना का प्रधान सेनापति है। अपने छोटे भाई मेनिलाज की सहायता के लिए

उसने बड़ी सेना का संगठन किया था। उसके सहयोग के लिए यूनान के अनेक कुलीन, सामन्त और राजा सम्मिलित हुए। इसमें मरमाइडन जाति का राजकुमार एकेलीज, इस युद्ध में प्रमुख भाग लेता है।

६ वर्ष तक एकियन सेना ट्रॉय का घेरा डाले रहती है। एक दिन प्रधान सेनापति अगामेमनन और एकेलीज में एक सुन्दरी के लिए विवाद होता है। एकेलीज रणक्षेत्र से अलग होकर अपने मित्र पेट्रोक्लस के साथ चैन से संगीत में लीन होकर दिन व्यतीत करता है।

दोनों ओर से घमासान युद्ध होता है। दिन भर युद्ध चलता है और सूर्यास्त के पश्चात् सैनिक अपनी-अपनी 'बैरक' में चले जाते हैं। उस युग में तोप और बन्दूक का आविष्कार नहीं हुआ था। तलवार, भाले और धनुष का ही प्रयोग होता था। कभी विशेष सफलता के लिए पत्थर के बड़े टुकड़ों का प्रहार होता था, किन्तु बलवान और वीर योद्धा ही इसमें सफल हो सकते थे।

सैनिक पैदल लड़ते और अधिकारी और विशेष व्यक्ति घोड़े के रथों पर चढ़ कर युद्ध भूमि में अपना कौशल दिखलाते। उस बर्बर युद्ध में भी रणक्षेत्र के जो नियम थे, वे आज सभ्यता के इस चरम विकास के युग में भी नहीं दिखाई पड़ते जब कि युद्ध का तात्पर्य ही केवल यह समझा जाता है कि घर बैठे ही मानव जाति का विध्वंस किया जाय।

एकियन और ट्रॉयजन में युद्ध होता है, किन्तु इस युद्ध में देवता-गण भी भाग लेते हैं। होमर ने देवताओं की मनोवृत्तियों का चित्रण भी मानव रुचि की भाँति ही किया है, उनमें भी प्रतिहिंसा, द्वेष और पक्षपात की भावना का स्पष्ट रूप से दर्शन मिलता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि होमर के पूर्व ट्रॉय नगर के विध्वंस की अनेकों कथाएँ प्रचलित थीं जो यूनान की भिन्न-भिन्न जातियों की लोककथाओं और लोक गीतों में जनता का मनोरंजन करती थीं। ऐतिहासिक अन्वेषणों ने भी यह प्रमाणित किया है कि ट्रॉय के सम्बन्ध में होमर की बहुत सी बातें केवल काल्पनिक नहीं थीं। होमर ने अपने

पूर्व के कवियों के ज्ञान के सहयोग से अपनी विलक्षण बुद्धि का परिचय दिया है। भले ही उसके सभी पात्र ऐतिहासिक महत्त्व न रखते हों, किन्तु होमर ने अपने समकालीन युग का रहन-सहन और मानव पहेलियों का इतना सजीव चित्रण किया है कि उनकी वास्तविकता में सन्देह नहीं होता।

एक स्त्री के कारण इतना बड़ा युद्ध हो और अनेकों राष्ट्रों का सर्वनाश हो, यह एक असम्भव बात मालूम पड़ती है, लेकिन स्वयं होमर भी इस बात का अनुभव करता था और इलियड के तीसरे परिच्छेद में युद्ध देखते हुए दो वृद्ध ट्रॉयजन हेलन को देख कर आपस में बातें करते हैं। वे आश्चर्य प्रकट करते हैं कि केवल एक स्त्री के लिए ट्रॉयजन और एकियन सैनिक इतने समय से कष्ट उठा रहे हैं। सचमुच वह एक देवी के रूप में है, फिर भी उसे क्यों नहीं विदा कर दिया जाता और क्यों नहीं इस भयानक आपत्ति से हमें और सन्तानों को मुक्त किया जाता।

हेलन अपने श्वसुर प्रायम से बातें करती हुई स्वीकार करती है कि इससे कहीं अच्छा होता कि यहाँ आने से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई होती।

होमर की रचना पढ़ने पर यही विदित होता है कि इस युद्ध का मूल कारण देवताओं का विधान ही है और उन्हीं की प्रेरणा के कारण यह सर्वनाश हुआ।

होमर उस युग में उत्पन्न हुआ था, जब यूनान में ज्ञान का प्रकाश फैल रहा था। मानव, पेट की समस्या से आगे बढ़ रहा था। उसे देवता और भगवान का भय प्रतीत होने लगा। जीवन क्या है? मरने के बाद क्या होता है? आदि अनेकों प्रश्न उपस्थित हुए।

क्रूरता और युद्ध यही मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य था। लूट-पाट करना और एक जाति को खदेड़ कर उसकी भूमि और पशुओं पर अपना अधिकार कर लेना यही तो मानव-जीवन का सबसे बड़ा ध्येय होता था। सम्राट अगामेमनन कहता है—हम लोग शत्रुओं में से एक को भी

जीवित नहीं छोड़ेंगे यहाँ तक कि माता के गर्भ में रहने वाली सन्तान भी जीवित नहीं रहेगी। समस्त शत्रुओं का संहार कर दिया जायगा, जिसमें एक भी अपने आत्मीय के लिए अश्रुपात करने के लिए शेष न रह जाय।

दूसरी और द्रॉयजन इतने युद्ध लोलुप हैं कि युद्ध से वे कभी घबराते नहीं। हेक्टर उनका प्रधान सेनापति है। रणक्षेत्र में सेना समुद्र की तरङ्गों की तरह एक के बाद दूसरी उमड़ रही है। सेनापति ऊँचे स्वर में आज्ञा प्रदान कर रहे हैं और सैनिक गूंगे की भांति उनकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

‘मरने वालों की चीत्कारें, मारने वालों की शेलियों से मिल रही थीं। पृथ्वी आकाश से टकरा रही थी। भूमि का हृदय फट रहा था। चारों ओर गर्जना की ध्वनि गूँज रही थी।

हेक्टर की वीरता और पराक्रम से घबरा कर राजा अगामेमनन सेनापति ओडिसियस को एकेलीज को मनाने के लिए भेजता है। एकेलीज को बहुत बड़ा प्रलोभन दिया जाता है। किन्तु अगामेमनन के दुर्व्यवहार और अपमानित किये जाने के कारण किसी तरह भी वह युद्ध में सम्मिलित नहीं होता। उसका मित्र पेट्रोक्लस आग्रह और विनय के कारण युद्ध में भाग लेता है। शत्रु के अनेक वीर योद्धाओं का संहार कर वह भी वीर-गति प्राप्त करता है।

पेट्रोक्लस की मृत्यु के कारण एकेलीज विचलित होकर विलाप करता है और अन्त में बदला लेने के लिए प्रतिज्ञा कर अपने आप रणक्षेत्र में आता है। उसके रणकौशल से एकियन सेना बड़े साहस से युद्ध करती है। मरने के पूर्व हेक्टर एकेलीज से समझौता करना चाहता है कि दोनों प्रतिद्वन्द्वियों में से किसी की मृत्यु पर शव का उचित संस्कार हो और किसी रूप में शव का अपमान न हो, किन्तु एकेलीज अपशब्दों द्वारा उसका तिरस्कार करता है। एकेलीज द्वारा हेक्टर मारा जाता है।

एकेलीज की प्रतिज्ञा पूर्ण होती है। बड़े सम्मान से पेट्राक्लस का शव संस्कार होता है। चिता जल जाती है। स्वर्ण पात्र में पेट्राक्लस की हड्डियाँ चुनकर रखी जाती हैं। उसी स्थान पर उसकी समाधि बनती है। समस्त एकियन सेना इसमें भाग लेती है।

समाधि बनाकर सेना वहाँ से जाने वाली ही थी कि एकेलीज ने आदेश दिया कि इस अवसर पर खेल-कूद की व्यवस्था की गई है। इसमें विजयी पुरस्कृत होंगे।

मित्र पक्ष के सभी सैनिक अधिकारी और सेनापति इस समारोह में सम्मिलित हुए। पहले रथ की दौड़ हुई। इसके पश्चात् सभी प्रकार के खेल और तलवार-भाले की दक्षता की प्रतियोगिता हुई। विजेताओं को पुरस्कार प्राप्त हुए।

एकेलीज ने शेर की भाँति दया को हत्या की। किसी के कहने-सुनने की परवाह न करते हुए उसने हेक्टर के शव को रथ की पहियों में बाँध कर पेट्राक्लस की समाधि के चारों ओर घुमाया। एक निर्जीव मिट्टी का भयानक अपमान। किन्तु अभी तक उसकी प्रतिहिंसा शान्त नहीं हुई थी। उसके निवास गृह के पास हेक्टर का शव पड़ा था।

ट्रॉय का वृद्ध राजा प्रायम अपने पुत्र हेक्टर के शव की दुर्गति सुन कर शोक और चिन्ता में विकल हो उठा था। उसे स्वप्न द्वारा दैवी प्रेरणा मिली। वह गुप्त रीति से शत्रु शिविर में प्रवेश करता है। रत्न आभूषण आदि उपहार के लिए लेकर अपने प्राण से निर्भय होकर वह एकेलीज के स्थान पर पहुँचा। उसकी प्रार्थना और वृद्धावस्था पर तरस खाकर एकेलीज ने हेक्टर का शव उसे दे दिया।

नियमानुसार नौ दिन तक शोक मनाकर दसवें दिन दाह संस्कार के पश्चात् भोज हुआ और ग्यारहवें दिन हेक्टर की समाधि बनी। प्रायम ने एकेलीज से विनय किया था कि यदि आवश्यक हुआ तो बारहवें दिन फिर युद्ध के लिए हम लोग प्रस्तुत होंगे। एकेलीज ने अपनी स्वीकृति दे दी थी।

हेक्टर के शव संस्कार के साथ ही इलियड की कहानी समाप्त होती है। इलियड में युद्ध का निर्णय नहीं होता। होमर ने अपने दूसरे काव्य ओडसी में ट्रॉय के युद्ध का परिणाम दिया है।

ओडसी

इस महाकाव्य की प्रारम्भिक पंक्तियों में ही प्रकट होता है कि ट्रॉय के पतन के बाद ओडिसियस अपनी जन्मभूमि के लिए प्रस्थान करता है, किन्तु मार्ग में अनेक दुर्घटनाओं के कारण वह अपने साथियों को नहीं बचा सका। युद्ध में बचे हुए सभी लोग अपने घर पहुँच गये, किन्तु ओडिसियस अभी तक नहीं लौटा।

ओडसी का कथानक बहुत साधारण है। होमर ने अपनी लेखनी की कुशलता से घटनाओं का जाल बुन दिया है। ओडिसियस का यात्रा वर्णन बड़ा आकर्षक है। मार्ग में आते हुए वह एक देवदूती केलिपसो के चक्र में पड़ जाता है, वह उससे विवाह करना चाहती है। ओडिसियस कई वर्ष तक उसके साथ गुफा में रहता है।

इधर उसके घर में उसका पुत्र टेलिमेकस बड़ा हो जाता है। ओडिसियस को पत्नी से विवाह करने के लिए अनेक प्रेमी उसके घर पर डेरा जमा लेते हैं। लोगों की धारणा हो गई थी कि ओडिसियस मर गया। ऐसी स्थिति में उसकी पत्नी पुनः किसी को ग्रहण करेगी और इसी आशा में वे सब उसकी स्वकृति की प्रतीक्षा में पड़े थे। इन प्रेमियों की आपस में एकता थी और सभी चैन से ओडिसियस की सम्पत्ति नष्ट कर रहे थे। ओडिसियस का पुत्र टेलिमेकस भली भाँति जानता कि धीरे-धीरे उसके सभी पशुओं का वे संहार कर चुके और संचित मदिरा भी समाप्त हो रही थी लेकिन वे इतने नीति कुशल थे कि उनसे मुक्त होना कठिन था। ओडिसियस की पत्नी पेनेलोपी सच्चरित्र है और अपने पति की प्रतीक्षा में रहती है। टेलिमेकस

को स्वप्न में दैवी सूचना मिलती है और वह अपने पिता की खोज में निकलता है।

टेलिमेकस पहले नेसटर से मिलता है, वहाँ उसे बहुत-सी बातें ज्ञात होती हैं। फिर वह मेनिलाज और हेलन के यहाँ जाता है। वहाँ उसे अपने पिता के जीवित रहने की सूचना मिलती है। ट्रॉय के पतन का विवरण मिलता है, उसे राजा अगामेमनन की हत्या का रहस्य विदित होता है।

सात वर्ष का समय ओडिसियस ने केलिपसो नाम की देवबाला के साथ व्यतीत किया। दुर्भाग्य से वह समुद्र में उस टापू के किनारे लगा था। वहाँ बड़े आदर से उस देवबाला ने उसे रखा। सब प्रकार का सुख उसे वहाँ प्राप्त था, किन्तु अपनी जन्मभूमि की स्मृति में उसकी आँखें छलक उठती थीं। आठवें वर्ष देव प्रेरणा से देवबाला ने ओडिसियस को मुक्त किया। ओडिसियस ने स्वयं एक नौका तैयार की और सब सामग्री के साथ उसने वहाँ से प्रस्थान किया।

१८ दिनों तक समुद्र की लहरों के साथ द्रव्य करता हुआ ओडिसियस फिर नाव दुर्घटना के कारण एक टापू के किनारे लगता है। वह राजा एलसीनस के यहाँ पहुँचता है। उसका विशेष सत्कार होता है। वह अपनी यात्रा का रहस्यपूर्ण वर्णन करता है। सब लोग आतुरता से उसकी कहानी सुनते हैं।

ट्रॉय के युद्ध के बाद ओडिसियस कैसे भयानक दैवी चक्रों से मुक्त होता हुआ देवबाला केलिपसो का आश्रय में आता है। एक बड़े दैत्य साइक्लोरस के यहाँ पहुँचने पर कितनी बुद्धिमता से उसे कार्य करना पड़ता है। वह दैत्य एक-एक करके ओडिसियस के अनेक साथियों को खा जाता है। ओडिसियस से उसका नाम पूछता है। ओडिसियस अपना नाम 'कोई नहीं' बतलाता है। ओडिसियस बड़ी चतुरता से उसकी आँख फोड़ता है। दैत्य चिल्लाकर अपने जाति के लोगों को बुलाता है। किन्तु जब वे सुनते हैं कि 'कोई नहीं' ने उसे मारा है तब वे वापस चले जाते हैं। ओडिसियस अपनी जान बचाकर भागता है।

इस स्थान पर होमर ने कथा को इतना रोचक बना दिया है कि पढ़ने अथवा सुनने की उत्सुकता चरम सीमा पर पहुँच जाती है।

फिर ओडिसियस सरसी नाम की जादूगरनी के टापू पर पहुँचता है। वहाँ उसके बहुत से साथियों को वह सुअर की आकृति में परिणत कर देती है। ओडिसियस के ऊपर मुग्ध होकर वह उसे मुक्त करती है और उसे सूचित करती है कि एक बार पाताल लोक की यात्रा करना उसके लिए अत्यन्त आवश्यक है।

सरसी के आदेशानुसार ओडिसियस पाताल लोक में पहुँचता है। वहाँ अपने परिचित सम्बन्धी और विशिष्ट व्यक्तियों की आत्माओं की बातों को वह सुनता है। मनुष्य जीवन में अच्छे-बुरे का निर्णय वहीं होता है। अपने कर्मों के अनुसार परिणाम भोगना पड़ता है। होमर ने मानव जीवन के विभिन्न सूत्रों की व्याख्या की है। लेखक का सम्पूर्ण दार्शनिक विचार इसी परिच्छेद में स्पष्ट होता है।

राजा एलसीनस ने बड़े प्रेम से ओडिसियस की कथा सुनी। उसके वीरतापूर्ण कार्यों से प्रसन्न होकर राजा ने उसके लिए सत्र प्रबन्ध कर दिया, इसके पश्चात् ओडिसियस अपने देश आइथका पहुँच गया। उसका पुत्र टेलिमेकस अपने पिता की सम्पूर्ण योजना से परिचित हुआ। धनुष यज्ञ की भांति रचना हुई। ओडिसियस की पत्नी विजयी को अपना पति बनावेगी। अन्त में सभी प्रेमी विकल होते हैं। ओडिसियस अपने अपूर्व पराक्रम से टेलिमेकस के साथ उन सत्र की हत्या करता है।

कथा का अन्त सुखद होता है। ओडिसियस शान्ति का स्वागत करता है।

वास्तव में इलियड और ओडसी पढ़ने के पश्चात् ही होमर की महान प्रतिभा का परिचय मिलता है। उसका ज्ञान बड़ा विशाल था। ऐसा विदित होता है कि संसार की कोई भी बात उससे छिपी नहीं थी, आज अनेक शताब्दियों के बाद भी वह विश्व के लेखकों का पथ-प्रदर्शक है।

होमर आदर्शवादी था। उसने स्त्री चरित्रों में पेनेलोपी और क्लाइट्टेमेनेस्ट्रा का चित्रण भिन्न रूप से किया है। एक तरफ पेनेलोपी १६ वर्ष तक अपने पति ओडिसियस की प्रतीक्षा में सच्चरित्र रह कर व्यतीत करती है। दूसरी ओर क्लाइट्टेमेनेस्ट्रा अपने पति राजा अगामेमेनन की हत्या के पडयन्त्र में भाग लेती है। क्लाइट्टेमेनेस्ट्रा का चरित्र समस्त स्त्री जाति के लिये कलंक का टीका है। हेलन का चरित्र भी भ्रष्ट है, जिसके कारण ट्रॉय का युद्ध होता है।

पुरुष चरित्रों में एकेलीज और ओडिसियस ही महान वीर हैं। एकेलीज देव वंशज है और ओडिसियस महान मानव है। प्रतिहिंसा की भीषण भावना में हेक्टर के शव की दुर्गति करते हुए भी एकेलीज अन्त में प्रायम की प्रार्थना पर शान्त होकर हेक्टर का शव दे देता है। यहाँ उसके चरित्र की उज्ज्वलता प्रकट होती है। ओडिसियस के लिए जब देववाला केलिपसो आग्रह करती है कि वह उसे अमर कर देगी, किन्तु वह उसे स्वीकार नहीं करता।

होमर लिखता है पवन चलता है और वर्षा भर की पत्तियाँ भूमि पर बिखर जाती हैं और फिर वर्षा में वह नूतन कृतियों से हरा भरा हो जाता है। इसी भांति एक पीढ़ी विकसित होती है और दूसरी अपने अन्त के समीप पहुँचती है।

होमर मानव को इस भूमि पर उत्पन्न होने वाले जीव में सबसे अभागा समझता है, किन्तु जीवन में द्वन्द्व करते हुए अपनी कीर्ति छोड़ जाना ही तो मानव का सबसे बड़ा लक्ष्य है।

मृतक लोक में जब ओडिसियस एकेलीज की आत्मा से बातें करता है, वह उसकी प्रशंसा करता है और कहता है कि जब वह जीवित था तब सभी उसकी भगवान की भांति पूजा करते थे और यहाँ मृतकों में भी राजकुमार की भांति वह आसीन है।

एकेलीज उत्तर देता है कि तुम्हारी प्रशंसा व्यर्थ है, इससे कहीं अच्छा होता कि मैं फिर भूमि पर उत्पन्न होकर भले ही एक साधारण किसान

का सेवक होता । यहां जीवन को समाप्त करनेवाले मृतकों का राजा होना मुझे प्रिय नहीं है ।

इस अंश से मानव जीवन का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है । मानव की तुच्छता पर होमर कितना सुन्दर व्यंग करता है ।

एकेलीज जब हेक्टर का अन्त कर देता है तब सभी आने वाले सैनिक उसके शव पर वार करते हैं । एकेलीज चुटकी लेते हुए कहता है—हेक्टर को स्पर्श करना इस समय कितना सरल है, लेकिन जब वह जहाजों में आग लगा रहा था, उस समय कैसा लगता था ?

साधारण वस्तु भी होमर की दृष्टि से छिपी नहीं रहती । युद्ध के वर्णन में तो वह इस तरह विवरण देता है जैसे आंखों के सामने ही सब कुछ हो रहा है । घोड़ों की गर्दन से पसीना टपकने तक को वह नहीं छोड़ता । मानव-रक्त के प्यासे मच्छर पर भी बार-बार आ बैठते हैं । दूध के मटके के समीप छिटी हुई मक्खियाँ और स्वामी भक्त कुत्ते, इन सब का वर्णन उसने ऐसी कुशलता और स्वाभाविक रूप में किया कि वे सब स्मृति में स्थान बना लेते हैं ।

प्रकृति वर्णन तो होमर ने स्थान-स्थान पर अत्यन्त सुन्दर किया है । जब वह किसी टापू, नगर अथवा दृश्य का चित्र उपस्थित करता था तो ऐसा विश्वास होता है कि सचमुच वहाँ का भौगोलिक ज्ञान भी पर्याप्त रूप से उसे था ।

आभूषण, पोणक, भवन इत्यादि का भी विस्तृत वर्णन उसने प्रस्तुत किया है । उस युग के विचित्र चित्र भी उसकी रचनाओं में अङ्कित है । भोजन के पहले हाथ धोना, बराबर का हिस्सा सब का बाँटना, समानता का नागरिक अधिकार और नियम आदि बातें भली-भाँति ज्ञात होती है ।

होमर का विश्वास था कि गर्भ से उत्पन्न होने वाला मानव भाग्य के विधान से अलग नहीं हो सकता । इलियड में एकेलीज प्रायम से कहता है—हम लोग मनुष्य नाम के बड़े तुच्छ जीव हैं और भगवान ने अन्यमनस्क होकर हमारे जीवन में दुःख भर दिया है । तुम्हें मालूम है कि ईश्वर (जीउस) के महल के द्वार पर दो मटके रखे हैं । इनमें

वह उपहारों को रखता है, एक में बुराई और दूसरे में भलाई। जिन लोगों को दोनों का मिश्रण प्राप्त होता है, वे कभी दुःख कभी सुख भोगते हैं। किन्तु जिनको केवल बुराई के घड़े से ही प्राप्त होता है वे इस भूमि पर जीवन भर भटकते और दुःख भोगने के लिए उत्पन्न होते हैं। भगवान और मनुष्य दोनों ही उनका तिरस्कार करते हैं।

होमर की धारणा थी कि मरने के बाद मृतक लोक में भी आत्मा रहती है। उसमें प्रतिभा नहीं होती केवल प्रेत योनि में मनुष्य की आकृति मात्र रहती है। मृतक लोक में कर्मों के अनुसार निर्णय होता है।

युद्ध मानव का व्यवसाय है। वीरतापूर्वक युद्ध करना, विजयी होना यही मनुष्य जीवन की एक मात्र विभूति है। मरने के बाद उसकी कीर्ति अमर रहे, आने वाली सम्मान सम्पन्न से उसकी गाथा सुने और गाये। मरने पर विधि के साथ उसका दाह कर्म हो, उसकी समाधि बनाई जाय। शोक मनाने के बाद मनोरंजन, खेल-कूद और भोजन की योजना यह प्रमाणित करती है कि जीवन में शोक के बाद, एक नवीन प्रभात का दर्शन होता है। यूनानियों की यही परम्परा थी।

यूनानी गीतिकाव्य

विश्व के सभी साहित्यों में सर्व प्रथम किसी न किसी प्रकार के गीत अथवा संगीत का स्वरूप अवश्य दिखाई पड़ता है। यूनानी साहित्य में भी यही बात पाई जाती है। महाकवि होमर के महाकाव्यों में भी गीतिकाव्य के दर्शन होते हैं।

लिरिक शब्द यूनानियों के उस वाद्ययन्त्र 'लायर' से बना है, जिसे यूनानी जनता ने प्राचीन परम्परा से प्राप्त किया था। सभी यूनानी कविताएं गीत विशेष से उद्भूत हुई हैं, जिनमें एक प्रकार के संगीत से मिले शब्द रहा करते थे। लिरिक, एलेजी और 'आयम्बस' ने शीघ्र

ही अपना संगीत का तत्त्व छोड़ दिया। विचारों की प्रबलता के कारण, बाद में संगीत का तत्त्व कविताओं से जाता रहा। यह कहना कठिन है कि उन दिनों की कविताओं में आये हुए कौन से शब्द कहे जाने के लिए थे और कौन गाये जाने के लिए थे।

यूनानी साहित्य में गीति कविता यूनानी छन्दों के विशेष विभाजन के अन्तर्गत मानी जाती है। अधिकांश गीति काव्य लिखित नहीं मिलते। उन कवियों का नाम हमें उनकी कुछ अवशेष पंक्तियों से ही विदित होता है। अनेक ऐसे कवियों के नाम तक का पता नहीं चलता। इनमें से कुछ लोगों की स्थिति का पता केवल इसी बात से लगता है कि बाद के लेखकों ने अपनी रचनाओं में उनका उल्लेख किया है।

यूनान का प्राचीन कवि का कलेन्यूस, आर्कीलोकस का समकालीन था। इन दोनों का काल ई० पू० ६५० माना जाता है।

आर्कीलोकस होमर की भांति सम्मानित कवि था। वह वस्तुओं की महत्ता पर ध्यान नहीं देता था। वह उन वस्तुओं को देखता था, जिनमें वह स्वयं महान बन जाता था। उसका विवाहित जीवन सुखी नहीं था। पत्नी से उसका सम्बन्ध विच्छेद हो गया था। वह अन्धा हो गया था। अपने अन्तिम समय में वह दरिद्रावस्था में अपनी पुत्री के साथ रहा। वह एक वीर सैनिक था और सुन्दर कविता भी करता था। उसने लिखा है कि मैं युद्ध के देवता का दास हूँ और म्यूसेस का उपहार मुझे प्राप्त है। आर्कीलोकस की रचनाओं की प्रशंसा होरेस तथा अन्य यूनानी कवियों ने सुक्त कंठ से की है।

प्राचीन कवियों में हियोनाक नामका एक लंगड़ा भिखारी कवि था। उसने स्त्रियों के विरुद्ध कुछ कविताएँ लिखी थीं। सुना जाता है कि उसकी अधिकांश रचनाएँ गालियों से भरी हैं। उसने स्त्री के सम्बन्ध में लिखा है—एक स्त्री पुरुष को केवल दो दिन प्रसन्नता देती है। एक तो उस दिन जब विवाह करता है और दूसरा जब उसके शव को ले जाता है।

यूनानी 'मोलेस' गीत दो भागों में बंट जाते हैं, कवि का व्यक्ति परक गीत और उसके नर्तक समूह के साथ का सामूहिक गान । ऐसे पुराने गीतों के उदारण मिलते हैं, जिनको प्रचलित करनेवाले का पता नहीं लगता । व्यक्तिपरक गीत के अतिरिक्त, प्राचीन यूनान में प्रमुख त्योहारों के अवसर पर ऐसे उत्सव मनाने की प्रथा प्रचलित थी, जिसमें सामूहिक गान का विधान होता था । ये उत्सव व्यक्तिगत अथवा सर्व साधारण के लिए होते थे । बहुधा विजय, धार्मिक त्योहार, जन्मोत्सव या पुण्य तिथि के अवसरों पर ऐसे सामूहिक गान गाये जाते थे ।

यूनान के व्यक्तिपरक गीत काव्य के प्रतिनिधि एलिसियस, साफो और एनाक्रियन हैं । एलिसियस में सर्वमुखी साहसिक और देशभक्ति से ओत-प्रोत जीवन का मिश्रण है । सेफो में अन्तर्भावनाओं का अंकन है । एनाक्रियन में क.म.जन्म या कल्पना प्रसूत साधारण सुख का आलेखन है । ये व्यक्ति परक गीत सामूहिक गानों की दार्शनिक और कलात्मक कोटि को प्राप्त न कर सके ।

सातवीं शताब्दी के अन्त को सेफो और एलिसियस का काल माना जाता है । रोम का प्रसिद्ध कवि होरेस यूनानी कवि एलिसियस का प्रशंसक तथा अनुगामी था ।

सेफो कवयित्री थी और उसने अपने बाद के युग को बहुत प्रभावित किया है । उसने अपनी कविताओं में अपने व्यक्तिगत विचारों का अधिक वर्णन किया है । प्रकृति के प्रति उसने लिखा है—मैंने पुष्पित वसन्त की पदध्वनि सुनी है और संगीत के प्रति उसने लिखा है—जिस तरह मीठा सेव खूब लाल है; लेकिन वह सबसे ऊँची शाखा पर है । एकत्रित करनेवाला उसे भूल गया है । नहीं, भूला नहीं है, वह वहाँ तक कभी पहुँच ही नहीं सकता है ।

सेफो ने प्रेम पर बहुत सी कविताएँ लिखीं थीं । १०७३ ई० में उसकी रचनाएँ रोम और कुस्तुनतुनिया में जनता के सम्मुख जला दी गई थीं । उस युग के आदर्श के अनुकूल उसकी रचनाएँ नहीं समझी जाती थीं । केवल दो कविताएँ असावधानी के कारण बच गई

थीं। वह अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न महिला थी। वह छन्द जिसका अविष्कार एवं परिष्कार सेफो ने किया, उसी के नाम से वह प्रचलित हो गया है। उसकी कविताएँ उच्चतम प्रेम की भावनाओं से परिपूर्ण थीं। सोलन का कथन था—सेफो का एक गीत सीखने के बाद जीवन का अन्त हो।

अनाक्रियन की कविता बहुत सरल थी। एक बालक भी उसकी कविता समझ सकता था और उसे गा सकता था। ८५ वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हुआ। उसकी ख्याति यूनान के बाहर भी फैल गई थी। उसके अनुयायियों ने 'एनाक्रीओनटिक्स' नाम से कविताओं का एक बृहत् संग्रह किया था, जो शताब्दियों तक उसी के नाम पर चलता रहा। उसका प्रधान विषय प्रेम और मदिरा ही था।

एथेन्स के न्याय विशेषज्ञ विद्वान सोलन की लगभग तीन सौ पंक्तियाँ आज-कल मिलती हैं जो कला पूर्ण भावनात्मक न होकर केवल शिक्षा-प्रद हैं। कविता में इस प्रकार के नैतिक पथ का समर्थन यूनानी चरित्र का अङ्ग रहा है। कविता में नैतिकता का स्तर एवं सम्मिश्रण थिओगनीस की रचनाओं में भी मिलता है। यह कवि विचित्र था। निर्धन लोगों और निर्धनता से उसे अत्यन्त घृणा थी। यह पूँजीपतियों का समर्थक था।

अल्केमान युद्ध में वन्दी होने के कारण दास बनकर अपना दिन काट रहा था। उसकी सुन्दर कविताओं ने अन्त में उसे दासता से मुक्त किया था।

स्टेसीकरस (६२० ई० पू०) का विशेष सम्मान था। वह बड़ा दयालु था और दान में विख्यात था। २४१ ई० पू० हिमेरा के सिक्के पर उसकी आकृति अंकित थी। उस समय तक वह एक कहानी बन गया था। सुकरात जैसे महापुरुष उसकी प्रतिभा की प्रशंसा करते थे। उस समय एक कहावत थी कि स्टेसीकरस की दो पंक्तियों का जिसे ज्ञान न हो वह निश्चय ही मूर्ख है।

सेमोनिडस (५५६-४६७ ई० पू०), वैकीलाइड्स (छठीं शताब्दी ई० पू०) और पिन्डर (५२२-४३३ ई० पू०) नाम के तीन कवि अत्यधिक प्रसिद्ध हो गये हैं ।

सेमोनिडस ने 'इनकोनियम' नामक कविता लिखी थी । यद्यपि वह एक महान् व्यक्ति की प्रशस्ति में लिखी गई थी, तथापि उसमें भूतकाल के वीरों का भी इतिवृत्त तुलनात्मक ढंग पर था । इस प्रकार प्राचीन वीर-गाथा कविता के प्रतिपाद्य के साथ सम्बद्ध कर दी गई थी ।

वैकीलाइड्स की कविताएँ उसके जीवन काल में प्रसिद्धि नहीं पा सकीं । अनेक शताब्दियों तक उसकी रचनाएँ लुप्त रहीं । १८६६ ई० में उसकी अपूर्ण रचना मिस्त्र में प्राप्त हुई है । अब वह अत्यन्त सम्मानित कवि समझा जाता है ।

पिन्डर लिरिक कवियों का प्रधान कहा जाता है । यह यूनान का पहला ऐसा कवि है जिसके जीवन का वास्तविक परिचय प्राप्त है । वह कुशल गायक और संगीतज्ञ था । बीस वर्ष की अवस्था में वह कविता करने लगा था । वह आदर्शवादी था और सच्ची वीरता का उपासक था । प्राचीन यूनान के सामूहिक उत्सवों पर उसके गीत बड़े प्रभावशाली होते थे । उसे अपने जीवन में ही पर्याप्त यश प्राप्त हुआ था । आज तक साहित्य में 'पिन्डारिक्स', ओड के नाम से, प्रचलित है । वह ऐसा कलाकार था जो सभी विद्याओं से प्रेम रखता था । शिल्पकला तथा कविता का सम्बन्ध उसे मान्य था और वह कहा करता था—मैं वह शिल्पी नहीं कि ऐसी मूर्तियाँ बनाऊँ जो एक ही स्थान पर स्थिर रहें । ऐ मेरे मधुर सङ्गीत ! एजिना से तुम प्रत्येक जहाज और नाव तक पहुँच कर रस की वर्षा करो ।

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के अन्तिम चरण में सिकन्दर महान् ने मिस्त्र में 'एलेक्जेंड्रिया' की स्थापना की थी । यह नगर शीघ्र ही साहित्य और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र बन गया था । इस काल में साहित्यिक प्रवृत्तियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए । साहित्य और जीवन का घनिष्ठ-

तम् सम्बन्ध अपेक्षाकृत शिथिल पड़ने लगा और साहित्य केवल पुस्तक तक सीमित रहने तथा पारस्परिक अनुकरण मात्र की वस्तु बन गया। तत्कालीन शासक टालमीज ने एक विशाल पुस्तकालय का निर्माण किया, जिसके फलस्वरूप विद्वान, कवि और कलाकार एकत्र होने लगे। 'एलेक्जेंड्रिया' में इस काल में दर्शन, इतिहास, आलोचना आदि की आश्चर्यजनक उन्नति अवश्य हुई, किन्तु कविता के संवर्द्धन के विचार से यह समय उल्लेखनीय नहीं। इस काल की कविता में प्राचीन यूनानी ओज तथा नवीनता का एक प्रकार से पूर्ण अभाव ही था। इस समय एक नवीन बात यह हुई कि कविता लिखने का उद्देश्य पाठन मात्र रह गया, जब की प्राचीन यूनानी कविता सङ्गीत की भांति सुनाई जाती थी। कविता सुनने में मधुर कर्ण-प्रिय न होकर केवल पढ़ने के उद्देश्य से ही रची जाने लगी। 'एलेक्जेंड्रियन' काल में कविता की मन्द प्रगति, नवीन विचारधाराओं तथा नये छन्दों एवं रूपों का अभाव था।

उस समय थियाक्राइटस नाम का ऐसा कवि हुआ, जिसने मौलिक रूप में नवीन बातें लिखीं। उसीने 'पेस्टोरल'-ग्राम्यगीत-छन्द का स्वतन्त्र और पूर्ण स्वरूप उपस्थित किया है। इस छन्द के साथ थियाक्राइटस का नाम उतना ही घनिष्ठ है, जितना 'ओड' गीति छन्द का पिन्डर के साथ। पेस्टोरल गीति में गड़रियों, पशुपालकों, उनके प्रेम, उनके परम्परागत विश्वासों तथा जिस प्रकृति की गोद में वे रहते हैं उसका वर्णन रहता है। इन कविताओं में गड़रियों के प्रेम, सङ्गीत और कथनोपकथन इतने कवित्व पूर्ण, सरस एवं सजीव हैं कि बाद के आलोचक आश्चर्य प्रकट करने लगे कि क्या इन अर्ध-सभ्य तथा असंस्कृत किसानों के अन्तर-प्रदेश में इस प्रकार की परिमार्जित और कोमल भावनाएँ उठनी सम्भव थीं। साधारणतया यह लोक-विदित है कि किसानों और गड़रियों के ये लोक गीत कल्पना-जन्य होते हैं किन्तु तथ्य की बात यह है कि थियाक्राइटस ने अपनी कविता का आधार कल्पना नहीं अपितु यथार्थ और सत्य रखा था। सिसली के नील

गगन के नीचे हरे-भरे पर्वत और शिला-खण्डों पर वंशी बजाते हुए गड़रियों के वास्तविक स्वरूप का चित्रण थियोक्राइटस ने अपनी कविताओं में किया है। गड़रियों और किसानों में उक्त परम्परा की धारा आज भी अखण्ड और अविच्छिन्न है।

थियोक्राइटस की शिष्य परम्परा में वीयन और मार्क्स दो उल्लेखनीय कवि हो गये हैं। इनकी कविताओं में मृत व्यक्तियों के प्रति पेस्टोरल गीत में विरह वियोग तथा शोक व्यक्त किया गया है। उन दोनों ने विषय का प्रतिपादन तथा अभिव्यंजन ऐसी शैली में किया है कि वे कविताएं आज भी पेस्टोरल गीत में विशिष्ट स्थान रखती हैं।

पेस्टोरल गीत समस्त योरोपीय भाषाओं में एक परम्परा की भांति आज भी विद्यमान है। प्रसिद्ध कवि वर्जिल की 'इक्लोग्स' कविताएं थियोक्राइटस का अनुकरणमात्र हैं। अधिकांश पेस्टोरल साहित्य जो आज विभिन्न देशों में मिलता है, अवास्तविक ही है, किन्तु कुछ पेस्टोरल साहित्य यथार्थवादी और वास्तविक भी मिलता है। उसका मुख्य कारण यह है कि कवि ग्रामीण जीवन से, वहां की प्राकृतिक सुगन्ध और सौन्दर्य से, अत्यधिक प्रेम रखते थे।

ग्राम्य जीवन के विविध स्वरूपों का दिग्दर्शन कराने वाले इस पेस्टोरल साहित्य के विकास के चार प्रधान कारण हैं। थियोक्राइटस और वर्जिल द्वारा लिखित कविताएं अनेक शताब्दियों तक कवियों की प्रिय वस्तु बनी रहीं। महारानी एलिजाबेथ के काल में अंग्रेजी में एक प्रकार से केवल ग्राम्य जीवन का चित्रण करने वाली ही कविताएं, जो गड़रियों, किसानों के सम्बन्ध में थीं, अधिक लिखी गई हैं; उस काल के कवियों ने वर्जिल के 'इक्लोग्स' का अनुकरण किया है।

पेस्टोरल साहित्य की उन्नति, प्रचार प्रसार और प्रगति का द्वितीय चरण उस समय से माना जाता है जब कि छोटे-छोटे कथोपकथन से उसका रूप एक पूर्ण नाटक के समान हो गया। इटालियन भाषा में सइ प्रकार की सर्वोत्कृष्ट रचना टेस्सो की 'एमिन्टा' है। अंग्रेजी भाषा

में इसके उच्चकोटि के निदर्शन की पुस्तकें बेन जानसन की 'सैड शेफर्ड' और जान फ्लेचर की 'फेथफुल शेफर्ड्स' हैं ।

पेस्टोरल साहित्य का तीसरा विकसित रूप है गद्यमय प्रेम कथा । यह भी कहा जा सकता है कि जिसमें गद्य-पद्य मिश्रित हो और जिसका विषय प्रेम और वीरता से पूर्ण हो, रोमांचक हो । इस प्रकार की रचना इटालियन साहित्य में सैनेजरो की 'आरकेडिया' है । इसी पर फिलिप सिडनी ने एक गद्य-पद्यमय रचना प्रस्तुत की, जिसमें अलंकारिक शैली में ग्राम्य जनता के अतिरिक्त अन्य लोगों के भी कथोपकथन रखे गये हैं । जो हो, एक बात तो स्पष्ट है कि पेस्टोरल रोमांचक गद्यों की ओर आकर्षण का यही कारण है कि उनके पठन में रोमांचक उपन्यासों का आनन्द आता है । इसका मुख्य विषय भेड़-गड़रिये, किसान आदि की वही यथार्थवादी पृष्ठ भूमि है ।

इस पेस्टोरल साहित्य का उच्चतम विकास कवित्व की कृष्टि से मिल्टन के 'लेसिडास' और शैली के 'एडोनिस्' में हुआ है । लेकिन एडोनिस् में मृत नायक 'कीट्स' प्रत्यक्ष रूप से गड़रिये के रूप में नहीं, किन्तु कवि के रूप में है, जिसके प्रति खेद प्रकट किया गया है, इसमें यूनानी होने का आवरण केवल नाम है । 'लेसिडास' में मिल्टन ने पेस्टोरल प्रतीक का पूर्ण्यता निर्वाह किया है ।

यूनानी कविताओं का सर्वोत्तम संग्रह 'एन्थोलाजी' है । इसमें ईसा पूर्व छठीं शताब्दी तक के यूनानी कवियों की रचनाएँ हैं । इन कविताओं, गीति-प्रेम सम्बन्धी मुक्तक कविताओं, में यूनानी जीवन का वास्तविक स्वरूप दिखाई पड़ता है । इस एन्थोलाजी का इतिहास बड़ा मनोरंजक है । ईसा पूर्व पहली शताब्दी में कवि मिलेगर ने एन्थोलाजी का कार्य आरम्भ किया था । इसमें चालीस कवियों की रचनाएँ रखी गईं । पिछली शताब्दी के महान गीतिकारों की भी कविताएँ इसमें सम्मिलित की गईं । इस संग्रह का नाम 'गारलैन्ड' रखा गया । एन्थोलाजी का अर्थ है पुष्पहार, यह पुस्तक अत्यन्त प्रसिद्ध हो गई और बाद के पुष्पहार पिरोनेवालों द्वारा यह कार्य निरन्तर

चलता रहा। मिलेगर के एक हजार वर्ष बाद कान्सटैनटिनस शेफलाजी ने अनेक एंथोलाजियों की एक एंथोलाजी प्रस्तुत की और अपनी ओर से भी कुछ कविताओं का संग्रह इसमें जोड़ा। चौदहवीं शताब्दी में मौक पैल्युडस ने इसका एक नवीन संस्करण प्रकाशित किया। शेफलाज के संग्रह की बहुत सी सुन्दर कविताएं इसने छँट कर अलग कर दीं और अनेक अपने चुनाव से उसमें संगृहीत कीं। पैल्युडस की यही एंथालजी बहुत समय तक प्रामाणिक यूनानी कविताओं की पुस्तक मान जाने लगी।

इस बीच में शेफलाज की एंथोलाजी लुप्त हो गई थी और विस्मृति में विलीन हो गई थी। सत्रहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में हिडेलबर्ग विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी ने शेफलाज के संग्रह की हस्तलिखित प्रति खोज निकाली। तीस वर्षीय युद्ध के समय जर्मनी से यह हस्त लिखित प्रति रोम नगर भेज दी गई। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में जब कि फ्रेंच लोगों ने इटली को पराभूत किया तो वहाँ की लूट में वह हस्तलिखित प्रति पेरिस लायी गई। इसे देखने के लिए बहुत से विद्वान् एकत्र हुए थे।

यूनानी कविताओं के इस अपूर्व संग्रह का सबसे अधिक महत्व इस बात में है कि इसी के द्वारा अनेक कवियों की रचनाएँ सुरक्षित रहीं, जो इस संग्रह के अभाव में काल कवलित हो गई होतीं, इसमें जो हजारों कविता रूपी पुष्पों का चयन किया गया है वे प्राचीन यूनानी कविता की सम्पूर्ण तथा समिष्टि रूप में भावनाएँ एवं अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं। इस संग्रह में यूनानी कविताओं के प्रभातकाल से रात्रि के अवसान काल तक के विकास उत्थान का स्वरूप विद्यमान है। इस एंथोलाजी में मृत्यु सम्बन्धी अनेक उकृष्ट कविताएँ हैं। यहाँ उनमें से एक उदाहरण दिया जा रहा है। इस कविता का रचयिता ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी का प्रसिद्ध कवि कैलिमेक्स है—हेरैक्लिटस ! उन्होंने मुझे कहा, बताया कि तुम्हारी मृत्यु हो गई। यह मेरे लिए अत्यन्त कटु संवाद था जिसके लिए मुझे अत्यधिक अश्रु-पात हुआ। मैं

यह स्मरण कर रुदन करने लगा कि प्रायः तुम और हम जब वार्तालाप करने बैठ जाते थे तो सूर्य थक कर अस्ताचलगामी हो जाता था। और अब, अब तुम सोये हुए हो। ऐ मेरे अतिथि! अब मुट्ठी भर श्याम धूलि अवशेष है और तुम अनन्त काल के लिए चिर निद्रा में निमग्न हो गये हो। फिर भी तुम्हारा सुन्दर स्वर, और मधुर संगीत सजीव हैं, क्योंकि मृत्यु सब कुछ हरण कर लेती है, किन्तु उन्हें नहीं छीन सकती।

यूनानी नाटक

यूनान के नाटककार मानव-जीवन के गूढ़ रहस्यों को अपनी रचनाओं में सुलझाने में निपुण थे। विधाता का चक्र और मनुष्य का कर्तव्य, जीवन की जटिलता में साहस पूर्ण उसका लक्ष्य, विभिन्न जगत और अदृश्य शक्तियों का व्यापक प्रभाव आदि ही यूनानी नाटककारों का विषय होता था।

यूनानी दुःखान्त नाटकों के विकास का अध्ययन करने पर शत होता है कि वीर-काव्य और गीति-काव्य से ही नाटकों की उत्पत्ति हुई है। ट्रेजिडी का अर्थ 'बकरे का गान' है। यह बड़ा हास्यप्रद मालूम पड़ता है। लेकिन वास्तव में उत्सव के समय जब बकरे का बलिदान होता था उसी से उसका सम्बन्ध रखा गया है।

प्रकृति की गोद में खेलने वाले मानव के लिए बीज बोने और फसल काटने का समय विशेष महत्व रखता है। यूनान के लोग भी इन अवसरों पर उत्सव मनाते थे। वर्ष की सभी ऋतुओं में अंगूर की फसल के प्रति मानव का स्वाभाविक उत्साह और प्रसन्नता का निकट सम्बन्ध रहता है। यूनानियों का दो विख्यात उत्सव लीनियन जनवरी मास में और डायोनिसस मार्च महीने में होता था। इस अवसर पर जनता को स्वतन्त्र रूप से सम्मिलित होने की सुविधा थी। आरम्भ में

केवल नृत्य और गान ही था। बाद में गान के साथ वार्तालाप का सम्बन्ध हुआ। एक ओर से अभिनेता अपने इष्टदेव बाक्स की पौराणिक कथा सुनाता, दूसरी ओर समय-समय पर कोरस कथा के वर्णन में भाग लेता था। उस स्थान पर मध्य में बाक्स की मूर्ति रहती थी।

दो पात्रों के प्रवेश के साथ ही रंगमंच की रचना हुई। धीरे-धीरे अनेक पात्र बढ़ते गये और नाटक का रूप बना। यूनान के ग्रामीण स्थानों से आगे बढ़कर एथेंस में इस आकृति ने अपना परिष्कृत रूप धारण किया।

एथेंस यूनानी राज्यों का पथप्रदर्शक था। युद्ध, कला, साहित्य और संगीत में एथेंस उत्कर्ष की सीमा पर पहुँच गया था। वर्ष में दो बार यह नाटक प्रदर्शन होता और प्रतियोगिता में विजयी को पुरस्कार प्राप्त होता। निर्णय जनता के बहुमत से होता था।

यूनान में गणतन्त्र था। वहाँ केवल दो ही श्रेणी के लोग थे एक पूंजीपति और दूसरे गुलाम जो पशुओं की भांति खरीदे जाते थे। शासन में धनियों का ही हस्तक्षेप चलता था। गुलामों को नागरिकता का अधिकार तभी प्राप्त होता था जब वे अपने स्वामी से मुक्त हो गये हों और उनका जन्म वहाँ ही हुआ हो। लेकिन नाटक देखने में उन्हें कोई बाधा नहीं थी। यहाँ तक कि जेल से बन्दी भी उस समय के लिए मुक्त कर दिये जाते थे।

यह नाटक-प्रतियोगिता सचमुच राष्ट्रीय महत्व की योजना थी। इसमें पूंजीपति और सरकार मिल कर भाग लेती थी। इसमें पर्याप्त धन व्यय होता था। निर्धन को भी सुविधा थी; यदि उसके पास टिकट के लिए पैसे न होते तो सरकारी खजाने से उसे उतने पैसे प्राप्त हो जाते थे।

उस समय एथेंस में बड़ी चहल-पहल रहती थी। देहातों और अन्य देशों से लोग इस समारोह में आते थे। रंगमंच बड़ा विशाल था। यह अर्ध गोलाकार प्राचीन नाट्यशाला पहाड़ी पर बनी थी और बैठने

का स्थान सीढ़ियों की भांति चट्टान काट कर बनाया गया था। नीचे की पंक्तियां मजिस्ट्रेट और राज्य प्रतिनिधियों के लिए सुरक्षित रहती थीं।

दिन में, सूर्य के प्रकाश में ही नाटक खेले जाते थे। समुद्र से वायु का भौंका आता रहता। लगभग तीस हजार दर्शक नाटक देखने में तन्मय रहते। इन नाटकों की कथा से सभी पूर्व परिचित रहते थे, क्योंकि उनका कथानक पौराणिक होता था, जो धार्मिक महत्व के अनुसार सब को विदित होता था।

अभिनेताओं को लकड़ी का जूता पहिना कर लम्बा बना दिया जाता था। बनावटी प्रयोग से उनके शरीर की आकृति भी विशाल हो जाती थी। पात्रों की मुखकृति चेहरे से ढंकी रहती थी। उस काल में भी यूनानियों ने ऐसा अविष्कार किया था, जिससे चेहरे के भीतर बोली हुई ध्वनि चारों तरफ फैल जाती थी और जनता भली भांति पात्रों की वाणी सुन लेती थी।

इन नाटकों में धार्मिक कथानक का एकमात्र प्रदर्शन होता था। होमर के काल में देवता-गण प्रचलित थे, उनमें भी मानव मनोवृत्तियों की भांति असमर्थताएँ और त्रुटियाँ थी। वे अदृश्य थे, किन्तु भिन्न-भिन्न आकृति में अपना रूप धारण कर जीवित मनुष्यों के सम्मुख प्रकट हो कर अपना संदेश दे जाते थे। होमर का विश्वास था कि आत्मा अमर है, मृत्यु के पश्चात् आत्मा अन्धकारमय पाताल-लोक में अपने मित्र सम्बन्धियों के साथ रहती है। जिनका उचित रीति से शव संस्कार नहीं होता वे आत्माएँ वायु में भटकती रहती हैं। होमर के युग के यूनानी यह नहीं मानते थे कि इस संसार में पाप करने के अपराध में नरक लोक जाना पड़ता है। बाद में पाप और दैवी अमिशाप के कारण मनुष्य को उसका परिणाम मिलने लगा। यूनानी नाटकारों के नाटकों का विषय यही बन गया। यहां तक माना जाने लगा कि मनुष्य को अपने पाप और अपराध का ही फल नहीं बल्कि अपने पूर्वजों के कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

संक्षेप में हम यहां एक ऐसे कथानक को उपस्थित करते हैं, जिस पर यूनान के सभी नाटककारों ने अपनी लेखनी चलाई है।

थेबेस के राजा लेउस ने जोकासटा से विवाह किया था। देव-वाणी से उसे सूचना मिलती है कि यदि उसका पुत्र उत्पन्न होगा तो वह अपने पुत्र द्वारा मार डाला जायगा। स्त्री पुरुष दोनों सन्तानोत्पत्ति से सावधान रहे, किन्तु एक बार एक उत्सव के समय दोनों मंदिर के प्रभाव से वंचित न रह सके। उन्हें एक पुत्र हुआ। उस बच्चे को पहाड़ पर ले जाकर मार डालने की राजा ने आज्ञा दी। नौकर ने उसकी हत्या न कर उसे निर्जन स्थान में छोड़ दिया। संयोग से एक दूसरे राजा का नौकर उधर से जा रहा था। उसने इस बच्चे को लाकर अपने स्वामी के सम्मुख रखा। राजा सन्तानहीन था अतएव उसने अपने पुत्र की भांति उसका पालन पोषण किया। उसका नाम इडिपस रखा गया। जब वह बड़ा हुआ तो उसने अपने यहां प्रीति-भोज में अपने पिता के कुछ मित्रों को बातें करते हुए सुना। उसके वास्तविक माता-पिता के सम्बन्ध में उन्हें संदेह था।

इडिपस पुजारी के यहां इस रहस्य को समझाने के लिए जाता है। पुजारी सूचना देता है कि यदि वह अपने जन्म स्थान पर जायगा तो अपने पिता की हत्या करेगा और अपनी माता से विवाह कर लेगा। इडिपस लौट रहा था। मार्ग में एक बूढ़ा आदमी अपने सहयोगियों के साथ खड़ा था। रथ के सारथि ने राज-वंश के लिए पथ से हट जाने की आज्ञा दी, किन्तु बूढ़े ने कहा कि मैं स्वयं राजा हूँ और मार्ग नहीं खाली करूँगा। इस पर युद्ध हुआ और इडिपस ने राजा का ही अन्त नहीं किया बल्कि उसके सब साथियों को भी मार डाला। बहुत दिनों बाद इडिपस को शत हुआ कि वह बूढ़ा उसका पिता था और वह भी वहीं उसी पुजारी के यहां यह पूछने गया था कि उसका पुत्र जीवित है या नहीं?

पिता की हत्या करने के पश्चात् इडिपस ने थेबेस के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचने पर उसे पता चला कि स्फिनिक्स नाम की एक

दैत्या प्रति-दिन एक नागरिक को उठा ले जाती है और उसे खा जाती है। पुजारी ने सूचित किया था कि जब तक उसके प्रश्न का उत्तर नहीं मिलेगा तब तक नगर उससे मुक्त नहीं हो सकता। उस नरभक्षिका का प्रश्न था—वह कौन है, जो बोलता है और सबेरे चार पैर से चलता है, दोपहर में दो पैर से चलता है और सन्ध्या समय तीन पैर से चलता है। क्रीओन ने घोषणा की थी कि इस प्रश्न का जो ठीक उत्तर देगा वह राज्य का अधिकारी होगा और अपनी बहन का विवाह भी वह उसके साथ कर देगा।

इडिपस उस समय वहाँ पहुँच गया था। उसने तत्काल ही उत्तर दिया कि वह मनुष्य है, जो बचपन में चार पैर से, बड़े होने पर दो पैर से और बुढ़ापे में लकड़ी का सहारा लेकर तीन पैर से चलता है। यह सुनकर दैत्या वहाँ से चली गई। इडिपस थेबेस का राजा हुआ और अनभिज्ञ होने के कारण उसने अपनी माता जोकास्टा से विवाह किया जो क्रीओन की बहन थी। इसके पश्चात् भाग्य के कुचक्रों द्वारा प्रत्येक पात्र को उसका परिणाम प्राप्त होता है। लेउस के परिवार का इतिहास ही बड़ा करुण और दुःखमय है। यहाँ तक कि अग्रामेमनन, एजिसथ्यूज, एलेक्ट्रा इत्यादि, जिनका सम्बन्ध इस परिवार से है, सभी का भयानक अन्त होता है। ट्रेजिडी का तात्पर्य ही दुःखमय अन्त माना जाता है।

देवी, देवताओं के प्रति यूनानियों का अटल विश्वास था। प्रत्येक देवता अपना अलग स्थान रखते थे। उनके द्वारा ज्ञान, शक्ति और प्रेम का संचार होता था। कुछ ऐसी शक्तियाँ भी थीं जो मनुष्य को प्रतिहिंसा और अभिमान की भावना में परिपूर्ण होकर अपराध की ओर अग्रसर करती थीं। जब मनुष्य देवताओं की अवहेलना कर बलिदान और पूजा में त्रुटि करता था तो अप्रसन्न होकर वे मानव को घोर दण्ड देती थीं। देवता के कोप के कारण मनुष्य हत्या और अपराध के लिए बाध्य हो जाता था और उसकी सन्तानों को भी उसका फल भोगना पड़ता था।

यूनानियों की धार्मिक परम्परा के अनुसार जीउस स्वर्ग के सम्राट माने गये और अपोलो आदि अन्य देवतागण ओलिम्पस में उनके साथ निवास करने लगे। इसके पूर्व ओलिम्पस में कुछ अन्य देवता-गण क्रोनूस, ओसनूस, प्रोमैथ्यूस और टीटनस वहाँ निवास करते थे। उनके राज्य का पतन होने के बाद वे निर्वासित कर दिये गये, बन्दी के रूपमें उन्हें अनेक यात्रणाएँ उठानी पड़ीं।

यूनानी नाटक दुःखान्त भावनाओं और विचारों के हैं। उनमें जीवन को द्वारा व्यक्त किया जाता है और वर्तमान ट्रेजिडी चरित्रों द्वारा प्रस्फुटित होती है। इसकाइलस यूनान का प्रथम सम्मानित नाटककार था। वह एक उच्च वंश में उत्पन्न हुआ था, किन्तु एथेंस के लोकराज्य सम्बन्धी विचारों के प्रति उसकी सहानुभूति थी।

पचीस वर्ष की अवस्था में इसकाइलस ने अपना प्रथम नाटक उपस्थित किया था। वह कवि था। लेकिन कवि से अधिक वह अपने को सैनिक समझता था। उसने वीरता-पूर्वक मराथन, सलामिस और और ल्पेटिया के तीन युद्धों में भाग लिया था। इसकाइलस का अनुभव विशाल था। उसने सिसली आदि नगरों का भ्रमण भी किया था। यूनानी सभ्यता और संस्कृति का उसे पूर्ण ज्ञान था। उसने अपनी समकालीन ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन भी अपनी रचनाओं से किया था। इसमें सन्देह नहीं कि उस युग में अन्य सभी देशों से यूनान महान था और इसकाइलस यूनान का सब से महान व्यक्ति था। उसने यूनानी रंगमंच से अपने युग के मनुष्यों को नहीं बल्कि सभी युग और देश के मनुष्यों को अपना संदेश दिया है।

एक बार एक रचना में कुछ धार्मिक रहस्यों को स्पष्ट करने के कारण जनता उत्तेजित हो उठी थी और इसकाइलस पर आक्रमण करना चाहती थी, किन्तु उसके भाई ने अपनी पोषाक हटा कर युद्ध में नष्ट हुए अपने हाथ को दिखलाया और जनता को विश्वास दिलाया कि उन दोनों भाइयों ने कितनी तत्परता से युद्ध में भाग लिया था। तब जाकर जनता शान्त हुई।

इसकाइलस का जन्म ई० पू० ५२५ में हुआ था। उसने अपने जीवन में ६० नाटकों की रचना की थी जिनमें अब केवल ७ नाटक ही सुरक्षित हैं। अन्तिम समय में एथेंसेवालों की उपेक्षा के कारण वह साइराक्स के राजा के यहाँ चला गया था और अपना शेष जीवन उसने वहीं व्यतीत किया था। उस काल में वहाँ उसने जो नाटक प्रस्तुत किये थे उनमें 'ओस्ट्रीज' उसकी सर्व श्रेष्ठ कृति मानी जाती है।

नाट्य प्रतियोगिता में एक बार साफोक्लीज २५ वर्ष की अवस्था में विजयी हुआ और इसकाइलस उसके सम्मुख पराजित हुआ। इस अवसर पर जनता द्वारा निर्णय न होकर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा ही परिणाम घोषित हुआ था। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि इस सम्बन्ध में साफोक्लीज के साथ पक्षपात हुआ क्योंकि उसके पिता की ख्याति और धन से निर्णायक प्रभावित थे।

तीन नाटकों का एक क्रम मिला कर ट्रायालोजी होती थी और चौथे में सटायर प्ले या हास्य नाटक के रूप में जनता का मनोरंजन होता था। इन दुःखान्त नाटकों को देखने के बाद अवश्य ही जनता गम्भीर एवं विषादमय भावनाओं में लीन हो जाती थी। उसके लिए आवश्यक था कि हास्य का वातावरण उपस्थित किया जाय। इसीलिए ट्रायालोजी के साथ चौथा नाटक हास्य पूर्ण होता था। प्रत्येक नाटक डेढ़ घण्टे में समाप्त होता था।

यूनानी राज्यों में गणतन्त्र के कारण नाटककारों को इस प्रश्न का विशेष ध्यान रखना पड़ता था। जनता किसी नाटक को देखकर क्या सोचेगी। इसकाइलस ने जिन नाटकों की रचना की उनमें दैवविधान के साथ ही सामाजिक नियम, मनुष्य का कर्तव्य और आदर्श मानव के प्रति लक्ष्य रखा गया था। जीवन में त्याग और यंत्रणा के बाद ही वह उन्नत अवस्था में पहुँचता है। दुःख के मार्ग में ही ज्ञान का उदय होता है, प्रकाश की खोज में अन्धकार का दर्शन होता है। पाप और हत्या का दण्ड अवश्य मिलेगा। इन्हीं वाक्यों में यूनानी दुःखान्त नाटकों का रहस्य छिपा हुआ है।

यूनानी देवताओं में भी विद्रोह की भावना प्रबल रही। स्वर्ग (ओलिम्पस) के शासन में दुर्व्यवस्था के कारण पुराने शासन को उलटने में नई पीढ़ी का हस्तक्षेप चलता है। जीउस ने अपने पिता को हटा कर स्वयं स्वर्ग का संचालनाधिकार प्राप्त किया। उसी प्रकार उनके पिता ने भी अपने पिता को राज्य से वंचित किया था।

इसकाइलस ने 'प्रोमिथ्यूस' के सम्बन्ध में एक ट्रायालोजी लिखी थी जिसके दो खण्ड विलीन हैं केवल प्रोमिथ्यूस वाउन्ड प्राप्त है। इसका कथानक बहुत सरल है। स्वर्ग के निवास करनेवाले देवताओं में प्रोमिथ्यूस भी एक है। उसने जीउस के राज्याधिकार प्राप्त करने में सहयोग दिया था। उसे आशा थी कि जीउस मानवता के कल्याण में विशेष भाग लेंगे, किन्तु उसे जीउसके कार्य से घोर निराशा हुई और उसने गुप्त रीति से अग्नि लाकर मानव को दिया। इस अपराध में जीउसने प्रोमिथ्यूस को कठोर दण्ड दिया और पहाड़ पर वह लोहे की जन्जीरों में बांध कर लटका दिया गया और शिद्ध द्वारा उसका मांस भक्षण हुआ। अन्त में भयानक यंत्रणाओं के बाद वह मुक्त हुआ। इसी कथानक पर इसकाइलस के तीन नाटक एक सूत्र में बांध कर लिखे गये थे।

अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति 'ओस्ट्रीज' की कहानी भी लेखक ने तीन नाटकों के रूप में रखा है। ट्रॉय से विजय कर राजा अगामेमनन लौटता है। उसकी पत्नी केमेस्त्रा उसकी हत्या करती है। केमेस्त्रा की कन्या का बलिदान अगामेमनन ने किया था। प्रतिहिंसा में वह अपने पति का अन्त करती है। ओस्ट्रीज उसका पुत्र है। पिता की हत्या का दण्ड वह माता को देता है और उसकी हत्या करता है। अन्त में इस अपराध में उसे मुक्त करने में भगवान सहायक होते हैं। इसकाइलस ने बड़ी विद्वत्तापूर्ण एथेंस की जनता के सम्मुख इसका निर्णय कराया है। गणतंत्र में जनता की सम्मति और बहुमत पर ही शासन की सम्पूर्ण व्यवस्था का दिग्दर्शन कराया है। माता से अधिक पिता के प्रति पुत्र का कर्तव्य है। तर्क द्वारा वह अपराध से मुक्त होता है।

इसकाइलस ने अपने 'परशियनस' नाटक में प्राचीन कथा का आश्रय लेकर अपनी समकालीन ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है। परशियन युद्ध के सात वर्ष पश्चात् यह नाटक उपस्थित किया गया था। कथानक परशिया की राजमता के महल से आरम्भ होता है। अपने पिता सम्राट दरियस के अज्ञानुसार परशिया के लोगों ने यूनान पर आक्रमण किया और पराजित होकर लौटे। नाटककार ने सम्राट के वैभव और अभिमान के पतन का चित्रण किया है। परशिया की शक्ति चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी, किन्तु अन्त में उसका पतन हुआ। लेखक ने उस जाति का दुर्भाग्य और देवताओं के अभिशाप को ही मूल महत्व दिया है। गर्व और अभिमान में उन्नत परशियन जाति यूनान के चरणों पर झुक जाती है। यह एक शिक्षाप्रद कथानक है।

लेखक ने इस नाटक में यूनान की विजय गाथा नहीं गाई है। किन्तु शत्रु के पराजय का विस्तृत वर्णन कर अपनी जाति की वीरता प्रदर्शित की है। परशिया की राजमाता अटोसा को आश्चर्य होता है कि वह राष्ट्र जिसका सम्राट नहीं है कैसे युद्ध में भाग लेता है। एक ओर साम्राज्यवाद और दूसरी ओर गणतन्त्र ! लेखक ने सैनिकों के युद्ध में आगे बढ़ने में, अपनी जन्मभूमि की मर्यादा, देवताओं का मन्दिर और पूर्वजों की कब्र की रक्षा का ध्येय रखा है।

इसमें सन्देह नहीं कि इस नाटक में एथेंस वालों की विजय-गाथा पर्याप्त रूप से हुई थी और स्वभावतः यह उन्हें विशेष रुचिकर हुआ। लेकिन सम्पूर्ण यूनान में यह नाटक लोक-प्रिय हुआ क्योंकि परशियन युद्ध समस्त यूनानी राष्ट्र को सम्मिलित रूप से संघटित होकर लड़ने का कारण बना। इसलिए इस नाटक को भी राष्ट्रीय महत्व प्राप्त हुआ। प्राचीन वीरों की कहानी और द्रॉय-युद्ध की गाथा के पश्चात् प्रथम बार यूनान में इस नाटक का राष्ट्रीय स्वागत हुआ।

साफोकलीज

साफोकलीज बड़ा भाग्यशाली लेखक था। वह धनी कुल में उत्पन्न हुआ था। उसकी शिक्षा पर विशेष ध्यान रखा गया था और उस युग के अत्यन्त कुशल शिक्षकों द्वारा वह शिक्षित हुआ था। वह सुन्दर था। १६ वर्ष की अवस्था में वह सुन्दर नवयुवकों में नृत्य के लिए चुना गया था। यह नृत्य उस उत्सव में हुआ था जब सलामिस की विजय के उपलक्ष्य में एक मीनार खड़ी की गयी थी। २५ वर्ष की अवस्था में नाट्य-प्रतियोगिता में उसने इसकाइलस जैसे सम्मानित लेखक को पराजित करके प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

साहित्य में प्रथम विजय ही सब कुछ समझी जाती है। वह केवल एक दिन में ही प्रसिद्ध हो गया। ४० वर्षों से अधिक उसने निरन्तर नाटकों की रचना की। उसने अपने जीवन में कभी तृतीय पुरस्कार नहीं प्राप्त किया। उसने लगभग एक सौ नाटक लिखे जिनमें केवल सात ही प्राप्त हैं।

साफोकलीज को अपनी लेखनी के बल पर जीविका नहीं अर्जित करनी पड़ती थी, वह सम्पन्न था। एथेंस की जनता टीका-टिप्पणी करने में बड़ी कुशल थी। किसी भी लेखक अथवा कलाकार की त्रुटियों पर तत्काल ही लोगों की दृष्टि पड़ती थी, किन्तु साफोकलीज सर्वत्र सम्मानित होता था। यहाँ तक कि उस युग के महान व्यंग्यकार 'एरिस्टोफनीज' ने भी कभी साफोकलीज पर व्यंग्य या टिप्पणी नहीं की।

साफोकलीज प्रकृति का उपासक था। उसकी रचनाओं में प्रकृति का अपूर्व अङ्कन है। वह इसकाइलस की भांति एकमात्र विधाता और भाग्य पर ही निर्भर नहीं रहा। उसने मानव को शक्तिशाली और विकास की ओर अग्रसर होते हुए चित्रित किया।

साफोकलीज का अनुभव भी बड़ा व्यापक था। उसके समय में एथेंस उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँच गया था। उसने अपनी आँखों

बड़े से बड़े व्यक्ति का पतन देखा था। उसने मानव चरित्र का भली भाँति अध्ययन किया था और मनुष्य की अत्यन्त क्रूर और दूषित मनोवृत्तियों से भी वह अपरिचित नहीं था। उसके जीवन के पिछले पहर में स्वयं उसके जेष्ठ पुत्र ने न्यायालय में उसके विरुद्ध मुकदमा दायर किया था, जिसमें उसके ऊपर यह आरोपण था कि वह अपनी सम्पत्ति का दुरुपयोग कर रहा है और उसका मस्तिष्क विकृत है।

लगभग सौ वर्ष की अवस्था में लेखक ने अपनी पौत्री के कंधे पर हाथ रखे हुए न्यायालय में प्रवेश किया। न्यायालय के सम्मुख उसने अपनी नवीन रचना के कुछ अंश पढ़ कर सुनाये। इस पर एथेंस के जुरियों ने मत दिया कि भला एक विकृत मस्तिष्कवाला व्यक्ति भी कहीं ऐसी रचना प्रस्तुत कर सकता है। अन्त में मुकदमा खारिज कर दिया गया।

साफोकलीज का कथन था कि जब तक मनुष्य अपनी कब्र तक नहीं पहुँच जाता तब तक उसके भाग्य और जीवन के सम्बन्ध में कोई निश्चित मत नहीं दिया जा सकता। मनुष्य की परख उसके बाद ही होती है। यूनान के तीन महान नाटककारों में इसकाईलस और यूरिपिडीज को अन्तिम समय में एथेंस छोड़ कर जाना पड़ा था, किन्तु साफोकलीज अन्तिम समय तक जनता का प्रिय रहा। उसने स्वयं अपने सम्बन्ध में कहा था कि क्या ठीक है यह न जानते हुए भी मैंने उपयुक्त और उचित ही लिखा है। अपनी अटल धार्मिक भावनाओं के कारण भी उसके प्रति जनता की असीम श्रद्धा थी। इसमें संदेह नहीं कि वैभव और सम्मान से परिपूर्ण जीवन व्यतीतकर उसने मृत्यु का आलिङ्गन किया था।

साफोकलीज की समस्त रचनाओं में 'इडिपस' के कथानक पर लिखा हुआ नाटक सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसी कथानक पर इसकाईलस ने 'सेविन अगेन्स्ट थेवेस' नाटक की रचना की थी। एक ही कथानक पर लिखे हुए नाटक लेखकों की अपनी शैली और प्रतिभा का प्रमाण उपस्थित करते हैं। साफोकलीज ने इडिपस की कहानी को तीन भागों में विभाजित किया है—एन्टीगोन, किंसा इडिपस, इडिपस एट कोलोनुस। इन

तीनों नाटकों के कथानक का क्रम अवश्य मिला हुआ है, किन्तु लेखक ने इसे क्रमानुसार नहीं प्रस्तुत किया है। एन्टीगोन (४४२-४४१ ई०पू०) किंग इडिपस (४२६-४२० ई०पू०) इडिपस एट कोलोनूस (४०१ ई०पू०)-लेखक की मृत्यु के पश्चात-खेला गया :

इडिपस की कथा के आरम्भिक अंश से पाठक परिचित हैं। वह दैत्या की पहेली हल कर के थेबेस का राजा बनता है और जोकास्टा से विवाह कर लेता है।

१५ वर्ष समाप्त हुए। इडिपस के दो पुत्र और दो कन्याएँ उत्पन्न हुईं। लज्जा और लांछना की कहानी अबतक अविदित थी। देवताओं ने इडिपस के पाप के दंड-स्वरूप थेबेस में दुर्भिक्ष फैला दिया था। जनता ने राजासे आग्रह किया कि इस दुष्परिणाम का अनुसंधान करना आवश्यक है अतः देवता अपोलो से इसका स्पष्टीकरण करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिये।

यहीं से किंग इडिपस नाटक आरम्भ होता है। थेबेस का राज-महल है, नागरिक एकत्र होते हैं। इडिपस नागरिकों के सम्मुख प्रतिज्ञा करता है कि लेउस के हत्यारे को देश-निकाले की आज्ञा होगी और हत्यारे की सूचना देने वाले को पुरस्कार प्राप्त होगा। देववाणी सुनकर क्रीओन डेलफि (यूनानियों का पवित्र मन्दिर) से लौटता है और बूढ़ा पैगम्बर टेरेसियास भी इडिपस के सम्मुख आता है।

बूढ़ा पैगम्बर इडिपस को विदित करता है कि वह स्वयं अपने पिता का हत्यारा है। इडिपस को संदेह होता है और वह निश्चय करता है कि यह सब में क्रीओन का षडयंत्र है। जोकास्टा से बातें करते हुए सहसा इडिपस को स्मरण आता है। 'जहां तीनों रास्ते मिलते हैं' उस स्थान पर इडिपस का ध्यान जाता है। सब घटनाएं उसकी आंखों के सामने आ जाती हैं। अपनी पत्नी और माता से सब कहानी सुन लेने पर भी उसे भ्रम होता है। कोरिनिथ से दूत आता है और इडिपस को सब समाचारों के साथ अपना रहस्य भी प्रकट होता है। जोकास्टा इस

रहस्य को छिपा देना चाहती है, किन्तु असमर्थ हो कर वह चली जाती है ।

यूनानी दुःखान्त नाटकों के लिए यह सिद्धान्त था कि जनता के सम्मुख भयानक और क्रूर दृश्य न उपस्थित किये जाँय, इसलिए दूत द्वारा ही शेष दुर्भाग्य पूर्ण कहानी सुनाई जाती है ।

इडिपस क्रोध और आवेश में कमरे में प्रवेश करता है । वह तलवार से जोकास्टा की हत्या करना चाहता है, जो उसके दुर्भाग्य का कारण थी; किन्तु तत्काल उसकी दृष्टि पड़ती है, और वह देखता है कि उसकी पत्नी रूपी माता ने फाँसी लगा कर आत्म-हत्या कर डाली है । इडिपस ने उसके कपड़ों में लगे नोकदार आभूषण से उसी समय अपनी आँखें फोड़ डालीं । इन्हीं आँखों के कारण वह इस अधम पाप का भागी बना था । संसार की समस्त नदियाँ मिलकर भी इस पाप को धो नहीं सकतीं । वह जनता से प्रार्थना करता है कि पिता का हत्यारा होने के कारण उसे नगर से निकाल देने का दंड मिलना चाहिये, जिसमें किसी की भी दृष्टि उस पर न पड़े ।

क्रीत्रोन उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करता है । वह क्रीत्रोन से बिनती करता है कि तुम मेरी दोनों पुत्रियों-एन्टीगोन और इस्मीन-का ध्यान रखना । दोनों पुत्रियाँ आती हैं । इडिपस ममता में पड़ता है । वह क्रीत्रोन से कहता है कि मुझे यहां से कहीं दूर भेज दो ।

क्रीत्रोन कहता है—भगवान इसका निर्णय करेंगे ।

इडिपस—भगवान मेरे जैसे अधम के लिए कुछ नहीं करेंगे ।

क्रीत्रोन—तब तुम अपने इच्छानुसार कार्य करो ।

इडिपस—तुम्हारी सम्मति क्या है ?

क्रीत्रोन—मैं अपने ज्ञान से बाहर की बात नहीं कहूंगा ।

इडिपस सन्तुष्ट होकर कहता है—तब ले चलो ।

क्रीत्रोन—तब जाओ ।

इडिपस महल की ओर जाता है, उसके हाथ बच्चों के कन्धे पर हैं ।

‘लेकिन बच्चों को छोड़ दो’, क्रीत्रोन आज्ञा देता है ।

इडिपस नहीं। इनको मुझसे विलग न करो।

क्रीओन—अब आज्ञा मत दो, केवल पालन करो। तुम्हारा शासन समाप्त हो गया।

इडिपस जाता है।

इसके बाद कोरस से ध्वनि होती है, थेबेस की सन्तानों, देखो यह इडिपस है। सबसे बड़ा मनुष्य सबसे बड़े रहस्य की कुंजी बना था। उसकी उन्नति देखकर मनुष्य उससे ईर्ष्या करते थे। देखो, दुर्भाग्यों का कितना भीषण प्रहार उस पर हुआ। इससे यह शिक्षा लो कि सांसारिक मनुष्य सदैव अपने अन्त के लिए चिन्तित रहे। कोई भी तब तक सुखी नहीं कहा जा सकता जब तक कि वह शान्ति से प्रसन्नतापूर्वक कब तक न जाय।

मैं जब-तब विचार करता हूँ कि इतना दूषित कथानक यूनानी लेखकों ने अपने दर्शकों के सम्मुख क्यों रखा। किसी भी समाज में माता का सम्बन्ध पत्नी के रूप में कोई अपनी अन्धी आँखों से भी नहीं देखना चाहेगा। फिर यूनानियों ने इससे कौन सी शिक्षा का निष्कर्ष निकाला? जहाँ तक मैंने इस सम्बन्ध में अन्वेषण किया है उससे यही ज्ञात होता है कि आरम्भिक काल में जब मनुष्य को ज्ञान नहीं था और शिक्षा और सामाजिक नियमों का अंकुर नहीं जमा था उस समय मनुष्य केवल प्रकृति की कहानियों पर विश्वास करता था। प्रकृति की गति और विधि समझने के लिए मनुष्य अपने आप धारणा करता था कि माता-पिता के आलिंगन द्वारा कन्या उत्पन्न करती है। वही कन्या अपने समय में माता बनती है। जब वर्ष के बाद वर्ष आते हैं और जंगल और भूमि हरी होती है तब वही पिता की पत्नी का रूप ग्रहण करती है।

आरम्भ में जब मनुष्य में स्वयं आदर्श और ज्ञान का अभाव था तभी ऐसी कहानियों की उत्पत्ति हुई थी। बाद में धार्मिक भावनाएं, सामाजिक नियम और आदर्शमय जीवन की प्रणाली का विधान हुआ।

साफोकलीज ने अपने इस नाटक में कोरस द्वारा यह संकेत दिया है कि इसका सूत्र क्या पर्वतों पर शिकार करनेवाले बर्बर आरम्भिक मनुष्यों से मिला है ? इडिपस को जब अपना रहस्य प्रकट हो जाता है तब तलवार खींचते हुए वह कहता है—कहाँ है वह पत्नी ! मेरी पत्नी नहीं वह भूमि !! जहाँ मैं बोया गया था और कब मैंने अपनी फसल काटी ?

इडिपस एट कोलोनूस

इडिपस शान्ति से अपनी कन्या एन्टीगोन और इस्मीन के साथ रहता है। उसके दोनों पुत्र इटोक्लीज और पोलीनीसेज क्रीओन से आग्रह करते हैं कि तुम हमारे पिता इडिपस को थेबेस से बाहर निकाल दो। क्रीओन उनके स्थान पर शासन करता था। उसने इडिपस को दर-दर भटकने के लिए बाध्य किया। उन लोगों को आशंका थी कि कहीं इडिपस के कारण फिर देश पर कोई आपत्ति न आवे।

इडिपस अपनी कन्या एन्टीगोन के साथ कई महीनों के बाद कोलोनूस नाम के ग्राम में पहुँचता है। यह स्थान एथेंस से उत्तर की ओर एक मील दूर है। साफोकलीज का यह जन्म-स्थान है। यहीं से नाटक आरम्भ होता है।

फटे पुराने चीथड़ों से ढके हुए इडिपस को देखकर कोलोनूस के नागरिक उसकी कहानी सुनते हैं। अन्त में भयभीत होकर वे लोग वह स्थान तत्काल छोड़ने के लिए उससे कहते हैं। इडिपस उनके राजा थीसियूस से शरण देने के लिए बिनती करता है। थीसियूस उसकी रक्षा का वचन देता है। सहसा घोड़े पर सवार एक स्त्री दिखाई पड़ती है। एन्टीगोन पहचान लेती है कि यह उसकी बहिन है। वह थेबेस से समाचार लेकर आती है। पिता का अभिशाप पुत्रों पर घटित होता है। थेबेस के राज-पद के लिए दोनों भाइयों में झगड़ा बढ़ता है। इटोक्लीज ने अपने भाई पोलीनीसेज को निर्वासित कर दिया था। देववाणी के अनुसार इडिपस का जीवित या मृतक

शरीर ही युद्ध का निर्यात करेगा। क्रीत्रोन उसे थेबेस ले जाने के लिए आ रहा है। इस्मीन द्वारा सभी बातें इडिपस को ज्ञात हुईं। इडिपस अपने पुत्रों के स्वार्थ और क्रूरता से अत्यन्त दुःखी था। वह अनुभव करता था कि उन्हीं लोगों के कारण आज वह पथ का भिखारी बन कर घोर यंत्रणा उठा रहा है। वह थेबेस कदापि नहीं जायगा। क्रीत्रोन सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग करता है। इडिपस की पुत्रियों को बन्दी बना लेता है। राजा थीसियूस उन्हें मुक्त करता है। वह क्रीत्रोन को स्पष्ट उत्तर देता है कि किसी तरह भी मैं अपने आश्रित इडिपस के ऊपर बल का प्रयोग नहीं करने दूंगा। क्रीत्रोन विवश होकर चला जाता है।

राजा थीसियूस इडिपस को सूचित करता है कि उससे भेंट करने के लिए एक व्यक्ति आया है। इडिपस जानता है कि वह उसके पुत्र पोलीनीसेज के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं। वह उसका सामना नहीं करना चाहता, किन्तु थीसियूस और एन्टीगोन के आग्रह पर वह उससे बातें करता है। पुत्र अश्रुपात करते हुए क्षमा चाहता है और पिता से सहयोग की प्रार्थना करता है।

पोलीनीसेज पिता से सब बातें बतलाता है कि कैसे वह अपने छोटे भाई द्वारा राज्य के लिए निर्वासित हुआ। फिर आरगोस जाकर वहाँ के राजा की लड़की से उसने विवाह किया। आरगोस में सेनापति और सैनिकों का उसने संगठन किया। सेना थेबेस के लिए प्रस्थान कर चुकी है। वह केवल पिता से आशीर्वाद चाहता है। भाई से युद्ध करने वह थेबेस जायगा।

क्रुद्ध होकर पिता उत्तर देता है कि उसके कारण ही उसकी यह दुर्दशा हुई। उसका अभिशाप है कि दोनों भाई एक दूसरे के हाथ से मारे जायेंगे।

एन्टीगोन अपने भाई को बहुत समझाती है कि तुम मातृभूमि का सर्वनाश न करो और युद्ध का विचार बदल दो। किन्तु वह किसी तरह भी मानता नहीं। वह युद्ध में ही अपने जीवन का अन्त करेगा। वह अपनी बहनों से प्रार्थना करता है कि पिता और देववाणी के

अनुसार अगर उसका अन्त वैसा ही हो तो वे उचित रीति से उसके शव का संस्कार कर दें। वह चला जाता है।

तूफान उठता है। इडिपस को अपने अन्तिम समय की सूचना मिलती है। वह राजा थीसियूस को अपने निकट चाहता है। अन्धकार छा जाता है। थीसियूस आता है। इडिपस कुछ रहस्य की बातें उसे बतलाता है और कहता है कि उस गुप्त बात को वह केवल अपने अन्तिम समय में उसके उत्तराधिकारी के सम्मुख प्रकट करेगा और इसी भांति उसका उत्तराधिकारी अपने अन्तिम समय में अपने उत्तराधिकारी से कहेगा। इस प्रकार उनका देश सुरक्षित रहेगा। वह थीसियूस के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ था। उसने ही उसकी रक्षा की थी और आश्रय दिया था।

इडिपस का अन्त बड़ा रहस्यपूर्ण होता है। वह अपनी कन्याओं को आशीर्वाद देते हुए उसने विलग होकर एक स्थान की ओर जाता है। उसके साथ केवल थीसियूस के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि इडिपस की जीवन-यात्रा कैसे समाप्त हुई। अन्त समय में उसे कोई वेदना और यंत्रणा का अनुभव नहीं हुआ और बड़ी शान्ति से उसका आत्मा विलीन हो गया।

इडिपस की जीवन-कहानी का अन्त होने पर उसकी दोनों पुत्रियाँ थेबेस चली जाती हैं।

एन्टीगोन

थेबेस का राज महल है। एन्टीगोन और इस्मीन दोनों बहिन आपस में बातें करती हैं। थेबेस में युद्ध समाप्त होता है। सेना हट जाती है। दोनों भाई लड़ते हुए एक दूसरे के हाथ मारे जाते हैं। क्रीओन ने आज्ञा दी थी कि इटोक्लीज का राज-सम्मान सहित शव संस्कार हो और देशद्रोही पोलोनीसेज के शव का संस्कार न हो, और वह कुत्तों और चिड़ियों के लिए छोड़ दिया जाय।

एन्टीगोन, इसमीन से पूछती है क्या तुम अपने भाई के शव की उचित क्रिया में मेरा साथ दोगी ?

इसमीन कहती है कि हमारे परिवार का भीषण अन्त हुआ है । अब कानून की अवज्ञा करने पर हमारी भी भयानक दुर्दशा होगी । इसलिए मैं इसे पागलपन समझती हूँ ।

एन्टीगोन अकेले ही छिपकर अपने भाई के शव पर मिट्टी डालकर दफन जाती है । सैनिकों की आँखें बचाकर वह अपना कृत्य कर डालती है । जब सैनिक देखते हैं कि किसी ने शव का संस्कार किया है तब भयभीत होकर वे आपस में कहते हैं कि इसकी सूचना राजा क्रीओन को कैसे दी जाय । अन्त में एक सैनिक क्रीओन को सूचित करता है । क्रीओन क्रुद्ध होकर उसे खूब फटकारता है और कहता है कि जैसे भी हो अपराधी का पता लगाना होगा । मिट्टी में गड़ा हुआ शव फिर बाहर निकाल कर फेंक दिया जाता है । एन्टीगोन अत्यन्त दुःखित होकर अश्रुपात करती है । वह सम्पूर्ण साहस के साथ फिर शव को मिट्टी से ढकती है ; इस बार वह पकड़ ली जाती है ।

एन्टीगोन सैनिकों द्वारा क्रीओन के सम्मुख लाई जाती है । वह क्रीओन से कहती है कि मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया है । भले ही तुम्हारे कानून से यह अपराध हो, लेकिन मृत्यु से अधिक दण्ड मुझे क्या दोगे ?

क्रीओन का पुत्र हेमन एन्टीगोन को मुक्त कराने का प्रयत्न करता है । वह एन्टीगोन से प्रेम करता था और उससे उसका विवाह होने वाला था । वह अपने पिता से अनेक तर्क करता है । जनता भी एन्टीगोन के पक्ष में है । हेमन आदि बहुत-सी बातें समझाते हैं, लेकिन क्रीओन अपने निश्चय पर अटल रहता है । 'जीते जी कब्र में ईंटों से चुन दी जाय', यही एन्टीगोन के लिये उसका निर्णय था ।

अन्धा पैगम्बर टेरेसियास भी क्रीओन को अपशकुन और दैवी वाणी की सूचना देता है । वह दुष्परिणाम से उसे सचेत करता है । न मानने

पर उसका सर्वनाश होगा यह कहने पर भी क्रीओन अपनी आज्ञा पर दृढ़ रहता है।

एन्टीगोन एक गुफा में चुन दी जाती है। वहाँ वह फाँसी लगा कर मर जाती है। हेमन वहाँ पहुँचता है। यह दृश्य देखकर उसका हृदय विदीर्ण हो उठता है। कोरस से क्रीओन को सूचना मिलती है कि एन्टीगोन को मुक्त कर दो और मृतक का शव संस्कार कर दो, अन्यथा बूढ़े पैगम्बर की भविष्यवाणी भूठी नहीं होगी।

क्रीओन उस स्थान पर जाता है। एन्टीगोन लटक रही थी। हेमन मौन खड़ा था, क्रीओन को देखते ही उसने अपनी तलवार निकाली क्रीओन भयभीत होकर पीछे हटा। उसने बड़े कारुणिक शब्दों में अपने पिता को बतलाया कि इन दुर्घटनाओं के कारण आप ही हैं। अन्त में अपनी तलवार से हेमन ने अपना अन्त किया।

दूत द्वारा यह समाचार सुनकर क्रीओन की पत्नी ने भी आत्म-हत्या कर ली। अभिमान और बुद्धिहीनता के कारण क्रीओन ने अपना और अपने परिवार का सर्वनाश किया। वह पश्चात्ताप करता है।

एन्टीगोन नाटक में लेखक यह स्पष्ट करता है कि देवता नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य अपने गर्व में किसी की कोई बात कुछ न सुनकर अपने ही पतन का कारण बनता है। कोरस द्वारा एक स्थान पर लेखक मनुष्य की अद्भुत शक्ति पर प्रकाश डालता है। वह कहता है—संसार में जितने भी आश्चर्य हैं उनमें सबसे बड़ा मानव ही है। लेखक ने मानव की समस्त विभूतियों और पराक्रमों का वर्णन किया है।

साफोकलीज़ के इन तीन नाटकों में सचमुच यूनानी नाट्य-कला का सम्पूर्ण रहस्य छिपा हुआ है। यूनानी दर्शन का मुख्य लक्ष्य अस्तित्व में न आना ही सर्वोपरि है, किन्तु शीघ्र से शीघ्र विलीन होना ही एक मात्र सुख है। लेखक ने बड़ी कुशलता से इन सूत्रों की व्याख्या की है।

स्पेन के प्रसिद्ध उपन्यासकार सर्वेन्टिस ने लिखा है कि 'इडिपस शब्द में ही फोनिक्स की पहेली का वास्तविक उत्तर अन्तर्निहित है।' क्योंकि स्वयं उसने अपने जीवन में मानव की तीनों अवस्थाओं को पूर्ण

किया है। प्रथम असहायावस्था में घुटनों के बल दोनों हाथों का सहारा ले कर चार पैर से, फिर जीवन के मध्याह्न में दो पैरों से खड़ा हो पहेली हल करता है और अपनी स्वाभाविक शक्ति के अनुसार राज्य और पत्नी प्राप्त करता है। अन्तिम अवस्था में अपनी कन्या एन्टीगोन द्वारा सहायता प्राप्त कर तीसरे पैर से कब्र की ओर जाता है।

यूरिपिडीज

यूरिपिडीज योरोप का पहला लेखक है, जिसने यथार्थवादी स्वरूप को साहित्य में उपस्थित किया। उसने मानव की भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियों का वास्तविक चित्रण बड़ी कुशलता से किया है। देवताओं के अभिशाप और क्रोध के कारण मनुष्य भयानक आपत्तियों में उलभ कर अपना सर्वनाश करता है, यह विचार उसे रुचिकर नहीं प्रतीत हुआ। उसने मानव की अग्रणीत पहेलियों को ही अपनी लेखनी का विषय बनाया। युग बदल रहा था। युद्ध के विध्वंस के पश्चात नव-निर्माण और नवीन भावनाओं का उदय हो रहा था। एथेंस की जनता विचार-स्वातन्त्र्य की पक्षपाती थी। सुकरात जैसे दार्शनिक जन-पथ पर खड़े होकर युवकों को नव-जीवन का संदेश दे रहे थे। यूरिपिडीज सुकरात का मित्र था।

इसकाइलस का युग समाप्त हो गया था। यूरिपिडीज ४५ वर्ष इसकाइलस से और १५ वर्ष साफोक्लीज से छोटा था। देवताओं और भगवान के अस्तित्व में कुछ लोगों को सन्देह होने लगा था। यूरिपिडीज भी शंकाओं से परिपूर्ण था। उसने अपने नगर का विकास बचपन से देखा था। उसके बाल्यकाल में एथेंस उतना शक्तिशाली नहीं था। लेकिन २६ वर्ष की अवस्था में यूरिपिडीज का प्रथम नाटक जब जनता के सम्मुख आया, उस समय एथेंस यूनानी राष्ट्रों का प्रधान माना जाता था।

एथेंस के लोक राज्य में उच्च वंशीय आगे से ही एक हो गये थे। गुलाम और निम्न श्रेणी के लोगों के प्रति उनकी घृणा और तिरस्कार की भावना सदैव रहती थी। पाश्चात्य लेखकों में बड़ा विवाद हुआ था कि क्या यूरिपिडीज की माता तरकारी बेचने वाली थी। कुछ विद्वानों ने इसे स्वीकार किया है कि हो सकता है कि उसकी माँ के बगीचे में उत्पन्न तरकारी बाजार में बिकती रही हो। यह सब उसके समकालीन लेखकों का व्यंग्य और कटाक्ष कोई महत्त्व नहीं रखता। वास्तव में यूरिपिडीज का पिता धनी था और उसने अपने पुत्र की शिक्षा में पर्याप्त धन व्यय किया था, इसके अनेकों प्रमाण मिलते हैं।

यूरिपिडीज को आरम्भ में व्यायाम में दक्ष किया गया, किन्तु उसकी रुचि चित्र-कला की ओर थी। उसे उस युग के एक महान शिक्षक द्वारा दर्शन की शिक्षा प्राप्त हुई थी। २६ वर्ष की अवस्था में नाट्य-प्रतियोगिता में उसे तृतीय पुरस्कार मिला था, किन्तु ४० वर्ष की अवस्था में उसे प्रथम पुरस्कार मिला।

यूरिपिडीज को केवल पाँच प्रथम पुरस्कार मिले, जिनमें एक उसकी मृत्यु के पश्चात् दिया गया था। इससे यह विदित होता है कि अपने जीवन में वह उतना सफल नहीं हुआ। इसका एक कारण यह भी था कि यूरिपिडीज विद्रोही विचारों का लेखक था। उसने इसकाइलस के आदर्शवाद का विरोध किया। युद्ध और वीरता की शिक्षा देने वाले कवि और नाटककारों के कारण देश का पतन हो गया था। जनता दरिद्रता के कारण भयानक संकट काल का समय व्यतीत कर रही थी। ऐसे समय में यूरिपिडीज ने एक नवीन सन्देश दिया जिसमें मानव के प्रति सहानुभूति थी।

यूरिपिडीज ने कल्पित आदर्श के स्थान पर मनुष्य के वास्तविक जीवन का चित्रण करना ही उपयुक्त समझा। प्राचीन कथानक को मनुष्य जीवन के वास्तविक वातावरण के अनुकूल बनाने में उसने अपनी विलक्षण प्रतिभा का उपयोग किया था। नाटकों को प्रति-

योगिता के लिए प्राचीन धार्मिक कथानक के आधार पर ही प्रस्तुत करना आवश्यक था, किन्तु यूरिपिडीज ने प्राचीनता के आवरण में मानव जीवन का वास्तविक स्वरूप चित्रित किया। स्त्री-पुरुष दोनों के चरित्र-चित्रण में उसने अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। गुलामों के प्रति भी लेखक की सहानुभूति थी।

यूरिपिडीज ने कभी लोकराज्य में किसी सेनापति अथवा जुरी का कार्य नहीं किया। वह समाज से दूर रहकर समुद्र तट पर एक गुफा में निवास करता था, वहीं एकान्त में वह अपने नाटकों की रचना करता था। बहुधा उसके नाटक देखते समय कुछ अंशों पर दर्शकों ने विरोध किया। एक बार सुकरात ने भी एक स्थान पर कुछ परिवर्तन करने के लिए आदेश दिया था। एक बार नाटक समाप्त होने पर रंगमंच पर खड़े होकर उसने कहा—सज्जनों ! यह मेरा कार्य है कि मैं आपको शिक्षित करूँ न कि आप मुझे सिखलायें।

यूरिपिडीज बड़ा अध्ययनशील लेखक था। उसके पास अपना निजी पुस्तकालय था। उस युग में पुस्तकें यूनानी चमड़े और पाईपरस (एक प्रकार के पेड़ की छाल के बने कागज) पर लिखी जाती थीं। ऐसी स्थिति में एक-एक पुस्तक पर पर्याप्त व्यय होता था। लेखक का पारिवारिक जीवन भी सुखी नहीं था। अपनी दोनों पत्नियों से उसे कटु-अनुभव हुआ था। जनता में भी विरोधियों की संख्या बढ़ रही थी। अतएव एथेंस में सबका साथ छोड़कर वह साइराक्स चला गया और शेष जीवन उसका वहीं व्यतीत हुआ।

यूरिपिडीज की रचनाओं में दार्शनिक-तत्त्वों की विवेचना स्पष्ट रूप से अंकित है। सुकरात का उस पर विशेष प्रभाव था और वह उसका अन्तरंग मित्र था। सुकरात बड़ी उत्सुकता से उसका नाटक देखने जाता था।

यूरिपिडीज का देहान्त ७६ वर्ष की अवस्था में हुआ। उसने अपने जीवन में ६२ नाटक लिखे, जिनमें १८ अब तक प्राप्त हैं। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि मानव चरित्र जैसा है वैसा ही वह

चित्रित करता था; उसे कैसा होना चाहिये इस पर वह ध्यान नहीं देता था।

एरिस्टोफिनीज़

ई० पू० ४८६ वर्ष में एथेंस में सरकारी रूप से सुखान्त नाटकों को मान्यता दी गई और लीनियन एवं डाइनिसिया नाटक प्रतियोगिता के अवसर पर सुखान्त नाटकों के लिए भी मार्ग खुल गया। इसके पहले सुखान्त नाटक उक्त अवसरों पर स्वीकृत नहीं किये जाते थे। इस समय तक एरिस्टोफिनीज़ की अवस्था तीस वर्ष की हो चुकी थी।

सुखान्त नाटक आरम्भ करने का महत्व तो थेसपिस को दिया जाता है जिसने ई० पू० छठी शताब्दी के मध्य में इसका सूत्रपात किया था। थेसपिस अभिनेता था। वह बाक्स के त्यौहार पर बड़े उत्साह से उसमें सम्मिलित होता था। इसकाइलस की भांति उसने भी नृत्य और गान के साथ कोरस द्वारा सुखान्त सम्भाषणों की सृष्टि की थी। किन्तु कामेडी का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करने का एकमात्र श्रेय एरिस्टोफिनीज़ को ही दिया जाता है।

एरिस्टोफिनीज़ के जीवन का वृत्तान्त कुछ ज्ञात नहीं होता। किन्तु उसकी रचनाओं में उसका अपना व्यक्तित्व और विचार ही नहीं प्रकट होता बल्कि उस युग का सम्पूर्ण चित्र और इतिहास अंकित है। एथेंस के उस उत्कर्ष काल के इतिहास में भी उतना सजीव चित्रण नहीं है जितना एरिस्टोफिनीज़ के हास्य और व्यंग्य नाटकों में उस समय का वास्तविक चित्र आंखों के सम्मुख आ जाता है। यह सत्य है कि एरिस्टोफिनीज़ के नाटकों का अध्ययन करने पर एथेंस निवासियों के राजनैतिक विचार, उनका रहन-सहन, सामाजिक नियम, न्याय, तर्क और धार्मिक मनोवृत्तियों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है।

ईसा पूर्व शताब्दियों में पुस्तकों द्वारा अनुभव प्राप्त करना कठिन था। अतएव यूनानी जनता को नाटकों द्वारा ही जीवन का सम्पूर्ण

रहस्य विदित होता था। गणतन्त्र होने के कारण प्रत्येक नागरिक अपने विचार और दृष्टिकोण पर महत्व रखता था। एक साधारण सी त्रुटि पर तत्काल ही उसकी दृष्टि पड़ती और उसका विरोध तीव्र हो उठता था। विचार स्वातंत्र्य के कारण एक साधारण नागरिक भी अपने देश के बड़े से बड़े अधिकारी की आलोचना कर सकता था।

एरिस्टोफिनीज के नाटक पढ़ कर पता चलता है कि हमारे बीसवीं सदी के साधारण नागरिक भी सम्भवतः उस व्यंग्य और हास्य को न समझ पायेंगे जो उस समय एथेंस की जनता समझती थी। इसकाइलस, साफोक्लीज और यूरिपिडीज के नाटकों के प्रत्येक दृश्य और चरित्र का जनता को ज्ञान होता था। किसी भी अस्वाभाविक चित्रण और धर्म-विरोधी भावना का जनता खुल कर विरोध करती थी। लेखक को सर्व प्रथम उसकी रुचि की ओर ध्यान रखना पड़ता था।

सुखान्त नाटककार की लेखनी बड़ी स्वतंत्र थी। वह बड़े से बड़े नेता और सेनापति का चरित्र जनता के सम्मुख रखता था, उनकी किसी स्वार्थ और पक्षपात पूर्ण मनोवृत्ति पर खुल कर व्यंग्य करता था। वे पात्र दर्शकों के चिरपरिचित होते अतएव वे भी बड़ी उत्सुकता से उसका आनन्द लेते थे। बीसवीं सदी में जो विचार स्वातंत्र्य समाचार पत्रों को प्राप्त है, वह उस युग में कामेडी द्वारा सिद्ध होता था।

एरिस्टोफिनीज बड़ा निर्भीक नाटककार था। उसकी लेखनी सदैव विशिष्ट व्यक्तित्व पर ही आक्रमण करती थी। सुकरात, यूरिपिडीज, क्लीओन, आल्किविडास, डेमेस्थनीज, इत्यादि जैसे सम्मानित व्यक्ति ही उसके पात्र होते थे। एक बार क्लीओन का पार्ट करने के लिए कोई अभिनेता भय के कारण रंग-मंच पर नहीं जाना चाहता था। अन्त में स्वयं एरिस्टोफिनीज ने उसका पार्ट निर्भीक होकर किया। क्लीओन गणतंत्र का प्रधान था।

एरिस्टोफिनीज ने ३७ वर्ष तक निरन्तर रंग-मंच के लिए सुखान्त नाटकों की रचना की। उसके लिखे चालीस नाटकों में अब केवल

ग्यारह ही उपलब्ध हैं। लेखक की आर्थिक अवस्था भी चिन्ताजनक थी। उसकी लेखनी पर ही उसकी जीविका निर्भर करती थी। एथेंस की अवनति के दिनों में उसकी आय बहुत अल्प थी और एथेंस के बाहर उसकी जो सम्पत्ति थी वह भी पेलोपोनीशियन युद्ध के कारण लाभ रहित हो चुकी थी। उसने अपने सम्बन्ध में अपने नाटकों में लिखा है कि जनता की क्षणिक बुद्धि के कारण दरिद्रावस्था में ही उसके जीवन का अन्त होगा।

एरिस्टोफिनीज़ की कामेडी इतनी रुचिकर है कि पाठक अवश्य ही उसे पढ़ कर खिलखिला उठेंगे। उसकी समस्त रचनाओं में क्लाउडस् और नाइट्स 'मास्टरपीस' समझी जाती है। क्लाउडस् को वह स्वयं अपनी कृतियों में सर्वश्रेष्ठ समझता था।

कुछ विद्वानों का मत है कि 'क्लाउडस्' के कारण ही सुकरात को मृत्यु दंड मिला था। वास्तव में यह भ्रम है क्योंकि इस नाटक के प्रदर्शन के ३० वर्ष पश्चात् सुकरात को अपने जीवन का अन्त करना पड़ा था। इसके अतिरिक्त सब से बड़ा प्रमाण तो यह है कि प्रथम बार 'क्लाउडस्' का अभिनय समाप्त होने पर स्वयं सुकरात ने रंगमंच पर प्रकट होकर उन अपरिचित दर्शकों को अपने ऊपर किये गये व्यंग को समझने का अवसर दिया था। उस समय सुकरात प्रसन्न मुख था और उसने स्वयं अपने ऊपर किये गये व्यंगों का आनन्द अनुभव किया था।

'क्लाउडस्' में सुकरात को माध्यम बनाकर नाटककार ने एथेंस निवासियों की अवनत मनोवृत्तियों का चित्रण किया है। इसमें सन्देह नहीं कि यह गम्भीर हास्य केवल शिक्षित व्यक्तियों के मनोनुकूल था फिर भी एथेंस की जनता हमारे यहाँ की जनता से बहुत आगे बढ़ी हुई थी।

देखिये कितना परिष्कृत हास्य है। स्ट्रेपिसियाडस नाम का वृद्ध ऋण में उलझा हुआ है। चिन्ता के कारण रात में उसे नींद नहीं आती। उसके पुत्र ने बहुत अपव्यय किया था, घोड़ों से उसे विशेष

देलचस्पी थी (इस पात्र द्वारा अक्लिवियाडेस पर व्यंग किया गया था क्योंकि वह रथ की दौड़ का विशेष प्रेमी था) ।

स्ट्रेपिसियाडस को ज्ञात हुआ था कि नगर में एक ऐसा शिन्धालय खुला है, जिसमें मुकदमा जीतने की कला सिखलाई जाती है । इसी उद्देश्य से वह सुकरात के यहां पहुँचता है और वह सुकरात से कहता है कि मैं केवल उन्हीं तर्कों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ जिनके बल पर मैं अपने ऋणदाताओं से, बिना कुछ दिये ही मुक्त हो जाऊँ ।

अनेक प्रश्नों द्वारा सुकरात को यह पता चल गया कि आगन्तुक दुष्ट मनोवृत्ति का है । सुकरात ने कहा कि तुम्हारे लिए मेरी 'ज्ञान की दूकान' में कोई सामग्री नहीं है ।

आगन्तुक ने यह भी देखा कि एक बड़ी लटकती हुई टोकरी में सुकरात बैठा हुआ था । उसने आश्चर्य से पूछा तुम इस तरह जमीन पर ऊपर क्यों लटके रहते हो ? इसका रहस्य उसे प्रकट होता है कि भूमि के आकर्षण से दूर वह आकाश में अपनी प्रतिभा का विकास करता है । बादलों का रहस्य जिह्वा और आकाश द्वारा खुलता है और यही दोनों उसके आराध्य देव हैं ।

वृद्ध नागरिक अपने को उस वातावरण के उपयुक्त न देखकर अपने पुत्र को वहां अध्ययन के लिए भेजता है । वहां शिक्षा समाप्त कर पुत्र जब अपने पिता से तर्क करने लगता है कि जिस तरह बाल्यकाल में सुधार करने के लिए बच्चे पीटे जाते हैं, उसी तरह वृद्ध को भी पीटना आवश्यक है तब वृद्ध समझता है कि पुत्र का मष्तिष्क दूषित हो गया है । वह क्रोध में जाकर सुकरात के घर में आग लगा देता है । कथानक तो केवल इतना ही है, किन्तु लेखक ने जिस कुशलता से घटना क्रम और अपने विचारों को स्पष्ट किया है वह अपूर्व है ।

पेरेक्लीज़ की मृत्यु के पश्चात् एथेंस के गणतन्त्र की व्यवस्था कुछ नीच वंश के लोगों के हाथों में थी । कोई भी ज़ुटि, अन्याय, भ्रष्टाचार अथवा दूषित मनोवृत्ति एरिस्टोफिनीज़ की दृष्टि से छिपी नहीं रही । उसने अपने नाटकों में सत्तका विरोध और बड़ा कट व्यंग्य किया है ।

जैसे क्लीओन के चमड़े से सैनिकों का जूता बनेगा। क्लीओन का पिता मोची था। लेखक के तीव्र कटाक्ष के कारण क्लीओन ने उस पर मुकदमा भी चलाया था, किन्तु वह असफल रहा। एरिस्टोफिनीज़ की लेखनी का प्रभाव इतना था कि 'नाइट्स' पर उसे नाट्य प्रति-योगिता में प्रथम पुरस्कार मिला और इसके बाद क्लीओन निर्वाचन में पराजित हो गया।

'नाइट्स' के कथानक में यह व्यक्त किया गया है कि छोटी श्रेणी के लोग जैसे मिठाई बेचने वाले, मोची आदि किस तरह जनता के प्रतिनिधि बनते हैं और घूस और चापलूसी के वातावरण में ही उनका कार्यक्रम चलता है। निर्वाचन के प्रतिनिधियों का प्रतिद्वन्द्व अत्यन्त स्वाभाविक रूप में चित्रित किया गया है।

एरिस्टोफिनीज़ ने यूरिपिडीज़ के नाटकों पर जो व्यंग्य किया है, वह अत्यन्त हास्यपूर्ण है। एक स्थान पर तो व्यक्तिगत कटाक्ष उसकी माँ के तरकारी बेचने पर किया गया है। आलोचक वर्टनरसको ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि एरिस्टोफिनीज़ ने व्यक्तिगत द्वेष के कारण यूरिपिडीज़ के ऊपर आक्रमण नहीं किया है। वास्तव में उन दोनों में मित्रता थी। यूरिपिडीज़ के ३३ नाटकों में से उसने 'पैरोडी' किया है। उसने उसके नाटकों का पूर्ण अध्ययन किया था।

एरिस्टोफिनीज़ की महत्ता इसीसे प्रकट होती है कि वह कभी निर्बल के ऊपर आक्रमण नहीं करता था। वह केवल सम्पन्न और विशिष्ट व्यक्तियों को ही अपना लक्ष्य बनाता था। उसने क्लीओन और युद्ध से लाभ उठाने वाले व्यक्तियों का घोर विरोध किया है। उसने स्वयं लिखा है—मैं क्लीओन पर प्रत्यक्ष रूप से तब आक्रमण करता था जब वह शक्ति-शाली था; अब वह पराजित हो गया है अतः उसे ठुकराने की मेरी कोई प्रवृत्ति नहीं है।

२६ वर्ष पेलोपोनीशियन युद्ध चलने के कारण एथेंस की जनता व्रस्त थी और दरिद्रता में उलझी पड़ी थी। सर्वत्र अशान्ति का राज्य था। जनता भूखी और निर्धन होकर एथेंस की दीवारों के निकट पड़ी

दिन काट रही थी। युद्ध से सब ऊब उठे थे। ऐसे समय में एरिस्टोफिनीज ने युद्ध का विरोध करने के लिए तीन नाटकों की रचना की—दि अचारनियन, दि पोस और लोसिसराटा। इन नाटकों को पढ़ने पर ज्ञात होता है कि वास्तव में अपने व्यवसाय के हेतु स्वार्थी मनुष्य युद्ध की सृष्टि करता है, किन्तु उसके कारण जनता को कितनी भयानक आपत्तियों का सामना करना पड़ता है। आज भी एटम और हाइड्रोजन बम के युग में एरिस्टोफिनीज के नाटक कितना महत्व रखते हैं, यह उनका अध्ययन करने पर ही ज्ञात हो सकता है।

यूनानी दर्शन

यूनानी दार्शनिकों में थेलीज को सर्व प्रथम गिना जाता है। उसका जन्म ई० पू० ६४० में हुआ था और ६० वर्ष की अवस्था तक वह जीवित रहा। थेलीज के पूर्व के दार्शनिकों की नामावली अज्ञात है। अरस्तू ने थेलीज को उन व्यक्तियों में सर्व प्रथम दार्शनिक माना है जिन लोगों ने जल, वायु और अग्नि से वस्तुओं का आरम्भ स्वीकार किया है। उसने एक नदी की धारा परिवर्तित कर एक ऊँचे मार्ग का निर्माण किया था। उसने सूर्य ग्रहण के पूर्व उसकी निश्चित तिथि की घोषणा की थी। ऋतुओं के क्रम पंचांग की रचना में उसका ज्ञान अद्भुत था। बिजली के सम्बन्ध में भी उसने कुछ अनुसन्धान किया था। उसका अन्वेषण था कि आरम्भ में समुद्र के किनारे पृथ्वी प्रकट हुई और इसी जल द्वारा ही पृथ्वी हरी-भरी हुई। जलसे ही उसकी उत्पत्ति हुई और जल में ही वह विलीन हो जायगी। सूर्य की प्रखर ज्वाला में जब वह पूर्ण रूप से तप जायगी तब ज्वालामुखी और भूकम्प के पश्चात् जल-प्लावन होकर फिर वह अपने नवीन रूप में प्रकट होगी।

ज्यामिति के आधार पर थेलीज ने समुद्र में जहाजों की दूरी और पिरामिड की छाया से उनकी उँचाई का माप किया था। वास्तविक

दार्शनिकों की भांति थेलीज भी अस्त-व्यस्त मस्तिष्क का व्यक्ति था। एक बार विचार मग्न हो कर वह आकाश की ओर देखता हुआ मार्ग में एक गढ़े में जा गिरा; इस पर एक ग्वालिन ने हँस कर व्यंग किया था।

उसकी कब्र पर ये शब्द अंकित हैं—आप देखते हैं कि यह एक छोटी सी कब्र है लेकिन स्मरण रखिए की थेलीज की कीर्ति आकाश तक पहुँच जाती है।

यूनानी दर्शन में थेलीज का विशेष महत्व इसलिए भी है कि यूनानियों ने दो बातों पर विशेष ध्यान दिया—एक प्रकृति की प्रेरणा और दूसरे मानव की महत्ता। थेलीज के पश्चात् प्रकृति के अन्वेषण में अनेक विद्वानों ने भाग लिया। उनका विश्वास था कि पृथ्वी की रचना भगवान की देन नहीं है, किन्तु यदि भगवान रहे भी होंगे तो अवश्य इसके अन्धकारपूर्ण और रहस्यमय क्षेत्र में उन्होंने आनन्द का अनुभव किया होगा।

एनेक्सिमैन्डर (६११-५४७ ई०पू०) थेलीज का शिष्य था। इसका सिद्धान्त था कि सब से पहले एक अपरिच्छिन्न द्रव्य था जिससे संसार की उत्पत्ति हुई और उसी में संसार लीन भी होता है। यह अनश्वर है, इसकी गति भी शाश्वत है। इसकी गति से ही सब कुछ उत्पन्न हुआ है।

एनाक्सिमेनीज (मृत्यु ५०० ई० पू०) के मत से वायु प्रथम द्रव्य है। वायु में घनीभाव और शैथिल्य दो गुण हैं। घनीभाव शीतलता से और शैथिल्य उष्णता से होता है। वायु इस शरीर का संचालन करती है; उसी प्रकार वायु सारे संसार को साधे हुए है।

यह जगत् किससे बना है? आरम्भ में यूनान के इन तीन दार्शनिकों के विचार का विषय यही रहा। ई० पू० ४६४ में नगर के विनाश के साथ इन विचारों का भी लोप हुआ, किन्तु बाद के दर्शन की इमारत के लिए उक्त दार्शनिकों की विचारसारणि ही आधार स्वरूप रहा।

उक्त दर्शन के ठीक विपरीत पश्चिम का दर्शन था जिसे ई० पू० ५३० में पिथागोरस ने जन्म दिया था। इसने ज्योतिष और गणित के क्षेत्र में अच्छा काम किया था। इसके मतानुसार संसार की सब वस्तुएं संख्या के अनुकूल बनी हैं और संख्या ही वस्तुओं का सार है। उसका कहना था कि सब गुणों का नाश हो जाने पर भी संख्या बनी रहती है, इसलिए संख्या ही मुख्य है।

अनाक्सिमेनीज के बाद की पीढ़ी में यूनानी विचार पद्धति में एक सर्वथा भिन्न दिशा दिखाई पड़ी। जेनोफोन (लगभग ५०० ई० पू०) एक प्रकार का सर्वेश्वरवादी था। उसके मत से ईश्वर ही संसार का मूल तत्व और संसार भी है। ईश्वर कोई पृथक् शुद्धात्मा नहीं है, वह चेतनाव्याप्त प्रकृति है। प्राचीन यूनानी प्रकृति और पुरुष को अलग-अलग नहीं मानते थे। वे प्रकृति को चेतनामय मानने थे।

हेराक्लीटस (लगभग ५००-४४० ई० पू०) का मत था कि सभी वस्तुएं चल हैं, स्थिर कुछ नहीं है। विश्व के परिवर्तन की दो दिशाएं हैं—ऊपर की ओर और नीचे की ओर; इस परिवर्तन में एक नियम है। देव प्रत्येक कारण का निश्चय करता है, न्याय प्रत्येक कुकर्म का फल देता है।

इस प्रकार यूनानी विचार पद्धति दो दिशाओं में चली जो परस्पर विरोधी थीं। एक का प्रवर्तन परमेन्टडीज (लगभग ५०० ई० पू०) ने किया, जिसने अपरिवर्तनशील शक्ति पर जोर दिया। दूसरे का प्रवर्तन हेराक्लीटस ने किया, जिसके अनुसार यह जगत् निरन्तर गतिशील है। पिथागोरस के अनुयायी हेराक्लीटस आदि ने वास्तविक तत्व को ढूंढ़ना आरम्भ किया। इन लोगों के अनुसार इस जगत् की गतिशीलता में कुछ अपरिवर्तनशील नियम भी हैं और वे ही वास्तविक तत्व हैं, उदाहरणतः—रेखा गणित वास्तविक सत्य है और उसमें के चतुष्कोण, चक्र, त्रिकोण आदि उसके गत्वर रूप हैं। समन्वय का

नियम संगीत का सत्य है और अरूप ज्योतिष परिवर्तनशील नक्षत्रों का सत्य है। इस प्रकार संख्या में इन लोगों ने 'एक' को लिया जो उनकी दृष्टि में वास्तविक अपरिवर्तनशील, सत्य है। सम्भवतः परमेन्टडीज के अन्वेषण का यह एक सन्तोषजनक परिणाम समझा जा सकता है।

‘होता हुआ’ या परिवर्तनशीलता को लेकर तीन महत्वपूर्ण विचार उद्भूत हुए। एम्पेडोक्लीज ने वस्तुओं के चार मूल तत्व स्वीकार किये। पृथ्वी, जल, आकाश और अग्नि—इनके चारों ओर शून्य आकाश का अस्तित्व माना। इनके अनुसार ये भौतिक तत्व अपने आपमें अमिश्रित और गति हीन हैं और इनमें गति या परिवर्तन अभौतिक तत्वों के द्वारा आता है। इनका नाम वह प्रेम और वृणा, आकर्षण और अप्रियता रखता है।

अनाक्सागोरस (५००-४२८ ई० पू०) तीस वर्ष तक एथेंस में दर्शन की शिक्षा देता रहा। उसके शिष्यों में पेरेक्लीज, यूरिपिडीज आदि थे। इसके मत के अनुसार संसार की रचना चित् शक्ति द्वारा हुई है। अनाक्सागोरस वैज्ञानिक था। उसकी दृष्टि में सूर्य और चंद्रमा पत्थर और मिट्टी के मंडल हैं। सूर्य अपनी गति के कारण श्वेत और गर्म है। दोनों ही आकार में बहुत बड़े हैं। सूर्य तो सम्भवतः पहाड़ की तरह बड़ा है। इसने ग्रहों का यथातथ्य रूप समझा था।

अनाक्सागोरस परमात्मा को शुद्ध और शक्तिमान मानता था। उसका मत है कि सब वस्तुएं पहले संकीर्ण थीं, आत्मा ने अपनी विवेक शक्ति से उन वस्तुओं को अपने-अपने में लगा कर इस संसार की रचना की है। इसका सृष्टि-क्रम प्रायः मनुस्मृति के आरम्भ में दिए हुए सृष्टि-क्रमसे मिलता-जुलता है।

इस काल का दूसरा दार्शनिक सिद्धान्त अणु सिद्धान्त है। इसका उद्भव किसी वैज्ञानिक आधार पर न होकर परमेन्टडीज के दार्शनिक आधार पर हुआ जान पड़ता है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक वस्तु ठोस है; यदि वह ठोस नहीं है तो कुछ नहीं है। पर एक सनातन ठोस पदार्थ के स्थान पर बहुत से सनातन ठोस पदार्थ हैं। ये इतने छोटे हैं

कि इनका विभाजन असम्भव है। परमेन्टडीज ने शून्य आकाश के विरुद्ध जो तर्क उपस्थित किया था, वह अमान्य हुआ। उसका यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य हुआ कि 'जो है' वह गोला और गति हीन है। इसके विपरीत यह कहा गया कि जो कुछ वस्तुएं हैं, वे असंख्य आकार-प्रकार की हैं और वे सदैव गतिशील रहती हैं। इनके गुण हैं—आकार, माप और गति। और ये ही प्रकृति सम्बन्धी तथ्य हैं। शेष सब कुछ अनुमित और कल्पना प्रसूत है। यह सिद्धान्त ल्यूकिप्पस ने चलाया, किन्तु इसका पूर्ण विकास उसके शिष्य डेमोक्रीटस (जन्म लग-भग ४७६ ई०पू०) और फिर एपिक्यूरस (३४१-२७०) ने किया।

यूनान में प्रजातन्त्र के कारण विचार स्वतंत्रता बढ़ गई थी। सर्वत्र संदेह और तर्क की भावनाएं जाग्रत हो उठी थीं। सभी अपने को विज्ञ और पंडित समझने लगे थे। दूसरे के मत का विरोध और अपने मत की पुष्टि ही शिक्षकों और विद्यार्थियों का उद्देश्य हो गया था। यूनान के उच्च कुलीन अपनी संतानों को एथेंस भेज कर शिक्षा ग्रहण कराते थे। राजनीतिक प्रभाव के कारण यह आवश्यक हो गया था। वक्तृत्व-कला और दर्शन के लिए बहुत बड़ी फीस चुकानी पड़ती थी। ऐसी अवस्था में तर्क से सब मतों की परीक्षा करने वालों ने शिक्षण का कार्य आरम्भ किया। ये साफिस्ट (वितंडावादी) कहलाये। इनकी फीस इतनी बड़ी होती थी कि सामान्य स्थिति के लोग अपनी सन्तानों को उनके द्वारा शिक्षित नहीं करा सकते थे।

साफिस्टों के प्रवर्तक प्रोटागोरस (४८०-४१० ई०पू०) का सिद्धास्त था कि सब वस्तुओं का माप मनुष्य है। उसका कहना था कि जब वस्तुओं का माप मनुष्य द्वारा लिया जाता है तब माप की प्रणाली में भी उन्नति करना आवश्यक है, अतएव मानव शिक्षा-प्रणाली का स्तर भी उंचा करना होगा। पैसा लेकर शिक्षा देनेवाला वह प्रथम साफिस्ट शिक्षक था। अपने शिष्यार्थियों की कला सम्बन्धी योग्यता पर वह ध्यान नहीं देता था। उसका एक मात्र लक्ष्य यही रहता था कि निरन्तर ज्ञान का विकास करते रहें, जिसके

कारण वे किसी भी विषय की पूर्ण दक्षता स्वयं प्राप्त कर लेंगे। वह अपने विद्यार्थियों के शिष्टाचार और व्यवहार पर भी ध्यान देता था।

प्रोटागोरस के पश्चात् उसका अनुकरण करनेवाले कई साफिस्ट हुए। यह ध्यान देने का विषय है कि यूनानी लोग 'निर्माता' बनाना चाहते थे। वे लोग विभिन्न कलाओं के प्रति और विशिष्ट व्यक्तित्व अथवा महामानव की विभूतियों के प्रति प्रधान लक्ष्य रखते थे। सामाजिक जीवन के लिए यह आवश्यक भी था। किन्तु साफिस्टों की शिक्षा प्रणाली में कुछ त्रुटियाँ भी थीं। युवक स्वच्छन्दता पूर्वक तर्क का आश्रय लेकर पथ-भ्रष्ट भी हो जाते थे। वे स्वयं अपनी चालाकी के कारण बनने लगते थे।

सुकरात (जन्म ४५६ ई० पू०) ने युवकों में प्रविष्ट इस मनोवृत्ति का अनुभव किया कि अस्ताचल के समीप पहुँचे हुए वृद्धों के जीवन का सुधार नहीं किया जा सकता। राष्ट्र और देश का भविष्य और उत्थान युवकों पर ही निर्भर करता है। अतएव उसका ध्यान युवकों पर ही रहा। वह उन्हें पिता की भाँति प्यार करता और उनके भविष्य का मार्ग निर्धारित करता।

सुकरात ने युवकों की बुद्धि में ज्ञान की लुधा जागरित की। वे बड़ी उत्सुकता से उसकी ओर देखते और वह उन्हें व्यस्त रखता। वे लोग सत्य के इतने समीप आ जाते कि उनका विश्वास हो जाता था कि अगली बार निश्चय ही हम उसे प्राप्त कर लेंगे। इस तरह वे सत्य के बजाय सुकरात पर ही निर्भर रहने लगे। प्लेटो का फेडो भले ही इतिहास न हो। किन्तु नाटकीय दंग से वह सत्य अवश्य है।

सुकरात के जीवन का अन्तिम समय समीप आ गया था। उसे प्राण दण्ड की आज्ञा के कारण विष का प्याला पीना पड़ेगा। सुकरात बड़ी शान्ति से दिन व्यतीत कर रहा था। अपनी जीवन-यात्रा समाप्त करने के पूर्व उसने अपने शिष्य और अनुयायियों के सम्मुख मृत्यु के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर व्याख्या उपस्थित की थी। उसने आत्मा के

अमरत्व पर प्रकाश डाला था। उसका कहना था कि शरीर से आत्मा का मुक्त हो जाना ही मृत्यु है। उसे पुनर्जन्म में भी विश्वास था।

विष-पान के पश्चात् वहाँ उपस्थित उसके शिष्य और मित्र अनुताप कर रहे थे। उनमें से क्रीटो और एप्लोडोरस तो फूट-फूट कर विलाप करने लगे। सुकरात ने कहा—यह क्या कर रहे हो, ज्ञानी पुरुषों? इसीलिए मैंने अपनी पत्नी को यहां से दूर कर दिया, जिसमें कोलाहल और अशान्ति का वातावरण न उपस्थित हो, क्योंकि मैंने सुना था कि प्रसन्नतापूर्वक ही जीवन का अन्त करना चाहिए। अतएव शान्ति धारण करो।

उसकी अन्तिम जीवनयात्रा बड़ी कारुणिक है। प्लेटो ने फेडो-वाले अंश में इसका विस्तृत वर्णन किया है। सचमुच सुकरात ने अपने बाद भी अपने युवक शिष्यों और मित्रों को विचार में तन्मय और व्यस्त रहने के लिए मृत्यु के सम्बन्ध में अनेकों प्रश्न छोड़ दिया था। सत्य की खोज में ही उसने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था।

मृत्यु के पश्चात् सुकरात के दर्शन से अधिक उसके व्यक्तित्व की कहानी ही अमर रही। सुकरात ने किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की थी। उसके शिष्य प्लेटो ने ही उसके विचारों को संसार के सम्मुख स्पष्ट किया है।

प्लेटो (४२७-३४७ ई० पू०) सुकरात का शिष्य था। उसका वास्तविक नाम एरिस्टोक्लीज था। हम लोग उसे अफलातून के नाम से ही समझते हैं। उसका जन्म अपोलो के जन्म दिवस की तिथि को हुआ था। प्लेटो के दर्शन का प्रभाव समस्त योरोप पर पड़ा। वह उच्च वर्गीय वंश में उत्पन्न हुआ था अतएव उसकी शिक्षा पर विशेष ध्यान रखा गया था। वह आरम्भ में नाट्यकार बनना चाहता था। बीस वर्ष की वय में सुकरात से उसका परिचय हुआ था। सुकरात का प्रभाव उस पर अत्यधिक पड़ा। प्लेटो का जीवन भी बड़ा सहस्रमय था। एक बार साराइक्स के शासक द्वारा वह गुलाम की भांति बेच

दिया गया था। उस गुलामी के जीवन में भी वह सन्तुष्ट था। अन्त में एक बड़ी रकम द्वारा उसका छुटकारा हुआ।

प्लेटो जनतन्त्र के प्रति असन्तुष्ट ही रहा। इसका सबसे प्रमुख कारण था जनतांत्रिक शासन द्वारा उसके शिक्षक सुक्रात को दण्ड देकर उसका प्राण लिया जाना। उसने एक आदर्श शासन-प्रणाली की कल्पना की थी। इसका विस्तृत वर्णन उसने अपनी रिपब्लिक नामक पुस्तक में किया है। यह स्वर्ग के समान मानव के सम्पूर्ण सुखमय जीवन की विस्तृत कल्पना की कहानी है। किन्तु वास्तविक रूप में इसका संचालन अथवा निर्माण करना कठिन ही नहीं असम्भव भी है।

उसका सिद्धान्त है कि मानव नगरों का निर्माता है। जैसा नगर वह बनाता है उसी के अनुसार उसकी भी परख की जा सकती है। जैसी सरकार होगी वैसे ही नागरिक भी होंगे। उसका विश्वास था कि स्वार्थी मनुष्य स्वयं अपने पतन का कारण बनता है। मनुष्य को कैसा होना चाहिए, वह सुखी जीवन कैसे बना सकता है, इन प्रश्नों पर प्लेटो ने बड़ी गम्भीरता पूर्वक विचार किया है। शिक्षा के सम्बन्ध में भी उसने सुधार की अनेकों योजनाएँ प्रस्तुत की हैं। धर्म के सम्बन्ध में उसके विचार इतने उन्नत थे कि इसाई धर्म माननेवालों ने भी बड़े सम्मान से उसके विचारों को ग्रहण किया है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्लेटो के पश्चात् संसार के सभी देशों में और सभी युगों में उसके दर्शन के प्रति रुचि प्रकट की गई है। वह पहला दार्शनिक है, जिसे संसार में सबसे अधिक सम्मान मिला है।

अरिस्टोटल (३८४ ई० पू०) को अरस्तू के नाम से सम्बोधित किया जाता है। वह प्लेटो का शिष्य था। अरस्तू का पिता वैद्य था। अरस्तू को सिकन्दर महान् का शिक्षक होने का सौभाग्य प्राप्त था। अन्य दार्शनिकों की भांति धन के लिए उसे लालायित नहीं होना पड़ा था। उसे सुख के सभी साधन प्राप्त थे। उसका पुस्तकालय

दुर्लभ पुस्तकों से भरा था। यहाँ तक कि कोई नवीन वस्तु अथवा किसी पुस्तक की पांडुलिपि दूर देशों में हस्तगत होने पर सिकन्दर उसे अपने गुरु के पास भेज देता था।

अरस्तू को ज्ञान संग्रह करने के जितने भी साधन प्राप्त थे उतने सम्भवतः इतिहास में अन्य किसी भी लेखक को नहीं प्राप्त हुए। यही कारण था कि अरस्तू अपने युग के सभी विषयों का प्रकाशक विद्वान था।

यूरोप के सभी देशों ने अरस्तू के दर्शन और अन्वेषण से पर्याप्त लाभ उठाया है। साहित्य और विज्ञान दोनों का वह पथ प्रदर्शक था। उसके ज्ञान के बल पर ही यूरोप आगे बढ़ा। सिकन्दर के काल में यूनानी नगर-राज्यों की सीमा विस्तृत हो कर विश्व साम्राज्य की कल्पना में परिणत हुई। मानवता के कल्याण और उन्नति की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। कला, साहित्य और विज्ञान का क्षेत्र भी विशाल हुआ। विकास की गति निरन्तर बढ़ती ही गई।

जिस तरह यूनानी साहित्य में तीन महान् नाटककार हुए उसी तरह दर्शन के क्षेत्र में भी सुकरात, प्लेटो और अरस्तू तीन दार्शनिक हुए। ये तीनों यूनान ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण यूरोप के दर्शन के कर्णधार माने जाते हैं। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य खण्डित होकर छिन्न-भिन्न हो गया। ठीक उसी प्रकार अरस्तू के बाद ही यूनानी दर्शन का पटान्त्रेय होता है।

यूनानी इतिहास

गद्य का चरम विकास अधिक से अधिक ज्ञान की खोज की प्रवृत्ति के फलस्वरूप हुआ। जब सोलोन नामक दार्शनिक ने ज्ञान के लिए दूर-दूर तक भ्रमण किया तो उसने एक प्रकार से हेरोडोटस और हेकाटिकस नामक इतिहासकारों का सा ही काम किया। हेकाटिकस नामक इतिहासकार ने संसार का भूगोल और वंश वर्णन किया तो

उसने भी एक प्रकार से आनाक्जियेण्डर और डेमोक्रीटस नामक दार्शनिकों का ही अनुकरण किया। हिस्तीरी (इतिहास) एक प्रकार का अन्वेषण है और फिलोसीफिया (दर्शन) ज्ञान का प्रेम। दोनों प्रायः एक ही क्षेत्र के हैं, इनमें से दर्शन विशेष तथ्यों को छोड़ कर चरम और साधारण सत्य से सम्बन्ध रखता है। इसके अतिरिक्त दर्शन के अपने-अपने सम्प्रदाय होते हैं, जब कि इतिहास में इसका अभाव होता है।

छठी शताब्दी में गद्य का दर्शन अधिकतर इतिहास ग्रन्थ में ही दिखाई पड़ता था। ग्रन्थ का न कोई नाम होता था न यही लिखा रहता था कि यह साहित्य के किस अंग की वस्तु है। पहला वाक्य ग्रन्थ के शीर्षक के रूप में रहता था, उदाहरण-स्वरूप यह हेरोडोटस का अन्वेषण कार्य है। लेखक का नाम न रहता और लिखा रहता मैं सम्पूर्ण विश्व के सम्बन्ध में कह सकता हूँ।

प्राचीन महाकाव्य अपने आप में तथ्यों का समूह समझा जाता था। या तो उसका कोई लेखक ही नहीं होता था या कोई दिव्य लेखक की कल्पना कर ली जाती थी। उस समय की कहानी, इतिहासादि का यही क्रम था। उसके बाद के युग में रचनाएँ समूह द्वारा लिखी जाने लगी। कवियों का समूह, सिद्धान्त विशेष के दार्शनिकों का समूह, भक्तों का समूह अधिकारियों का समूह इत्यादि। पहले होमर, हिरोड, ईसाय आदि हुए उनके बाद, होमेरिडे, पाइथागोरिस्ट, ओरफिक्स आदि हुए। किसी एक व्यक्ति के पृथक् से कुछ लिख कर प्रचारित करने से प्राचीन यूनानी नागरिक जीवन में अस्त-व्यस्तता आ जाया करती थी। कविता के क्षेत्र में तो आरक्क्लोकस आदि ने ऐसा किया भी था। गद्य में जो ग्रन्थ लिखा गया उसके शीर्षक स्वरूप वाक्य तुरही की तरह लोगों के कानों में गूँज उठते थे। उदाहरण के रूप में इन वाक्यों को लीजिये—हिकेटिकस का यह कथन है मैं जो सत्य समझता हूँ उसे लिखता हूँ।

हिकेटिकस सर्व प्रथम इतिहासकार था। उसकी शैली सरल और स्पष्ट थी। हिकेटिकस का इतिहास उस युग का है, जिसे हम पौराणिक कहते हैं। उसने यूनानी परम्परा के स्थान पर मिस्री परम्परा का अनुसरण किया था। भूगोल के क्षेत्र में वह कई शतियों तक अधिकारी समझा जाता था। साहित्य और मानव मस्तिष्क के विकास के क्षेत्र में उसका महत्व निश्चित रूप से है। वह अपने युग की प्रवृत्ति, अन्वेषण, बौद्धिकता और साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है। उसके अतिरिक्त दो और लेखकों का नाम लिया जाता है, जिनमें एक हेराडोरस और दूसरा हेलानिकस हैं, किन्तु उन दोनों की रचनाएँ अब उपलब्ध नहीं हैं।

इतिहास का प्रवर्तक हिरोडोटस माना जाता है। वह विश्व समा-लोचक और अन्वेषक भी था। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के परिणाम-स्वरूप वह 'इतिहास का पिता' कहा जाता है। हिरोडोटस अपनी सुनी हुई बातों का वर्णन कर देना अपना कर्तव्य समझता था, लेकिन वह उन पर सदैव विश्वास नहीं करता था। उसने मिस्र और पूर्व के देशों की यात्रा की थी और उस समय की प्रचलित कथाओं को उसने विश्वास के साथ वर्णित किया। उसके लिखे इतिहास में रोमांस का तत्व पाया जाता है। उसकी रचना शैली महाकाव्य और इतिहास के मध्य की समझना चाहिए। उसका वर्णन विस्तृत और भाषा प्रवाह युक्त है।

ओलिम्पिक खेलों में हिरोडोटस दर्शकों की हर्ष ध्वनि के बीच अपनी रचना पढ़ कर सुनाता था। उस समय थ्यूसिडिडीज एक युवक था। वह आश्चर्य और श्रद्धा की भावना के साथ हिरोडोटस की रचना सुनता था। इस युवक के पिता को बधाई दी जाती थी कि दूसरे के यश पर हर्षोत्फुल्ल होने वाला उक्त युवक अवश्य ही भविष्य में कोई उदाहरण योग्य व्यक्ति होगा।

हिरोडोटस का सर्व प्रथम लक्ष्य उपस्थित लोगों का मनोरंजन करना था। उसने इस प्रकार के भाषणों से आगे बढ़ कर एक बड़ा

इतिहास ही लिख दिया। उसकी रचनाओं में किसी महत्वपूर्ण राज-नैतिक संघर्ष अथवा अध्यात्मिक आन्दोलन का वर्णन उतना नहीं है, जितना व्यक्ति विशेष को दृष्टि से सम्पूर्ण संसार का अवलोकन है। वह जनता के मिथ्या विश्वास को भी उपेक्षा भाव से नहीं देखता था वह जनता के साथ ही इतिहास की घटनाओं को एक नैतिक ईश्वर द्वारा परिचालित समझता था। यदि मानव-प्रकृति उसकी कहानी के लिए मनोरंजक और जीवन्त है तो वह उसे अपने इतिहास में रख लेता था। अपने इतिहास में केवल अंक और आंकड़े भर लेना उसे पसन्द नहीं था। वह मानव-प्रकृति की निर्बलता, उसकी वीरता और दुष्टता से भली भांति परिचित था। उसकी रचनाओं में इन सब बातों का दर्शन होता है।

हिरोडोटस यूनान के शत्रुओं की प्रशंसा करता है। इसलिए कि जितना महान शत्रु होगा, उस पर विजय प्राप्ति का श्रेय भी उतना ही महत्तर होगा। हिरोडोटस ने इतिहास के लिए उपयुक्त सामग्री प्रस्तुत कर दी थी। इसीलिए बाद में प्रारम्भ होने वाले पेलोपोनेसियन युद्ध के वर्णन में थ्यूसिडिडीज को अपनी प्रतिमा को चमकाने का अवसर मिला था। यह सत्ताईस वर्ष तक चला। थ्यूसिडिडीज ने ऐसी सामग्री एकत्र करना आरम्भ किया जो उसके वर्णन के लिए आवश्यक थी। उसे ऐसी सामग्री मिली जिससे उसके लिए हेरोडोटस से आगे बढ़ जाना सम्भव था। कथा में पड़ने की प्रवृत्ति ने हिरोडोटस की वर्णन-पद्धति अप्रसिद्ध कर दी थी। थ्यूसिडिडीज कहा करता था कि मेरे लिए सत्य-प्रेम सर्वोपरि है। वह ओलिम्पिक के दर्शकों के मनोरंजन के लिए नहीं लिखता था। भूत के एक तथ्यपूर्ण आकलन से वह अपने पाठकों को भविष्य के आकलन में सहायता करना चाहता था। अपनी भूमिका में यूनान की कथाओं पर विचार करते समय उसने वास्तविक तथ्यों को पृथक् करने का प्रयत्न किया। थ्रेस के सम्बन्ध में वर्णन करते समय उसने संक्षेप में हेरियस और प्रायम की कथाओं का भी वर्णन कर दिया। सिसिली का वर्णन करते

समय उसने साइक्लोप्स और लेस्ट्रीमन का भी उल्लेख कर दिया । लेकिन वह ऐसे रहस्यात्मक प्रवादों से अलग होकर इतिहास के वास्तविक उद्देश्य पर आ जाता था । अपने युग का वास्तविक चित्र देने के लिए उसने न केवल घटनाओं का वर्णन किया अपितु तत्कालीन नेताओं और जनरलों के भाषणों का सार तक दिया जो उसने स्वयं या दूसरों से सुना था । बाद के इतिहासकारों ने उसका यह ढंग अपनाया और यह काफी समय तक प्रचलित रहा ।

थ्यूसिडिडीज ने भाषणों के उल्लेख का यह ढंग हिरोडोटस से ही प्राप्त किया था, किन्तु विषय-विभाजन में वह हिरोडोटस से पीछे पड़ गया । थ्यूसिडिडीज तथ्यों पर इतना ध्यान देता था कि वह काल को शरत् और ग्रीष्म में बाँट दिया करता था और प्रत्येक ६ महीने की घटनाओं का पृथक्-पृथक् वर्णन करता था । परन्तु ऐसे काल-विभाजन से इतिहास में महत्वहीन घटनाओं के भी स्थान पा जाने की सम्भावना रहती है और यदि सब घटनाओं को नहीं लिया जाय तो इतिहास की शृंखला विच्छिन्न हो जाती है ।

थ्यूसिडिडीज कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन कर देता है और फिर पाठकों की उत्सुकता दूर किये बिना नई घटनाओं पर चला जाता है । इस प्रकार वह पाठकों को एथेंस से कोरिसिरा, लेस्बोस से पेलोपोनेसस, एशिया से सिसिली ले जाता है । लेकिन इन देशों का कोई विशेष पारस्परिक सम्बन्ध नहीं दिखा पाता । थ्यूसिडिडीज समय के क्रम पर ध्यान देता है और हिरोडोटस घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्ध पर एक समालोचक के अनुसार हिरोडोटस ने एक उलझा हुआ तर्क समन्वित रूप में उपस्थित किया और थ्यूसिडिडीज ने एक साधारण विषय अनेक असम्बद्ध भागों में बाँट दिया है, जिन्हें फिर से एक निश्चित इकाई में जोड़ना असम्भव है ।

हिरोडोटस के इतिहास में कला और वैविध्य के साथ मनोरञ्जकता भी है । दूसरी ओर थ्यूसिडिडीज के इतिहास में उसके विषयगाम्भीर्य के अनुसार उसकी शैली में भी गम्भीरता है । पेलोपोनेसियन युद्ध के

वर्णन में आरम्भ से अन्त तक शोक का वातावरण बना रहता है, क्योंकि युद्ध के वर्णन हत्या और दुःख के अतिरिक्त और रहता ही क्या है ?

उस समय एथेंस हजार अधीन जनतन्त्री की राजधानी थी। थ्यूसिडिडीज की संक्षिप्त, आवेशपूर्ण और शक्ति सम्पन्न शैली, विषय की संक्षिप्तता और स्पष्टता ने वास्तविक जीवन और जनतान्त्रिक असेम्बलियों का स्पष्ट चित्र उपस्थित कर दिया है।

थ्यूसिडिडीज ने बहुत समय तक अपने को छिपा रखा था। जब वह एथेंस लौटा तो एथेंस की स्थिति बदल चुकी थी। सर्वत्र आराजकता फैल गई थी। ऊँचे आदर्श नष्ट हो चुके थे। विशिष्ट व्यक्तियों का जीवन विक्षिप्त की भांति कट रहा था।

थ्यूसिडिडीज ने पेलोपोनेसियन युद्ध के इक्कीसवें वर्ष पर अपना इतिहास अपूर्ण रूप में छोड़ा था। इस कार्य को जेनोफोन ने आगे बढ़ाया। वह यूनान की प्रगतियों को लेते हुए आगे बढ़ा और मानटिनी ये के युद्ध तक पहुँचा। उसकी रचनाओं से यूनान के इतिहास के अध्ययन में पर्याप्त सहायता मिलती है।

जेनोफोन सुकरात का शिष्य था। अपनी विलक्षण बुद्धि और पराक्रम के कारण वह यूनानी सेनापति हुआ। दस सहस्र यूनानी सैनिकों का नायकत्व कर उसने 'परशिया' पर आक्रमण किया था। इस युद्ध का वर्णन स्वयं उसकी लेखनी द्वारा हुआ है। उस पुस्तक का नाम 'अनावेसिस' है। जेनोफोन ने इतना सजीव वर्णन किया है कि पुस्तक पढ़ते समय पूरा दृश्य आँखों के सम्मुख उपस्थित हो जाता है। मुझे तो यह पुस्तक उपन्यास से अधिक रोचक प्रतीत हुई। जेनोफोन ने प्रत्येक बात का विवरण और सैनिकों की मनोवृत्तियों का इतना वास्तविक चित्रण किया है कि उस समय के जीवन का यथार्थ रूप दिखाई पड़ता है। शासन व्यवस्था, सेनापतियों के प्रति सैनिकों का विद्रोह आदि महत्व पूर्ण विषयों पर भी उसने प्रकाश डाला है।

इस पुस्तक में एक एक दिन का लेखा और साधारण मनुष्य एवं सैनिकों के जीवन का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें यूनानी सैनिक प्रणाली का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट दिखाई पड़ता है। निस्सन्देह जेनोफोन की यह पुस्तक विश्व-साहित्य में विशेष स्थान रखती है।

जेनोफोन जब बालक था, उस समय एक दिन मार्ग में सुकरात से उसकी भेंट हुई। सुकरात ने उसे अपनी छड़ी से रोकते हुए अनेक वस्तुओं के सम्बन्ध में उससे पूछा कि वे कहां मिलेंगी। बालक ने बड़ी नम्रता से उसे स्थान बतलाया। तब सुकरात ने पूछा—अच्छा यह बताओ कि अच्छा आदमी कहां मिलेगा।

बालक जेनोफोन असमंजस में पड़ा। वह कुछ उत्तर नहीं दे सका। फिर सुकरात ने कहा—मेरे साथ आओ।

उसी समय से जेनोफोन सुकरात के संपर्क में आया।

४१ वर्ष की अवस्था में सैनिक जीवन से अलग होकर वह अपना जीवन शान्ति-पूर्ण ढंग से व्यतीत करने लगा। उसके पश्चात् २० वर्ष तक वह पठनपाठन में ही लगा रहा। उसने सुकरात के जीवन का यथार्थवादी ढंग से सजीव चित्र लिपिबद्ध किया था। अफलातून ने सुकरात के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा था उसमें उसने कल्पनाओं को विशेष स्थान दिया था। जेनोफोन ने 'मेमोराविलिया' में अफलातून के विचारों का संशोधन किया।

जेनोफोन के पश्चात् विशेष उल्लेखनीय इतिहासकार पोलिवियस हुआ। पोलिवियस ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के रोमन साम्राज्य के विकास का विशालकाय इतिहास लिखा था, किन्तु वह पूरा नहीं मिलता है। वह सच्चे अर्थ में इतिहासकार था। तथ्यों का अध्ययन एवं अवलोकन और उनका यथा-तथ्य तटस्थ रूप से निरूपण ही उसकी विशेषता थी। इसी गुण के कारण वह इतिहासकारों के ज्ञानवर्द्धन के लिए अत्यधिक महत्व रखता है। वास्तव में हिरोडोटस और थ्यूसिडिडीज के बाद यूनान में बहुत समय तक कोई महत्वपूर्ण इतिहासकार नहीं हुआ। पोलिवियस ही ऐसा हुआ जो वह सम्मान प्राप्त कर सका।

लैटिन साहित्य

यह ठीक है कि लैटिन साहित्य का निर्माण यूनानी साहित्य के आधार पर ही हुआ है लेकिन यह सबसे बड़ी भ्रान्ति होगी कि यूनानियों की विचार धारा को रोमनों की विचारा-धारा से मिलाया जाय ।

रोमन भौतिकवादी मात्र थे । उनका जनतन्त्र और साम्राज्य कला से विहीन था ।

यूनान और रोम के बीच का भेद कला के क्षेत्र से अधिक अध्यात्म और धर्म क्षेत्र में दिखाई पड़ा । विशेषकर आत्मा के अमरत्व, पुनर्जन्म और इससे भी अधिक कर्मफल आदि के सम्बन्ध में, आगे चल कर ओलिम्पस के देवताओं के भक्त यूनानियों में अमरत्व के सम्बन्ध में एक प्रकार की अस्पष्ट धारणासी प्रतीत होने लगी थी । यूनानी नाटककार साफोक्लीज़ महापुरुषों के लिए मरणोपरान्त, एक दूसरे जीवन का वर्णन करता है और मृत वीरों और उनकी स्त्रियों के लिए पृथक् भूगर्भस्थित स्वर्गों की कल्पना करता है ।

रोम के आरम्भिक इतिहास पर हमें यहां विचार नहीं करना है । ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी में—जब यूनान में काव्य, नाटक और शोकगीत लिखे जा रहे थे—रोमन लोग बर्बर कबायली थे । वे इट्रस्कन नाम की अपेक्षाकृत सम्य जाति के अधीन थे । तत्कालीन रोम के इतिहास में अधिकतर ऐसी कहानियां भरी पड़ी हैं, जिनका उपयोग रोम के इतिहासकारों ने अपने पूर्व पुरुषों को महत्व देने के लिए किया है । छठी शती ईसा पूर्व में रोमवालों ने इट्रस्कन राजाओं को निर्वासित कर दिया और तभीसे कथाओं से मिश्रित इतिहास ल्यूसियस जूनीयस, ब्रूटस, ल्यूसियस टारक्विनियस आदि को लेकर आरम्भ होता है ।

लैटिन साहित्य

इसमें सन्देह नहीं कि सर्व प्रथम रोमनों ने ही राजनीति में प्रजा-तान्त्रिक विचार को प्रश्रय दिया। उन्होंने एक ऐसे विधान का विकास किया जिससे उनको पर्याप्त-स्वन्त्रता प्राप्त थी। उनकी सम्पत्ति सुरक्षित थी और सब को अपना राजनैतिक विचार व्यक्त करने का अवसर था। भौतिकता के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा ऐसी थी कि परिणामतः उसने उनकी पूर्वोक्त उपलब्धियों को विनष्ट कर दिया। उनमें यदि स्वाभाविक राजनीतिक चेतना थी तो सैनिक मनोवृत्ति उससे भी बढ़ कर थी। रोम की सेना ने विश्व-विजय के पश्चात् सर्प की भांति स्वयं अपने को खा डाला। रोम के पतन के सम्बन्ध में लोगों के अनेक मत हैं; कुछ लोग अर्थ के कारण उसका पतन बताते हैं। यह कुछ अंश तक सत्य भी हो सकता है; किन्तु यह आर्थिक कठिनाई, सैनिक-व्यय और मारे गये राजाओं के उत्तराधिकारियों द्वारा सेना को दिये गये धन के कारण उत्पन्न हुई थी। इसके अतिरिक्त शासकों के चुनाव में व्यक्ति की सैनिक मनोवृत्ति का ध्यान अधिक रखा जाता था। विरला ही कोई-ऐसा सम्राट चुना जाता था जो कलाओं में रुचि रखे अथवा शान्ति के लिए कुछ प्रयत्न करे।

अरस्तू की मृत्यु २२२ ई० पू० हुई। उसके ठीक पचास वर्ष बाद एपिरस का राजा पाइरस एक स्त्री के पत्थर के प्रहार से मर गया। उसकी मृत्यु से यूनानी संघ, रोमनों और कारथेज निवासियों के बीच चलते हुए त्रिकोणात्मक संघर्ष का अन्त हुआ। पाइरस २७२ ई० पू० में मरा। वह उस समय रोम की शक्ति से परास्त हो चुका था। टेरेन्टम रोमनों के अधीन हो चुका था। उसके कुछ ही समय बाद यूनानी देशों और सिकन्दर के साम्राज्य पर भी रोमनों का अधिकार हुआ। किन्तु पहले उन लोगों ने कारथेज की ओर अपनी दृष्टि फेरी और फिर एक बार माग्गरटिनो और हिमेरी द्वितीय का नाम इतिहास के पृष्ठों पर आया। माग्गरटिनो समुद्री डाकुओं का एक गुट था जिसने सिसली पर आक्रमण किया। सिसली पर रोम और कार्थेज दोनों की दृष्टि थी।

सिरेक्यूज की रक्षा के लिए लड़ने वाले हिमेरी द्वितीय से ही कवि थियोकिटस ने अनुरोध किया था कि आप सेना से अधिक कवियों पर व्यय करें ।

मामरटीन डाकुओं ने कार्थेज और रोम दोनों से सहायता की अपील की । बाद में हिमेरी द्वितीय ने रोम से सन्धि कर ली, और पहली बार २६३ ई० पू० में रोमन सेना ने सिसली में प्रवेश किया । हिमेरी की सहायता से रोमनों के द्वारा मामरटीनों और कार्थेजवालों की पराजय हुई । इसके बाद कार्थेज के विरुद्ध प्यूनिक युद्ध आरम्भ हुआ जो २६४ से १४६ ई० पू० तक चला । अन्त में ६ दिनों तक सड़कों पर युद्ध हुआ और १७ दिनों तक नगर में आग धधकती रही । उसके बाद कारथेज पर रोम का अधिकार हो गया । इस विजय ने पूरे भूमध्य-सागर पर रोमनों का आधिपत्य स्थापित कर दिया । कार्थेज के युद्ध के समय रोमनों ने मकदूनियाँ का युद्ध छेड़ दिया । वह १४८ ई० पू० में आरम्भ होकर १४६ ई० पू० में समाप्त हुआ । मकदूनियाँ रोम का एक प्रान्त बन गया और सम्पूर्ण यूनान रोम के अधिकार में आ गया ।

अन्त में सिसली, सारडीनिया, कार्सिका, दोनों स्पेन, गाउल का एक बड़ा भाग, अफ्रिका का एक महत्वपूर्ण भाग और मकदूनियाँ रोम के अधिकार में आ गये । क्रमशः संसार का एक बहुत बड़ा भाग, जिससे विभिन्न साहित्य आये, रोम के अधीन हो गया । एथेंस कई शताब्दियों तक दर्शन-शास्त्रों के लिए प्रसिद्ध रहा । रोम के उच्च वर्ग के लोग वहीं जाकर अपनी शिक्षा समाप्त करना अपनी स्थिति के लिए आवश्यक समझते थे । एथेंस एक प्रकार से ईसाई धर्म के प्रचलन के पूर्व शिक्षा का महान केन्द्र माना जाता था ।

रोमन लोग लुटेरे थे । वे जिन देशों पर विजय प्राप्त करते उनकी धन-सम्पत्ति लूटने के बाद वहाँ के लोगों को दास-दासियाँ बना कर अपने साथ ले आते । इन गुलामों का उनकी योग्यता और रूप-रङ्ग के अनुसार मूल्यांकन होता था । इनके क्रय-विक्रय का भी एक बड़ा व्यवसाय

था। रोमनों के जनतन्त्र में धनिकों की ही शक्ति सर्वमान्य थी। रोमन शासन में दो ही श्रेणी के लोग थे—एक अत्यन्त धनी और दूसरे निर्धन दास-दासियाँ। यूनान के शिक्षित दास उनके गृह-कार्य और सन्तानों की शिक्षा के लिए नियुक्त थे। यही कारण था कि रोमन धनिकों की सन्तानों को उच्च शिक्षा का साधन प्राप्त था। विजित देशों के साहित्य और कला का भी प्रभाव विशेष रूप से उनके साहित्य और कला पर पड़ा। आगे चलकर इसी अवलम्ब पर उनके विचारों का विकास हुआ।

ल्यूक्रीटियस

ल्यूक्रीटियस अपने ढंग का अनोखा कवि था। उसकी कविता पढ़ते समय हमारे मन में अनेक प्रकार के भाव जागरित होते हैं। वह हमें बरबस अपनी ओर आकर्षित करती है और स्थान-स्थान पर मुग्ध कर लेती है। ल्यूक्रीटियस जड़वादी कवि होते हुए भी हमारे हृदय के अंतर्तम प्रदेशों को स्पर्श करता है। उसने मृत्यु को अनंत विश्राम माना है, जिसमें अनंत शान्ति विराजती है।

ल्यूक्रीटियस अपने पाठकों के हृदय से मृत्यु का भय निकाल देना चाहता था, इसलिये उसने सृष्टि-क्रम का पूर्णतया बुद्धिवादी दृष्टिकोण उपस्थित किया है। ल्यूक्रीटियस का मत था कि यह संसार अणुओं तथा शून्य से निर्मित है। अणुओं की एक दूसरे से निकटता विविध वस्तुओं के स्वरूप का निर्धारण करती है। अणुओं का भी निर्माण सूक्ष्म परमाणुओं से होता है जो अदृश्य होते हैं। ये परमाणु विभाजित नहीं किये जा सकते। इस जगत की समस्त वस्तुओं का निर्माण इन्हीं परमाणुओं से हुआ है। हमारी आत्मा भी इन्हीं सूक्ष्म परमाणुओं से निर्मित है। मृत्यु के बाद मनुष्य फिर इन सूक्ष्म परमाणुओं में बिखर जाता है। इसलिए मृत्यु से भय या घृणा की कोई आवश्यकता नहीं है। मृत्यु एक प्रकार की चिर-गम्भीर निद्रा है।

उस युग की धर्मान्धता ने ल्यूक्रीटियस को धर्म का प्रबल विरोधी बना दिया था। उसका कहना था कि धर्म की भावना मनुष्य में घोर पाशविकता उत्पन्न करती है। जैसे सुन्दरी इफीजेनिया का बलिदान आलिस की वेदी पर केवल इसीलिए किया गया कि द्राय की ओर कूच करने वाले जहाजों के लिए अनुकूल पवन चलने लगे इसका ज्वलन्त उदाहरण है। जिन भावनाओं के वशीभूत होकर मनुष्य इस प्रकार के पाशविक और क्रूर कर्मों में प्रवृत्त होता है, उनका निर्मूलन करने के लिए ल्यूक्रीटियस ने आवश्यक समझा कि सृष्टि-क्रम का एक सर्वथा बुद्धिसंगत रूप सामने रखा जाय।

ल्यूक्रीटियस ने अपनी 'नेचर आफ थिंग्स' (वस्तुओं का स्वरूप) नामक कविता में सृष्टि रचना का बड़ा भावमय वर्णन किया है। उसने उस युग की कल्पना की है जब।

सूर्य का गोला कहीं दृष्टिगोचर न होता था। सब तरफ विचित्र प्रकार की आंधियां चला करती थीं और सारी दुनिया द्रवरूप में थी। इसके बाद—

विविध खंड उड़ते हुए एक दूसरे से उसी प्रकार मिलने लगे जिस प्रकार समान गुणवाली वस्तुएँ, एक दूसरी को आकर्षित करती हैं और तब जगत का एक रूप दृष्टिगोचर होने लगा।

ल्यूक्रीटियस ने सारे सृष्टि-क्रम का और सभ्यता के विकास का विशद वर्णन किया है। उसने दिखाया है कि किस प्रकार आदिम मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता गया। सारी कविता में ल्यूक्रीटियस का उद्देश्य है कि पाठकों के हृदय में यह विश्वास करा दिया जाय कि इस जगत् की सारी वस्तुओं की रचना बुद्धिसंगत क्रम से हुई है और कोई शक्ति बाहर से इस सृष्टि का नियंत्रण नहीं करती।

ल्यूक्रीटियस की कविता स्थान-स्थान पर बड़ी भावमय और हृदय-ग्राही है। वह विश्व की महत्तम रचनाओं में है। ल्यूक्रीटियस के विचारों से हम भले ही सहमत न हों, पर इसमें सन्देह नहीं कि वह अपने

युग के महान् विचारकों में था। उसके विचारों से सहमत न होते हुए भी लोग उससे प्रभावित होते हैं।

ल्यूक्रीटियस की कविता अधूरी मिलती है। ऐसा ज्ञात होता है कि यह अपनी कविता पूरी नहीं कर पाया। उसके अंतिम अंश में एथेंस में प्लेग फैलने का वीभत्स वर्णन है। ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक्रीटियस का अंत भी बड़ी कारुणिक परिस्थितियों में हुआ था।

कैटूलस

ल्यूक्रीटियस का समकालीन दूसरा दार्शनिक युवक कवि कैटूलस था। कवि कैटूलस में हृदय पक्ष और कला पक्ष दोनों का सम्मिश्रण है। कविता के छन्दःशास्त्र पर भी उसका अधिकार अच्छा था। उसकी कविता मानव के सुख-दुःख का अत्यन्त प्रभावकारी रूप में गान करती है। गीतिकाव्य की रचना करने वाला यह रोमन कवि विश्वसाहित्य में अपना स्थान रखता है। कैटूलस रोमन धनिक वर्ग में अधिक प्रसिद्ध हुआ। इसका कारण सम्भवतः यह था कि उसमें साधारण मानव की अपेक्षा कुछ विशिष्ट बात थी। उसकी कविताओं में धनिकों की दृष्टि से प्रकृति का निरीक्षण किया गया है। उसमें प्रकृतिवादी या एक साधारण किसान का निरीक्षण नहीं मिलता। उसकी मृत्यु तीस वर्ष की अवस्था में ही हुई थी।

वर्जिल

वर्जिल को जनता द्वारा वही सम्मान प्राप्त था जो रोम के सम्राट आगस्टस को प्राप्त था। एक बार एक नाट्यशाला में उसके प्रवेश करने पर समस्त दर्शक खड़े होकर उसी प्रकार उसका अभिवादन करने लगे जैसे वे अपने सम्राट के लिए करते थे।

वर्जिल अपने गीतों के लिये अति प्रसिद्ध था। इन गीतों का विषय ग्रामीण होता था। उनमें गड़रियों का चित्रण बड़े स्वाभाविक रूप में अंकित किया गया है। उन्हें पढ़ कर, पहाड़ी प्रदेशों के सभी दृश्य आँखों के सम्मुख आ जाते हैं। इन गीतों को 'व्यूकोलिक्स' कहते हैं। इनमें वार्तालाप द्वारा कथा और घटनाओं का क्रम बाँध कर काव्य का रूप दिया गया है। कहते हैं कि वर्जिल ने कवि थियक्रिटस की रचनाओं से प्रेरणा प्राप्त की थी। अब उसकी केवल दस कविताएँ पेसटोरल्स के नाम से उपलब्ध हैं।

वर्जिल की कुछ अन्य कविताएँ 'जिओरजिक्स' के नाम से विख्यात हैं। इन कविताओं में उसने पौराणिक कथाएँ, संसार का आरम्भिक इतिहास और मानव जाति की पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया है। इन कविताओं द्वारा ग्रामीण लोगों की खेती, ऋतु और बहुत-सी उपयोगी बातों का ज्ञान प्राप्त होता है। आलोचकों का कथन है कि यूनानी आदि कवि हिंसोड की कविताओं के ढंग पर ही वर्जिल ने अपनी इन कविताओं की रचना की है।

वर्जिल प्रकृति का उपासक था। प्रकृति के रहस्यों का वर्णन और उसके मनोरम दृश्यों का अंकन वर्जिल को अत्यन्त प्रिय था। कहते हैं कि उसके पूर्व कवि ल्यूक्रीटियस की रचना का भी उस पर विशेष प्रभाव पड़ा था। वर्जिल की आन्तरिक अभिलाषा थी कि ल्यूक्रीटियस की भाँति वह प्रकृति के सौन्दर्य का गान प्रस्तुत कर सके। ल्यूक्रीटियस की जिस दिन मृत्यु हुई थी उसी दिन वर्जिल का जन्म हुआ था।

वर्जिल ने 'जिओरजिक्स' में खेती कैसे करनी चाहिए, बगीचा और अंगूर की बेल कैसे हरी-भरी होती हैं, पशु-पक्षी और शहद की मक्खियाँ कैसे पाली जाती हैं, आदि विषयों को बड़ी सरलता से कृषकों के लिए उपयोगी बनाया है। विद्वानों का मत है कि 'जिओरजिक्स' कवि की अत्यन्त पुष्ट कृति है और इससे प्रकृति सम्बन्धी उसके विचारों का परिचय मिलता है।

इटली में मान्दुआ के समीप एक ग्राम में वर्जिल का जन्म हुआ था। युवावस्था तक वह अपने पिता के साथ अपने घर पर ही रहता था। गृह-युद्ध ने इटली को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। फिलपी के युद्ध के पश्चात् गण-तन्त्र की स्थापना हुई। पोम्पी के विरुद्ध ओक्टवियन्स की विजय हुई। वर्जिल की भूमि और सम्पत्ति भी इसमें नष्ट हुई। पुरस्कार के रूप में वह सैनिकों को दे दी गई और वर्जिल अपने परिवार के साथ निराश्रित हो गया। बाद में एक प्रभाव-शाली मित्र के प्रयत्न से वर्जिल की भूमि उसे वापस मिली। वर्जिल ने कृतज्ञ होकर आगस्टस की प्रशंसा में कुछ गीतों की रचना की।

उन गीतों को पढ़कर आगस्टस वर्जिल के प्रति आकृष्ट हुआ। धनी मित्रों ने राज्य-दरबार में वर्जिल की प्रतिभा की प्रशंसा की। वर्जिल का दरबार में प्रवेश हुआ। घनिष्ठता बढ़ने पर आगस्टस ने वर्जिल से आग्रह किया कि वह इन गीतों से आगे बढ़ कर कोई महत्त्वपूर्ण रचना प्रस्तुत करें: 'एनीड' उसी का परिणाम है। यह निश्चित है कि वर्जिल ने इलियड और आडेसी के आधार पर ही 'एनीड' का ढाँचा बनाया था, किन्तु 'एनीड' में कवि की प्रतिभा का चरम विकाश भी दिखाई पड़ता है। वर्जिल ने होमर का कहाँ-कहाँ अनुकरण किया है—और 'एनीड' में होमर का कितना प्रभाव है इस सम्बन्ध में आलोचकों ने एक विशाल भण्डार भर दिया है। वर्जिल के समय में भी उससे कहा गया कि तुमने होमर की बहुत कुछ नकल की है। इस पर वर्जिल ने जो उत्तर दिया उससे उसकी कृति की महत्ता पर प्रकाश पड़ता है।

वर्जिल लिखता है—'जरा वे लोग भी चोरी करके देखें जो यह कहते हैं कि मैंने होमर की चोरी की है। हरक्यूलीज का गदा चुराना सरल है, किन्तु होमर की एक पंक्ति चुराना असम्भव है।'

वर्जिल के अंग्रेजी अनुवादक श्री कनिंगटन ने प्रमाणित किया है कि वास्तव में वर्जिल ने होमर की जो नकल की है वह प्रतिद्वन्दी

के रूप में थी, शिष्य के रूप में नहीं। उसने अपने युग के उन्नत विचार प्रदर्शित कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

विचार करने पर यह सचमुच स्पष्ट हो जाता है कि होमर ने जिस समय अपने दोनों महाकाव्यों की रचना की थी उस समय बर्बर युग था। देवताओं की नामावली होमर ने प्रस्तुत की थी। युद्ध और लूट-पाट ही मानव का एक मात्र ध्येय था। विजय के पश्चात् ऊँचे और विशाल स्मारक बना कर अपनी कीर्ति और स्मृति छोड़ जाना ही लक्ष्य था। वर्जिल के समय में आकर दर्शन और मानव जीवन के उद्देश्य का विस्तार बहुत आगे बढ़ चुका था।

आलोचकों और अन्वेषकों ने वर्जिल के सम्बन्ध में जो छान-बीन की है उससे पता चलता है कि वर्जिल का अध्ययन बड़ा व्यापक था। होमर और उसके बाद के सभी कवियों की रचनाओं का उसने पूर्ण अध्ययन किया था। उसका निजी पुस्तकालय भी अपूर्व था। रोम में उसके दो भवन थे। वह सम्पन्न था। धनी और उच्च समाज में वह प्रसिद्ध था।

वर्जिल को जितनी ख्याति मिली उतनी अन्य किसी कवि को नहीं। वह अपनी रहस्यपूर्ण कविताओं के कारण इसाई धर्म मानने-वालों का भी आदरणीय कवि था। इसके अतिरिक्त मध्य-युग में वह जादूगर के रूप में विख्यात था। उसके सम्बन्ध में बड़ी विचित्र कथाएँ प्रचलित थीं। आठवें एकलोग्स में उसने जादूगरी के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उसी के आधार पर ये आश्चर्यजनक कथाएँ निर्मित हुईं प्रतीत होती हैं।

कहा जाता था कि रोम में आगस्टस के लिए एक आश्चर्य-पूर्ण मीनार उसने बनवाई थी। इस मीनार में शासित जाति के एक-एक प्रतिनिधि थे और उनके हाथों में एक घण्टी थी। जिस स्थान पर विद्रोह और युद्ध आरम्भ होता उस स्थान के प्रतिनिधि की घण्टी बजने लगती और रोम को तत्काल ही उस स्थान पर सेना भेजने का अवसर मिल

जाता था। उसी मीनार में एक बड़ा शीशा था जिसमें रोम के शत्रुओं की सेना दिखाई पड़ने लगती थी।

वर्जिल को पुस्तकों से कितना प्रेम था इस सम्बन्ध में एक कहानी यह प्रचलित थी कि एक बार एक प्रेत ने वर्जिल को कुछ दुर्लभ पुस्तकें दिखलाई और इसका आश्वासन दिया कि मुझे मुक्त करने पर ये पुस्तकें तुम्हें प्राप्त होंगी। वर्जिल ने उसे मुक्त किया, किन्तु जब वह उसके सामने आकर खड़ा हुआ तब वर्जिल के ध्यान में आया कि इतना शक्तिशाली और बड़ा आदमी एक छोटी-सी गुफा से कैसे बाहर हुआ। भयभीत होकर वर्जिल ने पूछा—जिस गुफा से तुम निकले हो उसमें प्रवेश कर सकते हो ?

प्रेत ने उत्तर दिया—जो कुछ तुम नहीं कर सकते हो, वह मैं कर सकता हूँ। वर्जिल के आज्ञानुसार वह प्रेत फिर उसी गुफा में चला गया और वर्जिल ने फिर उसको उसी में बन्द कर दिया क्योंकि उसे आशंका था कि कहीं वह अनर्थ न करे।

इन कथाओं से प्रकट होता है कि अशिद्धियों में भी दैवी चमत्कार के लिए वर्जिल अति प्रसिद्ध था। रोम में शिक्षा का प्रचार कैसा था उसका अनुमान तो इसी बात से किया जा सकता है कि वर्जिल के समकालीन होरेस नाम के कवि की कृतियों के लिए उसके प्रकाशक ने ४ से ७ हजार तक दास नियुक्त किये थे। जिनके द्वारा प्रतिदिन सोलह सां सचित्र हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार होती थीं।

‘एनीड’ की डीडो द्राय के पतन की घटनाओं से परिचित थी। यही कारण था कि वह उसके प्रमुख जीवित पात्र से उन्हें सुनना चाहती है। वर्जिल ने जिन घटनाओं का वर्णन किया है उससे अधिक उसकी योग्यता का परिचय उन अकथित-गाथाओं से मिलता है जिसे उसने छोड़ दिया है।

एनियस के द्वारा वर्जिल ने स्वयं अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। एनियस के चरित्र का कुछ अंश अस्वाभाविकता प्रतीत होता है। डीडो जैसी सर्वस्व निछावर करनेवाली नारी के प्रति विश्वास-

घात करके एनियस का चला जाना सचमुच पाठकों को रुचिकर नहीं लगता। होमर और वर्जिल दोनों के महान् ग्रन्थों में प्रेम-कहानी का अभाव है। 'एनीड' तो रोमन आदर्श के लिए एक ऐतिहासिक-गाथा ही है। रोमन जाति का कोई पौराणिक आख्यान नहीं था अतएव वर्जिल ने उसकी पूर्ति अपनी कृति में की है। ट्राय से एनियस का चरित्र लेकर लेटिवेना से उसका विवाह होने पर रोमन वंशावली विस्तृत होती है। कवि का उद्देश्य प्रेम-कहानी का वर्णन नहीं था, उसने तो पवित्रता और आदर्श की छाया में रोमन-जाति के अनुकूल ऐसे महा-काव्य की रचना की है।

५१ वर्ष की अवस्था में वर्जिल का देहान्त हुआ। मरने के समय उसने अपने शिष्यों को आज्ञा दी थी कि एनीड की सब प्रतियाँ जला दी जायँ। इस सम्बन्ध में जितनी खोज हुई है उसके अनुसार यही ज्ञात होता है कि वर्जिल आलोचकों से बहुत घबड़ाता था। वह अपनी कृति पर टीका-टिप्पणी नहीं चाहता था। दूसरा कारण यह भी कहा जाता है कि उसमें अगस्टस की कीर्ति-गाथा है और उसे अमर करने का सबसे बड़ा स्मारक है। पिछले समय आगस्टस के व्यवहारों से वह दुःखित था अतः यह नहीं चाहता था कि ऐसे दुष्ट के सम्मान में लिखे हुए काव्य से भविष्य में जनता भ्रम में पड़े। इन्हीं कारणों से वह 'एनीड' को नष्ट करने के लिए आदेश दे गया था।

वर्जिल ने तीन वर्ष का समय 'एनीड' के सुधार और संशोधन के लिए निर्धारित किया था, किन्तु रुग्ण-अवस्था के कारण उसकी कामना सफल नहीं हुई। उसकी मृत्यु के पश्चात् आगस्टस के आज्ञानुसार 'एनीड' अग्नि को अर्पित नहीं की जा सकी। अतः इस गौरव-गाथा के साथ ही कवि की विलक्षण प्रतिभा का हमें आज भी दर्शन मिल पाता है।

यूरोपीय साहित्य में होमर के बाद वर्जिल का सबसे अधिक महत्त्व है। 'एनीड' का कथा-भाग पढ़कर पाठक उसकी प्रकाण्ड प्रतिभा का अनुमान कर सकेंगे। उसका वास्तविक आनन्द मूल नहीं

तो कम-से-कम श्री कनिगंटन का अंग्रेजी-अनुवाद पढ़ कर प्राप्त हो हो सकता है ।

एनीड का कथा-भाग :—

महाकवि होमर के इलियड और अडेसी की भाँति एनीड द्राय की कहानी है । द्राय की विजय के पश्चात् होमर का ओडिसियेस भ्रमण करता हुआ अन्त में अपनी जन्म-भूमि पहुँचकर व्यवस्थित होता है । उसी भाँति वर्जिल द्राय के पतन के पश्चात् अपने नायक एनियस के पलायन का विवरण प्रस्तुत करता है । भूमि और समुद्र पर कितनी भयानक आपत्ति और दुर्घटनाओं के बाद किस तरह वह दैवी घोषणा के अनुसार अन्त में एक नवीन उपनिवेश का निर्माता बनता है—यही एनीड की कथा-वस्तु है ।

द्राय के युद्ध में एनकीसेज ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था । द्राय के राजा प्रायाम के पचास पुत्र थे । एनकीसीज, प्रायाम का चचेरा भाई था । नेपचुन देवता ने भविष्यवाणी की थी कि जुपिटर ने प्रायाम के वंश को वहिष्कृत किया है और एनियस और उसकी सन्तान बाद में द्रोयजन का शासन करेगी । होमर की रचना इलियड में भी एनियस और प्रायाम के पुत्रों में कुछ ईर्ष्या की भावना प्रकट होती है । वर्जिल की कथा का मूल सूत्र यही है कि प्रायाम के अन्त के बाद एनकीसीज का पुत्र एनियस इटली के सुदूर तट पर द्रोयजन के भविष्य का निर्माण करेगा । पह एक नये राज्य की स्थापना करेगा ।

वर्जिल अपने महाकाव्य एनीड की प्रथम पंक्ति में ही स्पष्ट करता है—मैं उस वीर की गाथा गाता हूँ, जिसने इटली में द्रोयजन राज्य की स्थापना की है । उसकी यात्रा और युद्ध का वर्णन ही मेरे गान का विषय है ।

द्राय के पतन के पश्चात् एनियस बीस जहाजों में द्रोयजन सैनिकों को लेकर प्रस्थान करता है । जूनो देवी के कुचक्रों के कारण समुद्र में तूफान आता है । एनियस के जहाज अव्यवस्थित होकर सभी दिशाओं में बिखर जाते हैं । कितने नष्ट हो जाते हैं । एक तो अपने नेता की दृष्टि

के सम्मुख ही नाविकों सहित जल में विलीन हो जाता है। बीस में से केवल सात जहाज लेकर एनियस कार्थेज के बन्दरगाह पर पहुँचता है। कार्थेज-निवासी जूनों की विशेष पूजा करते थे और वही उनकी आराध्य देवी थी। जूनों को ज्ञात था कि भविष्य में ट्रोयजन द्वारा ये कार्थेज-निवासी आक्रान्त होंगे। अतएव उनसे रक्षित होने के लिए उसने अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग किया, किन्तु नेपचुन (समुद्र देवता) ट्रोयजन के पक्षपाती थे और उन्हीं के प्रयत्न से शेष जहाज तूफान से मुक्त हुए।

जुपिटर की कन्या वेनस के गर्भ से एनियस उत्पन्न हुआ था। जुपिटर ने एनियस के भाग्य के सम्बन्ध में सूचना दी थी कि वह सुरक्षित लेटियम पहुँच जायगा और तीन वर्ष तक वहाँ शासन करेगा। उसका पुत्र इयूयलस अथवा एस्केनियस उसका उत्तराधिकारी होगा और लिवीनियम से राज्य गद्दी अपने नव-निर्मित नगर “अल्बान लोंगु” में परिवर्तित करेगा। तीन सौ वर्षों तक उसकी जाति वहाँ शासन करेगी। इसी काल में युद्ध देवता मार्स द्वारा रोम्पूलस और रीमस दो जुड़वा भाई उत्पन्न होंगे। रोम्पूलस द्वारा रोम का शिलान्यास होगा। देवताओं का वरदान इस नगर को प्राप्त होगा और ट्राय की क्षति की पूर्ति वहाँ होगी।

ऐसा प्रतीत होता है कि वर्जिल ने इस महाकाव्य में केवल वीरता की गाथा ही नहीं प्रस्तुत की है, बरन् उसने एक उपन्यास के रोमांस की भांति जूलियस के साम्राज्य का विस्तृत लेखा उपस्थित किया है और साथ ही आगस्टस के व्यक्तित्व की महत्ता भी प्रदर्शित की है।

कार्थेज की रानी डीडो ने उत्तरी अफ्रिका के किनारे एक नये नगर की स्थापना की थी। उसके भाई ने उसके पति की हत्या कर राज्य का शासन अपने हाथों में ले लिया था। डीडो अपने पति की चल सम्पत्ति लेकर भाग आई थी और यहाँ यह नवीन नगर बसाया था। सौभाग्य से एनियस इसी नगर के बन्दरगाह पर अपने साथियों सहित पहुँचता है।

एनियस के दुर्भाग्य और आपत्तियों की कहानी सुनकर डीडो के हृदय में दया का संचार हुआ और उसने भी अपनी विपत्ति की गाथा से उसे परिचित कराया। डीडो से एनियस को यह भी ज्ञात हुआ कि समुद्र में तूफान के कारण उसके बिल्छुड़े साथी और जहाज यहाँ पर सुरक्षित हैं। केवल एक ही जहाज नाविकों सहित नष्ट हुआ था, शेष सब सकुशल कार्थेज पहुँच गये थे।

एनियस और उसके साथियों ने पहाड़ी पर चढ़कर नवीन नगर के निर्माण का दृश्य देखा कि कार्थेज की अधूरी दीवारें किस तत्परता से बन रही हैं। जूनो के मन्दिर बनानेवाले शिल्पी किस तरह व्यस्त हैं। दोनों दीवारों और द्वार पर अंकित चित्रों को देखकर एनियस को बड़ी प्रसन्नता हुई। इन चित्रों में द्राय की घटनाएँ अंकित थीं। एनियस ने वहाँ अपने सम्बन्ध में चित्रित रेखाएँ भी देखीं। उसी समय उसके बिल्छुड़े साथी उसके सामने आते हैं। दोनों दलों ने एक दूसरे को विनष्ट समझा था। आपस में बातें होती हैं। रानी डीडो भी वहाँ उपस्थित रहती है। आगन्तुकों का पूर्ण स्वागत होता है और उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान रखा जाता है।

सन्ध्या समय प्रीतिभोज में सब सम्मिलित होते हैं। नृत्य और गान में तन्मय होकर सब लोग प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। रानी डीडो के हृदय में प्रेम का संचार होता है। वह एनियस के पुत्र को बड़े प्यार से अपने पास बैठाती है। एनियस के प्रति उसकी भावना बड़ी कोमल हो जाती है। वह उत्सुक होकर उसके सात वर्षों की यात्रा का पूर्ण विवरण सुनना चाहती है। एनियस द्राय के पतन की अन्तिम रात्रि से वर्णन आरम्भ करता है।

होमर ने इलियड में द्राय का अन्तिम वर्णन छोड़ दिया था। आडेसी में केवल संकेत से होमर ने अनेक घटनाओं की छायी उपस्थिति की थी। वर्जिल ने द्राय की उन घटनाओं पर प्रकाश डाला जिसे होमर ने छोड़ दिया था।

एनियस “काठ के घोड़े” का वर्णन करता है। शत्रुओं ने ट्रॉय वालों के लिए यह अन्तिम प्रयोग किया था। काठ का एक विशाल घोड़ा बनाया गया। उसमें नौ प्रमुख सैनिकों छिपा दिये गये यह नगर बाहर छोड़ दिया गया था। जब नगर में इसके प्रवेश के लिये लिए लोगों ने कहा तब पुरोहित लाकोकून ने उसे आपत्ति जनक बताया। इसी समय एक बन्दी उपस्थित किया गया जिसका नाम सीनन था। वह देश-द्रोही था और दो-तरफा चलता था। शत्रुओं ने उसे बलिदान के लिए चुना था, किन्तु वह अवसर पाकर भाग निकला था। उसने राजा प्रीयाम के सम्मुख घोड़े का रहस्य प्रकट कर दिया।

पुरोहित लाकोकून और उसके दोनों पुत्रों को दो बड़े समुद्री सर्पों ने डँस लिया।

“काठ के घोड़े” के अन्दर जो नौ व्यक्ति थे, उनमें एकेलीज का पुत्र फीरस और ओडिसियस भी था। रात्रि के घोर अन्धकार में बन्दरगाह में छिपी हुई सेना का संकेत पाकर द्रोही सीनन ने चुपचाप घोड़े का वह भाग खोल दिया, जिसके द्वारा सब सैनिक बाहर आ गये।

मृत हेक्टर की आत्मा एनियस को सावधान करती है। द्राय का विध्वंस निश्चित है, अतएव देवता और पवित्र अग्नि सुरक्षित रूप से उस स्थान पर ले जाना अत्यन्त आवश्यक है जहाँ एनियस नये उपनिवेश की रचना करेगा। क्योंकि इसी के द्वारा राज्य और धर्म नई पीढ़ी को प्राप्त होंगे।

रात्रि में युद्ध का चीत्कार सुनकर एनियस ने हेक्टर की चेतावनी पर ध्यान न देते हुए भी राजा और देश की रक्षा की व्यवस्था की, किन्तु दैवी प्रकोप था, राजा प्रीयाम और शेष सभी व्यक्ति मारे गये।

एनियस अपने पिता की खोज में निकला। पिता से भेंट होने पर उसने कहा कि मैं आपको अपने कन्धे पर लाद कर भागना चाहता हूँ। बूढ़े अनकीसिज ने कहा कि मैं शान्ति से द्राय में ही अपने जीवन का अन्त करूँगा। जीवन युवकों के लिए प्रिय है, मुझे तो अब शत्रुओं पर ही निर्भर रहना है।

एनियस अपने पिता को कन्धे पर लादे था । उसका पुत्र इयूलस बगल में था और उसकी पत्नी क्रऊसा उसके पीछे-पीछे आ रही थी । वे सब नगर के बाहर जा रहे थे । बूढ़े अनकीसिज के हाथ में देव-मूर्तियाँ और पवित्र अग्नि थी । बूढ़े ने इयूलस के मस्तक पर प्रकाश देखकर दैवी चमत्कार की सूचना दी । वर्जिल ने रोमन पाठकों के सम्मुख इसी संकेत द्वारा उसे जूलियस के वंश का आरम्भ कर्ता होने की घोषणा की है ।

शत्रुओं का आक्रमण भयानक था । एनियस की पत्नी का भी अन्त होता है । अपने पुत्र और अन्य साथियों के साथ वह माउन्ट-इडा के जङ्गल में जाड़े के दिन व्यतीत करता है । वहीं पर लकड़ियाँ काट कर वे लोग जहाज तैयार करते हैं और गर्मों के दिनों में वहाँ से प्रस्थान करते हैं ।

एनियस पहले थ्रेस के समुद्र तट पर एक नये नगर का सूत्रपात करता है । एक दुर्घटना के कारण फिर दूसरे स्थान पर जाता है । इस तरह वे एक्वियम के समुद्र तट पर पहुँचते हैं । यहाँ एनियस और उसके साथी विश्राम करते और खेल-कूद में सम्मिलित होते हैं । इसके पश्चात् एनियस का अपने परिचित स्त्री-पुरुषों से सञ्चात् होता है । अनेक विवरण के बाद होमर के साइल्कोपस नाम के दैत्य के स्थान पर वे आते हैं । यहाँ पर कवि ने ओडिसियस के यात्रा-वर्णन की घटनाओं का सूत्र मिलाया है । सिसली के समुद्र तट पर पहुँच कर एनियस अपने पिता का शव-संस्कार करता है ।

एनियस का वर्णन सुनकर रानी डीडो के हृदय में उसके प्रति-प्रेम जागरित होता है । वह अपनी भावनाओं से स्वयं लज्जित होती है । अपनी बहिन अन्ना से वह अपने दिल की बात खोलकर कहती है । अन्ना उसे परामर्श देती है कि यहाँ जङ्गली अफ्रिका की जाति पर शासन करने के लिए एनियस जैसे वीर पुरुष का रहना आवश्यक है अतएव उससे विवाह कर लेने पर डीडो सुखी रहेगी ।

डीडो से एनियस का विवाह होने के पश्चात् एनियस को फिर देव-वाणी द्वारा सूचना मिलती है कि तुम कॉर्थेंज से प्रस्थान कर दो और इटली में अपने नवीन राज्य की स्थापना करो ।

एनियस डीडो के प्रति कैसे विश्वास-घात करेगा, उसे छोड़कर वह कैसे जायेगा, आदि अनेक प्रश्न एनियस के मस्तिष्क में द्रुन्द करने लगे । अन्त में उसने निश्चित किया कि जो कुछ भी हो उसे अपनी जाति और संतान के भविष्य के लिए देव-वाणी का पालन करना ही उचित है । अतएव वह चुपचाप डीडो को बिना सूचित किये ही अपने साथियों सहित कॉर्थेंज से प्रस्थान करता है ।

वर्जिल ने इस परिच्छेद में डीडो का बड़ा कारुणिक चित्रण किया है । डीडो अन्तिम प्रयोग करती है । वह एनियस की सब आवश्यक वस्तुएँ एक स्थान पर एकत्र कर एक समाधि बनाती है और वहीं आत्म-हत्या कर लेती है ।

समुद्र में दूर से एनियस देखता है कि डीडो के महल से अग्नि की लपटें प्रज्वलित हो रहीं हैं । तूफान के कारण एनियस सिसली के तट पर फिर पहुँचता है । यहाँ पर वह अपने पिता के श्राद्ध की योजना प्रस्तुत करता है । सब कृत्य समाप्त कर खेल और पुरस्कार-वितरण होता है । ठीक होमर के नियमों के अनुसार सब रचना होती है, किन्तु वर्जिल ने रोमन गीतों और दौड़ इत्यादि, कुछ नवीन और अपने समय के अनुसार प्रचलित प्रणालियाँ जोड़ कर उसे विशेष आकर्षक बना दिया । इस परिच्छेद में वर्जिल ने अनेक घटनाएँ जोड़ कर कथा को रोचक बनाया है ।

एनियस वहाँ से फिर अपनी यात्रा आरम्भ करता है । इस बार वह पाताल-लोक में जाता है । सीबिल उसका पथ-प्रदर्शन करता है और बहुतेरे मृतक व्यक्तियों से परिचित होता है । यहाँ पर डीडो को देखकर वह निश्चित करता है कि उसका अन्त हो चुका है ।

पाताल लोक में सभी पात्रों को उपस्थित कर लेखक को पहले की और आगे की कथा को एक सूत्र में बाँधने की सुविधा रहती है । जिन

घटनाओं का वर्णन नहीं हो पाया है, उन्हें भी पाठकों को ज्ञात कराने में बड़ी स्वतन्त्रता रहती है। होमर की भांति वर्जिल ने भी इससे पूरा लाभ उठाया है। विभिन्न श्रेणी के वीर, कायर और अपराधी सभी यहाँ आकर अपने भाग्य का निर्णय प्राप्त करते हैं। पेथागोरियन सिद्धास्तों के अनुसार एक हजार वर्ष तक आत्मा मृतक लोक में रहने के पश्चात् फिर पृथ्वी पर नये शरीर में उत्पन्न होती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्जिल भी इन बातों पर विश्वास करता था। मृतकलोक में एनियस का पिता रोम के भावी शासकों की सूची प्रकट करता है। उन्हीं आकृतियों में एक अत्यन्त सुन्दर युवक एनियस के सम्मुख आता है। वह पूछता है कि तुम कौन हो। एनियस को विदित होता है कि वह व्यक्ति आगस्टस की बहिन ओक्टविया का पुत्र मार्कलस है।

इस स्थल का वर्णन सुनकर ओक्टविया को मूर्च्छा आ गई थी। इसी अंश के लिए केवल २७ छन्दों पर वर्जिल को लगभग तीस हजार रुपया पुरस्कार ओक्टविया ने दिया था। आगस्टस ने वर्जिल को आज्ञा दी कि आज इससे आगे न पढ़ो। वर्जिल ने उत्तर दिया कि मैं सब विषय पूर्ण कर चुका हूँ। इससे अधिक मुझे छूटे में कुछ नहीं कहना है। पूरा वर्णन करने के पश्चात् वर्जिल संकेत करता है कि यह सब स्वप्न की गाथा है।

स्वयं वर्जिल की दृष्टि में एनीड का दूसरा, चौथा और छठा सर्ग विशेष महत्त्वपूर्ण था क्योंकि आगस्टस के आग्रह करने पर उसने यही तीनों सर्ग उसके सम्मुख पढ़ने का निश्चय किया था। हम यहाँ तक की कथा का सारांश अपने पाठकों के सम्मुख रख चुके हैं। अब आगे संक्षेप में ही शेष कथा समाप्त करेंगे क्योंकि स्थानाभाव के कारण विस्तार करना ठीक नहीं है।

एनियस फिर इटली पहुँचता है। वहाँ उसे उस स्थान के पूर्व निवासियों से युद्ध करना पड़ता है। अनेक घटनाओं और चरित्रों का

विकास होता है, कितने नये पात्र आगे बढ़ते हैं; लेखक अपनी कृति को रोचक बनाने में बड़ी कुशलता से लेखनी चलाता है।

दोनों तरफ से निरन्तर युद्ध के कारण जनता त्रस्त हो गई थी। अन्त में निश्चय हुआ कि एक राजकुमारी के लिए व्यर्थ ही इतने सैनिकों की जान जाय इससे यह कहीं अच्छा है कि दोनों प्रधान आपस में द्वन्द्व कर निर्णय कर लें कि कौन विजयी है। एनियस शपथ लेकर प्रतिज्ञा करता है कि यदि विजय टर्नस की होगी। तो ट्रॉयजन सेना इवेन्डस की बस्ती में वापस चली जायगी और लेटियम से युद्ध नहीं करेगी। यदि एनियस स्वयं विजयी होगा तो वह लेटियम के साथ पराजित जाति के रूप में व्यवहार नहीं करेगा।

एनियस की शक्ति से टर्नस भयभीत होकर द्वन्द्व के लिए प्रस्तुत नहीं होता। फिर युद्ध होता है। एनियस घायल होकर भी बड़ी तत्परता से युद्ध करता है। अन्त में उसके आक्रमण से टर्नस का बचना असम्भव हो जाता। लविनीया का प्रेमी टर्नस मारा जाता है। कथा की चरम सीमा यहीं समाप्त होती है। लेटियम की राजकुमारी विजयी को पुरस्कार के रूप में प्राप्त होती है। ट्रॉयजन इटाली में रहने लगते हैं। दो जातियाँ एक ही नाम से सम्मिलित होती हैं। ट्रॉयजन नहीं लेटिनस संसार का शासन करेंगे। इस भाँति वर्जिल ने कथा को पौराणिक रूप देकर ट्रॉय से सम्बन्ध स्थापित कर अपने देश के शासकों के वैभव और पराक्रम का वर्णन प्रस्तुत किया है।

अन्तिम विजय प्राप्त करने के पूर्व जब एनियस युद्ध के लिए जाता है उस समय वह अपने पुत्र का आलिङ्गन करता है। उसे चूमता हुआ कहता है—बेटा, अपने पिता से महान बनने की शिक्षा ग्रहण करो।

इन शब्दों में भी विषाद की रेखाएँ अंकित होती हैं।

कथा के अन्तिम भाग से स्पष्ट होता है कि पिता नहीं पुत्र लेटियम के शासन का अधिकारी होता है और सुख और शान्ति से राज्य करता है। एनियस के अन्तिम समय तक उसे शान्ति नहीं मिली।

विदेशी होने के कारण जनता उसके सम्मुख झुकी नहीं। अन्तिम युद्ध न्यूमिसियस नदी के तट पर होता है। एनिसस वीरतापूर्वक युद्ध करता है और अन्त में अनेक वीरों की भाँति विलीन हो जाता है। यह ज्ञात नहीं होता है कि वह 'दैवीशक्ति' द्वारा स्वर्ग-गमन करता है अथवा नदी के देवता द्वारा पकड़ा जाता है।

होरेस

कैटूलस के समान होरेस भाव प्रधान कवि था। वह शान्त, गम्भीर, बौद्धिक और व्यवस्थित उक्तियों का कवि था। छन्दों तथा पदावलियों का प्रयोग वह अत्यधिक सतर्कता से करता था। उसका सिद्धान्त था कि जीवन-यापन शान्त भाव से करना चाहिए। होरेस को प्रसिद्धि उसकी मार्मिक और तथ्यपूर्ण उक्तियों के कारण अधिक हुई। उसने साहित्य की जिन विभिन्न धाराओं और शैलियों में कविता की उन सभी में उसे सफलता प्राप्त हुई।

होरेस का पिता पहले दास था। बाद में "टैक्स कलेक्टर" के रूप में जो कुछ धन उसने एकत्र किया था वह सब उसने अपने पुत्र होरेस की शिक्षा में व्यय किया। यही नहीं, वह प्रति दिन अपने पुत्र को विद्यालय ले जाता और ले आता था। होरेस के पिता के प्रयत्नों के कारण ही १६ वर्ष की अवस्था में होरेस एथेंस के यूनानी दार्शनिक और कवियों के सम्पर्क में आया। कवि के रूप में वर्जिल जब अवतरित हो रहा था तब होरेस की कविताओं ने उसे आकर्षित किया। वर्जिल के सहयोग से ही उसे अधिक लाभ हुआ और वह अपने को सरस और संगीतमय बना सका।

होरेस और वर्जिल की कविताओं पर सम्राट आगस्टस मुग्ध था। वह होरेस को अपने साथ ही रखना चाहता था और इसके लिए उसने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु होरेस अपनी स्वतन्त्रता में किसी प्रकार की

बाधा नहीं पसन्द करता था। उसकी कविताएँ अत्यन्त प्रभावशाली होती थीं। उनमें विचारों की प्रधानता रहती थी, जैसे—हम लोगों को इस संसार से चले जाना होगा। यह भी निश्चित है कि एक दिन अपने घनिष्ठ तरुवर की छाया और अपनी दयालु पत्नियों से बिछुड़ना होगा। जो वृक्ष हम आज लगाते हैं वे भी हमारा साथ नहीं देंगे। केवल वही दुखी और मौन साइप्रस का वृक्ष जो हमारी कब्र के स्थान को अपनी छाया में ढके रहेगा।

होरेस की कविताएँ पढ़ने पर उमर खय्याम की रुबाइयों की भांति आनन्द आता है। होरेस महान् कवि ही नहीं महान् व्यक्ति भी था। उसकी कविता में उसके व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है वह अत्यन्त उच्च एवं सम्माननीय है। लैटिन गीति काव्य का होरेस अन्यतम कवि था।

होरेस के बाद उसकी कविताओं का प्रचार इतना बढ़ा कि होरेस की पुस्तकों का प्रकाशक, जो एक मुक्त यूनानी दास था, रोम के एक विशाल भवन में निवास करता था और आवश्यकतानुसार चार से सात हजार आदमी उसके यहां काम करते थे। वे सभी दास थे। प्रकाशक प्रतिदिन होरेस की कविताओं की पन्द्रह-सोलह सौ सचित्र प्रतियां प्रकाशित करता था।

‘एलिजी’ कविता की धारा

होरेस के ही समसामयिक एक कवि सम्प्रदाय का भी उल्लेख करना अनुचित न होगा। ईसा के प्रादुर्भाव के थोड़े ही पूर्व ‘एलिजिस्ट्स’ कवियों का एक समुदाय था। ‘एलिजिस्ट्स’ से साधारणतः अभिप्राय उन कवियों से होता है जो मित्र के निधन पर उसके गुणों का उल्लेख करते हुए शोक-प्रकाश करते हैं। प्रायः ‘एलिजी’ का विषय मृत्यु ही हुआ करता था, किन्तु वास्तव में बात यह न थी। प्राचीन और प्रथम एलिजिस्ट कवि गैलेस ने एलिजी का विषय मृत्यु नहीं प्रेम रखा

है। लेकिन अन्त में एलिजिस्टों के समुदाय का ही विशाल बहुमत हो गया। एलिजिस्ट कवियों में तीन प्रोपरटियस, टिबुलस तथा ओविड-अधिक विख्यात हैं।

प्रोपरटियस (५२ ई० पू०) ऐसी स्त्री पर आसक्त था जिससे वह विवाह नहीं कर सकता था। उस समय के रोमन कानून द्वारा वेश्या से विवाह करना नियम विरुद्ध था। प्रोपरटियस के मस्तिष्क में यूनानी विचार धारा बहती थी। वह जीवन को यूनानी दृष्टिकोण से ही देखता था। उसके विचार धनिकों के शासन का समर्थन करते थे। उसका जीवन क्रूर बन गया था, वह उसी भांति अपनी भूमि का कर (मालगुजारी) भी वसूल करता था। यह सब होते हुए भी उस सुन्दरी की आराधना में उसकी कविता अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी थी।

टिबुलस (५४-१६ ई० पूर्व) का प्रेम डेलिया नामक एक विवाहिना स्त्री से हो गया था। टिबुलस का पिता सम्पन्न था और वह अपने पुत्र के लिए पर्याप्त भूसम्पत्ति छोड़ गया था। टिबुलस ने अपना शेष जीवन कविता और प्रेम करने में व्यतीत किया। उसका देहान्त केवल पैंतीस वर्ष की अवस्था में हुआ था।

ओविड (४३-१८ ई० पू०) एलिजिस्ट कवियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ उसने स्वयं लिखा है कि गैलस का उत्तराधिकारी टिबुलस था, और उसका उत्तराधिकारी प्रोपरटियस हुआ तथा मैं उस परम्परा में क्रम से चतुर्थ हूँ।

ओविड की प्रख्यात कृति ‘आर्ट ऑफ लव’ है। विद्वानों ने एक स्वर से कल्पना, स्पष्टता और विशद् भावना के लिए उस कृति को सराहना की है। ओविड ने अपनी पुस्तक में नैतिक दृष्टि से नहीं विद्वान और कवि की दृष्टि से विचार किया है।

ईसा की प्रथम शताब्दी के प्रारम्भ में आगस्टन काल के पश्चात् लैटिन कविता पतनोन्मुख हो गई। उसका दिन-दिन ह्रास होता गया। लैटिन कविता का अवनतिकाल अन्धकारमय अवश्य था, किन्तु अमावास्या की रात्रि की तारकमंडली की क्षीण ज्योति के समान उस समय भी

अनेक कवि हुए। साहित्य की सुनिश्चित गति स्थिर करना सम्भव नहीं, वह तो जीवन के उत्थान-पतन के साथ-साथ उन्नत अवनत होता रहता है। यही बात लैटिन कविता के सम्बन्ध में भी हुई। रोमन साम्राज्य की भांति लैटिन कविता के भी पतन में शताब्दियों का समय लगा। इस अवधि में कोई महान कवि नहीं हुआ, किन्तु साधारण श्रेणी के अनेक कवि हुए।

ल्यूकन

ईसा की प्रथम शताब्दी में लैटिन नाटककार सेनिका का भतीजा ल्यूकन सफल व्यक्ति और कवि हुआ। बीस वर्ष की अवस्था में उसकी ख्याति रोमभर में फैल चुकी थी। वह नीरो के दरबार का कवि था। उसका चाचा सेनिका नीरो के विरुद्ध षडयंत्र करने के अपराध में निर्वासित किया गया था। ल्यूकन भी नीरो के संदेह का पात्र हुआ। अन्त में अपना जीवन कठिनार्थ में उलझा देखकर ल्यूकन ने डाक्टर को बुला कर अपने पैर को नसें कटवा दीं। इस तरह उसके जीवन का अन्त हुआ।

ल्यूकन की रचना 'फारसेलिया' उस काल से लेकर मध्य युग तक यथेष्ट ख्याति-प्राप्त कृति मानी जाती है। फ्रेंच और अंग्रेजी साहित्य पर भी उस कवि का प्रभाव पड़ा।

इस समय एक लैटिन महाकाव्य का प्रणेता स्टेटियस हुआ। अनेक पाश्चात्य साहित्यिक स्टेटियस को वर्जिल से अधिक महत्व प्रदान करते हैं। उसकी रचना 'थेवियट' का आंशिक अनुवाद अंग्रेजी कवि पोप तथा ग्रे ने किया है।

इसी काल में दो श्रेष्ठ व्यंग्य कवि हुए—एक का नाम मार्शल और दूसरे का जूविनल था। रोम के साहित्य में पहले से ही व्यंग्यात्मक रचनाएं हो चुकी थीं, ऐसे साहित्य का स्थान पूर्व से ही बन चुका था,

उसके अनुकूल वातावरण तैयार था। होरेस ने व्यंग्यात्मक कविताओं के प्रणयन में काफी सफलता प्राप्त की।

मार्शल (४०-१०४ ई०) तथा जूविनल (६०-१४० ई०) ने सामाजिक कुरीतियों और बुराइयों को अपने व्यंग का लक्ष्य बनाया।

मार्शल की व्यंग्य-पूर्ण छोटी कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें रोमन जीवन का वास्तविक चित्रण है। कवि ने सच्चाई के साथ जैसा जीवन-दर्शन किया उसी प्रत्यक्षानुभूति के आधार पर रचना की। उसकी कृति में अन्यन्त परिष्कृत रूप में भावधारा दृष्टिगत नहीं होती है किन्तु उसमें यथेष्ट अभिव्यंजना है। मार्शल के बाद के जिन कवियों ने 'इपीग्राम'—छोटी व्यंग्यात्मक-कविताएं की उन सभी में मार्शल की प्रतिभा का प्रभाव स्पष्टः पारिलक्षित होती हैं।

जूविनल मार्शल की अपेक्षा कटु स्वभाव का व्यक्ति था। दिखावा, कृत्रिमता और अत्याचार का वह घोर विरोधी था। अपनी रचनाओं के प्रति उसका कथन है कि धृणा और धिक्कार की भावना ही कविता की जननी है। इस कवि में जो रुद्धता है, वह जीवन की वास्तविक रुद्धता है। किसी के विकृत और वास्तविक रूप के लिए दर्पण दिखाने वाला व्यक्ति उत्तरदायी नहीं हो सकता। शब्दों पर अधिकार, उनमें भाव संवहन कराने की शक्ति तथा शब्द-चित्रों में विभिन्न भावों के सन्निवेश की आसाधारण प्रतिभा उनमें थी।

मध्य युग में लैटिन कविता की प्रगति का पूर्ण परिचय प्रायः नहीं मिलता। लैटिन एन्थोलाजी से यह प्रकट है कि धीरे-धीरे इसका हास होता गया। कुछ कवियों ने लैटिन भाषा के आदि कवि इनीयस से ईसा की मृत्यु के एक हजार वर्ष पीछे तक के कवियों की रचनाएं संगृहीत की हैं। इनमें सबसे सुन्दर वह कविता है, जिसका शीर्षक 'विजिल आफ वेनस' है। इसमें वेनस माता के वसन्तोत्सव का संगीत है। इसके रचयिता का नाम अज्ञात है और इसके रचना काल का भी अनुमान ही किया जा सकता है। जो हो, इस कविता से रोमवालों की आसाधारण कल्पना-शक्ति का परिचय मिलता है। काल की गति

के साथ लैटिन कविता का भी एक दिन पतन हो गया, किन्तु इसके पश्चात् भी अनेक शताब्दियों तक लैटिन गद्य व्यवहारिक भाषा के रूप में प्रयुक्त होता रहा ।

दर्शन शास्त्र

लैटिन साहित्य के विकास का विवरण प्रस्तुत करने के पहले वहाँ के दार्शनिक मतों की रूप-रेखा समझ लेना आवश्यक है, क्योंकि साहित्य की आत्मा ही दर्शन है ।

स्टोइक दार्शनिक पोसिडोनियस का शिक्षक पानेटियस था । पानेटियस की मृत्यु ई० पू० ११२ में हुई और उसके शिष्य पोसिडोनियस की मृत्यु ई० पू० ५० में हुई । स्टोइक दार्शनिक पोसिडोनियस सिसरो और पोम्पी महान् का शिक्षक था । इस प्रकार रोमन कला और राजनीति पर स्टोइक दर्शन का प्रभाव स्पष्ट दिखायी पड़ता है । रोमन गद्य की विशेषता शब्दों और विषयों की स्पष्टता थी । सिसरो ने इस युग का चरम विकास किया और उसके बाद के लेखकों ने उसका अनुकरण किया । पोसिडोनियस और पानेटियस जेनो के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी थे । जेनो एथेंस के 'स्टोआ थोइलिकी' में पढ़ाता था । इसी भवन के कारण उसके दर्शन का नाम स्टोइक पड़ा ।

स्टोइक दर्शन के समर्थकों में वामपक्षीय राजनैतिक और धार्मिक प्रवृत्तिवाले लोग थे । स्टोइकों में सर्व प्रसिद्ध सम्राट मार्कस् ओरेलियस था । इस प्रकार उसके समय में सम्पूर्ण साम्राज्य की शक्ति स्टोइक दर्शन को प्राप्त थी । सेनेका और सेंट पाल द्वारा इसाई धर्म की एक शाखा में स्टोइक दर्शन का जो अन्तर्भाव कराया गया उसका सारांश था—सद्गुण सद्गुण के लिए ।

दर्शन का दूसरा सम्प्रदाय एपिक्यूरस का दर्शन था । इसे दक्षिण पक्षीय राजनीति का समर्थन प्राप्त था । इसके समर्थकों में कविल्युक्रेटियस प्रमुख हैं तथा उनके अतिरिक्त सीज़र, होरेस, प्लीन्ही छोटे

आदि अनेक महान् व्यक्ति इसके पोषक हैं। एपिक्यूरस का जन्म यूनानी माता-पिता से हुआ था। उसका जन्म ३४१ ई० पू० और मृत्यु २७० ई० पू० हुई। इस प्रकार वह स्टोइक दार्शनिक जेनो का समसामयिक हुआ। किन्तु उन दिनों उसके विरोधी स्टोइकों का प्रभुत्व था, इसलिए उसकी रचनाओं की रक्षा की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अतः आज उन पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं है।

इस प्रकार एपिक्यूरस की रचनाओं के लुप्त हो जाने या उसके बाद के विजयी शासकों द्वारा उसकी भ्रान्त व्याख्या करने से एपिक्यूरियन दर्शन का अभिप्राय केवल सुख-प्राप्ति का साधन समझा जाने लगा। वास्तव में देखा जाय तो यह असम्भव जान पड़ता है, क्योंकि एपिक्यूरस के समर्थकों में रोम के उच्चकोटि के विद्वान और कवि थे। जहाँ अरस्तू विज्ञान को ज्ञान के लिए आवश्यक समझता था, वहाँ एपिक्यूरस ज्ञान को मनुष्य का सेवक समझता था। जिस प्रकार अरस्तू के साथ यूनानी दार्शनिकों की परम्परा का अन्त होता है, उसी प्रकार एपिक्यूरस से रोमन बौद्धिकता और क्रियाशीलता का आरम्भ होता है। उसका जन्म सम्भवतः स्टोइक दार्शनिक जेनों के कुछ वर्ष बाद हुआ था, इसीलिए रोम के दर्शन साहित्य में जेनों की प्रधानता स्वीकार करनी पड़ती है।

एपिक्यूरस धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में अत्यन्त संशयशील था। वह निरपेक्ष सृष्टि और विनाश से सम्पूर्णतः असहमत था। उसके सिद्धान्तों को सन्तोष में इस तरह रखा जा सकता है—बुराइयों से भरे इस संसार में किसी देवता की सृष्टि कैसे हो सकती है? हमारे चारों ओर मरुभूमि, जंगल, बर्फाले पर्वत, दलदल और दम घोटनेवाली हवा भरी है। कांटे, वात्या और भूँसा, ओले, ज्वालामुखी खूंखार पशु, बीमारी और मृत्यु सब तरफ फैली हुई है, क्या यह सब इन बातों का प्रमाण नहीं है कि इनका संचालन किसी दैवी शक्ति द्वारा नहीं हो रहा है। यह सत्य है कि सभी जातियाँ ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करती हैं, इसलिए उसको अस्वीकार करना व्यर्थ है; किन्तु

जो शक्ति दिशाओं में निर्बाध और आनन्दपूर्वक विचरण करती है और मानव-प्रवृत्तियों तथा निर्बलताओं से रहित है वह मनुष्य की क्रूरता, उसकी हत्या और त्याग, उसकी प्रार्थना और पूजा से कैसे द्रवित हो सकती है ? इसीलिए यद्यपि हम उसके अस्तित्व में विश्वास भी करते हैं तथापि वह तर्कसंगत नहीं हो सकता । हमें यह भी नहीं समझना चाहिए कि वह हमारे मरणोत्तर भाग्य का निर्णय करती है । इस शक्ति का हमसे कोई सम्बन्ध नहीं है । अतएव न हमें किसी जाति के अत्याचार से घबड़ाना चाहिये न अनन्त आनन्द की ही आशा करनी चाहिए । आत्मा चेतना है और चेतना भौतिक है । अतः आत्मा भौतिक है । वह शरीर और केवल शरीर से ही प्रभावित होती है । इसका प्रमाण यह है कि वह शून्यता, उन्माद, बीमारी आदि से प्रभावित होती है । इसलिए अवास्तविक भय से आतंकित हो हमें अपना वास्तविक लक्ष्य नहीं भूलना चाहिए जो सुख ही है । हमें मानसिक सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि शारीरिक सुख अत्यन्त क्षणिक होता है । अति सर्वत्र वर्जित है, क्योंकि उससे दुःख होता है, जो सुख का विपर्यय है । दूसरी ओर औषध और शल्योपचार आदि से होनेवाला कष्ट सहना चाहिये क्योंकि अन्ततः वह सुख के लिए ही होता है । सद्गुण उसे कहते हैं, जिससे बुद्धिमान् लोग आनन्द की ओर प्रवृत्त होते हैं । वह स्थायी अवस्था भी हो सकती है, जिसको प्राप्त कर लेने पर मनुष्य संकट और दुर्भाग्य से बच जाता है ।

भौतिक जगत् के विश्व जनीन अन्वेषणों और असंख्य उदाहरणों से एपिक्यूरस के इस दर्शन की पुष्टि हुई । इस प्रकार वह शिष्टतर रोमन संसार में प्रसिद्ध हुआ । स्टोइक दर्शन बाद के रोमन काल में ही कुछ ऐसा हो गया कि सम्भवतः जेनो ही उसको स्वीकार नहीं करता था । सद्गुण और शान्ति, सन्तोष और संकट से त्राण आदि के लिए जितने संयम की आवश्यकता थी उस पर लूकीटियस से लेकर होरेस तक के लेखकों ने पर्याप्त विचार किया ।

यूनानी दर्शन से रोमनों ने जो कुछ लिया उसमें आत्मा के अमरत्व पर अविश्वास सर्व प्रमुख है। दूसरी ओर आत्मा के अमरत्व और मरणोत्तर अवस्था के सिद्धान्त पूर्वीय देशों के धर्मों से रोम में आये। इनमें मुख्य प्राचीन मिस्री, भारतीय और चीनी, बौद्ध और दूसरी फिलिस्तीनी जातियों के धर्म हैं। उसी समय एकेश्वरवाद आया। यह स्पष्ट है कि बाद के रोमन जनतन्त्र में ओलिम्पस के देवताओं पर अविश्वास किया और एकेश्वर की सत्ता में विश्वास किया जाने लगा था।

उस समय एलेक्जेन्ड्रिया के फिलो नामक एक यहूदी ने यहूदी धर्म का अफलातूनी दर्शन से समन्वय करने का प्रयत्न किया। उसका मुख्य सिद्धान्त 'शब्द' था। इस विषय में वह चीन के लाओचे से मिलता-जुलता था। उसका 'शब्द' उक्त चीनी दार्शनिक के 'शब्द' की तरह यहूदी स्मृतिकार के कानून, विचार और ईश्वर के साथ-साथ अफलातून के कानून, विचार और उसके सर्व शक्तिमान् ईश्वर को भी पवित्र कर देने वाला है। फिलो का जन्म ई० पू० २० में हुआ था। इस प्रकार सेंट जोन के जन्म के समय उसकी अवस्था २४ वर्ष की थी। सेंट जोन ने भी लोगोसेका सिद्धान्त-अवतारी ईश्वर का—उत्साह पूर्वक स्वीकार किया, जो उसके वाइविल का प्रथम प्रकाश बना।

उस समय से ईसा की तीसरी शताब्दी तक एलेक्जेन्ड्रिया मुख्यतः मूर्तिपूजकों, ईसाई दार्शनिकों और वैज्ञानिकों का केन्द्र रहा। २४४ ई० में प्लोटिनस नामक मिस्री दार्शनिक यूनानी-रोमी एकेश्वरवादी दर्शन का मुख्य अनुगामी रहा। उसका यह दार्शनिक सम्प्रदाय प्रायः एक धर्म का स्वरूप ग्रहण किये हुए था। उसके दर्शन का मुख्य सिद्धान्त यह था कि सभी सृष्टि पदार्थ ईश्वर नामक केन्द्रीय शक्ति से उत्पन्न हुआ है। आत्मा के अमरत्व के विषय में उसका मत यह था कि आत्मा इस पृथिवी पर रहते हुए दर्शन के द्वारा पवित्र होता है और इसके बाद कब्र से दूर जाकर वह फिर पवित्र होता है। इस प्रकार अपना भौतिक स्वरूप छोड़ कर वह अनन्त तत्व में विलीन हो जाता है।

प्लोटिनस का दर्शन धनिक वर्ग में इतना प्रसिद्ध हुआ कि सम्राट गालियेनस और साम्राज्ञी सालोनिना, दोनों उसके शिष्य हो गये। उसने पचीस वर्ष की अवस्था के बाद ही लिखना आरम्भ किया। मृत्यु से पहले उसने चौवन ग्रन्थ लिखे जो अपने पूर्ण रूप में आज तक रक्षित हैं। वह २७० ई० में मरा और उसके बाद उसका प्रमुख शिष्य पोरफिरी उसके संप्रदाय का प्रमुख व्यक्ति हुआ। यहीं से ईसाई धर्म के आरम्भ के परिणाम स्वरूप एक प्रकार का अर्थ रहस्यात्मक देवताओं का जन्म हुआ जो प्राचीन ओलिम्पिक देवताओं से मिलते जुलते थे।

प्लोटिनस के शिष्य जाम्ब्लिक्स ने इसे आगे बढ़ाया। उसने देवताओं के समूह को पुनः प्रतिष्ठा प्रदान की। रोमन एकेश्वरवाद की प्रवृत्ति देखकर उसने इन देवों के अधिदेव के रूप में जुपिटर को अधिष्ठित किया। जाम्ब्लिक्स शामी था, इसलिए उसने पोरफिरी के अभिनव अफलातून दर्शन में शामी विचारों का प्रयोग किया जो किसी प्रकार से सम्राटों के लिए अस्वीकार्य नहीं हुआ। ये सम्राट उस समय अफ्रीकी या एशियाई वंश के थे। प्रोल्क्स के साथ न केवल अफलातूनी या अभिनव अफलातूनी दर्शन का अन्त होता है अपितु सभी प्राचीन विचारों का ही अन्त हो जाता है। वह प्लोटिनस का अन्तिम उत्तराधिकारी था। वह जादू तक का प्रयोग करता था। उसकी मृत्यु के बाद एथेंस का उसका शिक्षा केन्द्र सम्राट जस्टिनियन द्वारा बन्द कर दिया गया। दो शताब्दियों तक वह साम्राज्य ईसाइयों के अधिकार में रहा। सिद्धान्तों का युग बीत गया था और मध्य युग की कट्टरवादिता का भयानक राज्य आरम्भ होने लगा था।

इन दार्शनिक मत मतान्तरों से शुद्ध साहित्य का सृजन बहुत कम हुआ। पांचवीं शताब्दी के सेंट आगस्टीन की रचनाएँ क्लासिक रचनाओं का अन्त समझी जाती हैं। ४३० ई० में कॉन्स्टानटाइन ने ईसाई धर्म को साम्राज्य धर्म घोषित किया। उसकी भाषा लैटिन हो गयी और पश्चिमी जगत् के आध्यात्मिक और नागरिक जीवन की कुंजी

गिरजों के आधिपत्य में आ गई। कोंस्टानटाइन ने अपनी राजधानी विजेन्टियम बनायी जिसका नाम बाद में कुस्तुन्तुनिया पड़ा। १०वीं शताब्दी तक मुसलमानों ने मध्य-सागरीय और यूनानी तटों पर अधिक से अधिक अधिकार करना आरम्भ किया और कुस्तुन्तुनिया अधिक से अधिक यूनानी कवियों और लेखकों की रचनाओं की निधि बनता गया। इस प्रकार जब १४५३ ई० में मुहम्मद द्वितीय ने कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार किया तब यूनानी लेखक अपनी पाण्डुलिपियों के साथ वहाँ से भागे और उसी समय पश्चिमी जगत् में पुनर्जागरण का आरम्भ हुआ। इसी से पश्चिम में अफलातूनी दर्शन का पुनः आविर्भाव हुआ। अरस्तू के 'अनुभववाद' ने रोम के विनाश से लेकर अमेरिका की खोज तक के मध्य युग की विचार धाराओं को प्रभावित किया।

रोमन इतिहास

जूलियस सीजर

रोम के सम्राट जूलियस सीजर ने स्वयं इतिहास-साहित्य का निर्माण किया था। उसकी लिखी दो पुस्तकें हैं—गौलिक वार और सिविल वार। इन दो युद्धों की व्याख्या उसने अत्यन्त स्पष्ट, सरल और अनुभूतिपूर्ण शैली में की है। इसी सुगम और सुबोध शैली के कारण गौलिक वार रोमन भाषा के प्रारम्भिक शिक्षार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक नियत की गई है। गौलिक वार में अत्यन्त ओज पूर्ण गाथाएँ हैं, जिनमें भाषा के धारा-प्रवाह के साथ विशेष आकर्षण है।

गौलिक वार में रोम के उत्तरी प्रान्तों के सम्बन्ध में विवरण हैं। दूसरी कृति—सिविल वार-से रोम के आन्तरिक राजनीतिक कार्यों की झलक मिलती है। यह अपने विषय की अकेली पुस्तक है। जूलियस सीजर ने जो साहित्य लिखा उसके पठन से यह पूर्णतया प्रकट हो जाता है कि उसने रोम की जनता के सम्मुख, अपने कार्यों का औचित्य

सिद्ध करने के लिए ही ये व्याख्यायें प्रस्तुत की थीं। यह ध्यान देने की बात है कि जूलियस सीजर ने अपने सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उसमें न तो कहीं आत्मप्रशंसा की झलक मिलती है और न तथ्यों को ही विकृत रूप में रखा है। कुशल कलाकार और राजनीतिज्ञ के दृष्टिकोण से ही उसने अपनी कृतियाँ लिखी थीं।

जूलियस सीजर की प्रसिद्धि इतनी हुई कि प्राचीन रोम, जर्मनी और रूस के सम्राटों का नाम 'सीजर' के नाम पर रखा जाने लगा। ब्रूटस तथा अन्य देश भक्तों द्वारा जूलियस सीजर की हत्या मानव इतिहास की एक करुण और रोमांचक कथा है। इतिहासकारों ने जूलियस सीजर को इतिहास का अद्वितीय व्यक्ति माना है। जूलियस सीजर की रचनाएँ व्यक्तिगत संस्मरण के रूप में हैं, जिनमें उसने अपने सहस्र और शौर्यपूर्ण घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया है और जिसका निर्माण भी स्वयं उसी ने किया था।

सलूस्ट

सीजर का समसामयिक और समर्थक सलूस्ट रोम का महान् इतिहासकार माना जाता है। उसके सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी प्राप्त हुई है फिर भी वह यूनानी भाषा के हिरोडोट और सेफो के समकक्ष माना जाता है। रोमन साम्राज्य के अफ्रीकन उपनिवेश न्यूमीडिया का वह गवर्नर था। ई० पू० ४४ वें वर्ष में सीजर की मृत्यु के पश्चात् सलूस्ट अपने निवासस्थान पर शासक के पद से अवकाश ग्रहण कर लौट आया और शान्ति पूर्वक एक विद्वान की भांति जीवन व्यतीत करने लगा।

सलूस्ट की अभिव्यंजना-शैली कलात्मक थी। उसकी दो रचनाएँ प्राप्त हैं। उनमें एक में कैटीलाइन के षडयंत्र की चर्चा है और दूसरी में रोमन तथा न्यूमीडिया के राजा जुगुर्थी का युद्ध वर्णित है। सीजर और सलूस्ट की पुस्तकों द्वारा रोम के इतिहास की स्पष्ट और यथार्थ

भलक मिलती है। रोमन साम्राज्य के विस्तार का भी स्वरूप-दर्शन इन पुस्तकों से होता है। सीजर की पुस्तक में उत्तर दिशा और सलूस्ट की पुस्तक में दक्षिण दिशा में रोम के प्रसार का विवरण है।

लेवी

लेवी ने आदिकाल से अपने समय तक का रोम का इतिहास लिखने का प्रयत्न किया। उसका लिखा हुआ रोम का इतिहास वास्तव में लैटिन साहित्य के स्वर्ण युग का एक महान् 'मोनुमेण्ट' है। लेवी की लिखित एक सौ बयालीस पुस्तकों में से केवल पैंतीस पुस्तकें ही प्राप्त हैं, फिर भी अपनी इसी चतुर्भांश रचना के कारण आवे दर्जन महान् इतिहासकारों में उसकी गिनती होती है। पाश्चात्य आलोचक लेवी को रोम का महान् वीरगाथा लेखक मानते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि उसकी शैली में उत्कृष्ट कवित्व विद्यमान है।

उसकी रचनाओं से उसका व्यक्तित्व स्पष्ट भलकता है। लेवी बड़ी कुशलता से चरित्रों का चित्रण करता था। ईसा पूर्व रोम के ऐतिहासिक स्वरूप दर्शन का समस्त श्रेय लेवी को ही है। उसने पूर्ववर्ती इतिहासकारों और इतिहास को अपनी लेखनी से नवीन स्वरूप प्रदान किया। दार्शनिकों की भांति लेवी ने अपने काल को निराशायुक्त दृष्टि से देखा और अतीत की गौरव-गाथा का गान किया। जन्मजात इतिहासकारों की यही विचार धारा रही है। इसी परम्परा का परिचालन करते हुए लेवी ने इतिहास की रचना की है। व्यापक दृष्टिकोण और विद्वत्ता के परिणाम स्वरूप लेवी ने पूर्ववर्ती रोमन इतिहासज्ञों का समस्त सार ग्रहण कर लिया और भावी इतिहासकारों के सम्मुख इतिहास का आधार-स्तम्भ स्थापित कर दिया।

टेसिटस

टेसिटस ने ट्यूटन जाति के पूर्वजों का वृत्तांत अपनी पुस्तक 'जरमैनिया' में लिखा है। रोम में विलासी सामाजिक जीवन के सम्मुख नैतिक उदाहरण उपस्थित करने के लिए टेसिटस ने जर्मन जाति के गुणों का चित्रण किया है। उसने अपनी शताब्दी का भी इतिहास लिखा है। नैतिकता का वह पोषक और समर्थक था। सम्राटों के अपराधों के विवरण भी उसने अपने इतिहास में निर्भीकता से दिये हैं। रोम के सच्चे नागरिक होने के नाते वह साम्राजवादी मनोवृत्ति का और रोमन चरित्र के गुणों का प्रशंसक था।

टेसिटस का कथन है—इतिहासकार का सबसे बड़ा कर्तव्य है कि कोई भी महत्व की बात वह उपेक्षित न होने दे। प्राचीन इतिहास-वेत्ताओं की भांति उसकी प्रवृत्ति नैतिकता, देश-प्रेम तथा कला की ओर उन्मुख थी। यही परम्परा आधुनिक इतिहास लेखकों में भी आज विद्यमान है। वह लेवी के समान ही कुशल था। वह अपने युग का महान् साहित्यिक भी था।

नाटक

लैटिन नाटक उस समय रोम के वैधानिक संघर्षों के बीच से गुजर रहा था। २२ वर्षों से चलते हुए युद्ध के शान्ति के अवसर पर ओलिम्पिक खेल-कूद और यूनानी जैसे दुखान्त नाटकों की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। खेल-कूद तो सफल रहे लेकिन नाटक प्रतियोगिता में सफलता नहीं मिल सकी, ऐसा प्रवाद है।

ई० पू० २४० में लीवियस अन्ड्रोनिक्स द्वारा लिखित नाटक पहली बार रोम में खेला गया था। लीवियस यूनानी दास था। युद्ध में बन्दी होकर वह एक सैनिक कप्तान को भेंट में प्राप्त हुआ था। उसकी योग्यता और कार्य कुशलता से प्रसन्न होकर उसके स्वामी ने उसे स्वतन्त्र कर दिया था। उसने हॉमर के आडेसी का लैटिन में अनुवाद भी किया था। उसने यूनानी ढाँचे पर अनेक दुःखान्त नाटकों की रचना की थी लेकिन उन नाटकों को सफलता नहीं प्राप्त हुई। यह असफलता इस बात का प्रमाण थी कि रोमनों को दुःखान्त नाटकों के प्रति तनिक भी रुचि नहीं थी।

ओलिम्पिक खेल-कूद के अवसर पर दुःखान्त नाटक कभी नहीं प्रस्तुत किये गये। प्लोटस ने एरिस्टोफेनीज और फिलेमोन आदि के हास्य नाटकों की नकल कर कुछ हास्य नाटकों की रचना की थी। इसी प्रकार मिनान्डर और दूसरे हास्य नाटककारों की भी नकल की गयी थी। उस शती और उसके २५ वर्ष बाद तक नीवियस, एनियस, पासुवियस, आविसमस आदि दूसरे नाटककार भी हुए थे। उन सबकी रचनाएं अप्राप्य हैं। केवल इतना ज्ञात है कि रोमन वेशभूषा और दृश्यों से युक्त 'तोगाटे' कहलानेवाले नाटक 'पालियाटे' कहलानेवाले नाटकों से अधिक लोकप्रिय थे जिनमें यूनानी वेशभूषा और दृश्य होते थे। किन्तु प्लोटस और दूसरे रोमन वेशभूषा वाले नाटक भी उतने सफल नहीं हुए थे। इसका कारण यह भी है कि रोमन लोग नटों को देवताओं और वीरों की अनुकृति करते नहीं पसन्द करते थे।

लैटिन सुखान्त नाटकों के दो रचयिता प्लोटस और टेरेन्स अत्यधिक प्रख्यात हैं। प्लोटस का काल २५४-१८४ ई० पू० है। प्लोटस पर भी यूनानी साहित्य की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है। उसने यूनानी सुखान्त नाटकों की अनेक विचारधाराएं ग्रहण कीं—विशेषतः मिनान्डर की। आगे चलकर प्लोटस के नाटकों से अनेक फ्रॉच, इटालियन और अंग्रेजी के नाटककारों को प्रेरणा मिली। रोम के इस नाटककार के कुल बीस

नाटक आजकल मिलते हैं। इन नाटकों में 'सिनिचनी' का विशेष स्थान है क्योंकि शेक्सपियर की 'कामेडी आव एरस' का मूलाधार यही नाटक है।

प्लोटस के पश्चात् उसका स्थान टेरेन्स ने ग्रहण किया। उसका काल २६०-१५६ ई० पू० है। 'दि सेल्फ टारमेण्टर' नामक नाटक में टेरेन्स ने विश्व-बन्धुत्व की जो भावना व्यक्त की है वह ध्यान देने योग्य है। उसका कथन है—'मैं मनुष्य हूँ मैं किसी मानव को अपने से भिन्न नहीं मानता हूँ।'

वस्तुतः यह विचित्र किन्तु सत्य है कि रोम में नाटकों का समुचित एवं सम्यक् विकास,—यूनानी नाटकों का आदर्श सम्मुख रहते भी—नहीं हो सका। रोम के नाट्य साहित्य में सेनिका का नाम प्रसिद्ध है यद्यपि उसकी कृतियाँ मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं। आधुनिक कवि भी सेनिका का नाम श्रद्धापूर्वक लेते हैं। शेक्सपियर के समकालीन बेन जानसन ने सेनिका के नाटकों की तुलना यूनानी नाटकार इसकाइलस तथा यूरिपिडोज के साथ की है। किन्तु नाट्य-रचयिता की अपेक्षा वह दार्शनिक श्रेष्ठ था। स्टोइक सिद्धान्त का यह दार्शनिक प्रसिद्ध रोमन सम्राट नीरो का शिक्षक था। इसने राजकीय कृपा से यथेष्ट धन और यश लाभ किया। किन्तु बाद में आत्महत्या करने के लिए विवश किया गया।



गद्य-साहित्य

सिसरो

ईसा के ५० वर्ष पूर्व लैटिन गद्य का आचार्य सिसरो नामक साहित्यकार हुआ। सिसरो की गति-विधि साहित्य-क्षेत्र तक ही सीमित न थी, वह अपने समय का राजनीतिज्ञ, इतिहासवेत्ता, वक्ता, दार्शनिक, धर्म-शिक्षक और आलोचक भी था। उसकी प्रतिभा सर्वतोमुख थी। उसने लैटिन गद्य को ऐसे उच्च मापदण्ड तक उन्नत कर प्रौढ़ स्वरूप प्रदान किया जो सोलहवीं शताब्दी के पश्चात् तक वह आदर्श माना जाता था। प्रौढ़ और प्रांजल लैटिन गद्य का नामकरण ही सर्वदा के लिए 'सिसरोनियन' हो गया। यही नहीं कलापूर्ण साहित्यिक लैटिन गद्य के लिए प्रायः सभी लेखकों को सिसरो का भाषा सम्बन्धी आदर्श रख उसका अनुगमन करना पड़ा है, और तभी उन्हें सफलता मिली है। सम्भवतः सिसरो के अतिरिक्त ऐसा कोई साहित्यकार नहीं, जिसकी वैयक्तिक लेखन-प्रभावशैली का सम्पूर्ण साहित्य और समस्त साहित्यिकों पर इस प्रकार प्रभाव पड़ा हो।

सिसरो को बाल्यकाल से ही रोम में यूनानी विद्वानों द्वारा शिक्षा मिली थी। उसने दो वर्ष तक यूनान जाकर, वहाँ दर्शन का अध्ययन किया था। यूनानी विचार-धारा का प्रभाव उस पर विशेष रूप से पड़ा था। वह भाषा और भावना में यूनानी सिद्धान्तों का ही प्रयोग करता था।

सिसरो पर यूनानी वृत्तत्व कला का प्रभाव था। साथ ही यूनानी सम्यता और शिक्षाचार का भी वह पालन करता था। रोम में पहले के भाषण देने वाले अपनी भिन्न-भिन्न आकृति और स्वर द्वारा नाटकीय कौशल से जनता को प्रभावित करते थे। किन्तु सिसरो शान्ति-पूर्वक सिनेट में अपना भाषण देने के लिए खड़ा होता था। सिसरो

अपने भाषण के आरम्भ से अन्त तक अपना स्वर एक-सा रखता था। उसके भाषण का प्रभाव सीजर की स्थिर आकृति से भली-भांति दृष्टिगोचर होता था।

एक बार सिसरो जब भाषण देने लगा तब सीजर ने कहा—हम लोग उस भयंकर व्यक्ति की बातें नहीं सुनना चाहते। तत्काल व्यक्ति और कलाकार में अन्तर समझते हुए उसने कहा—लेकिन हम सब लोग सिसरो का भाषण सुनने के लिए प्रस्तुत हैं।

सिसरो और उनके समर्थक रोम का एक ऐसा शासक चाहते थे, जो राज्य की सम्पूर्ण शक्ति को लेकर उसका पूर्ण उपयोग कर सकें। सिसरो सीजर के विरुद्ध था। उस समय की रोमन सिनेट की विचित्र अवस्था थी। एक ओर गौर जिम्मेदार राजाओं का दल था। दूसरी ओर धनी व्यापारियों का समूह था, जो अपने लाभ के लिए बहुमत द्वारा सिनेट से बिल पास करा लेता था। इसमें निर्धन जनता की हानि होती और उसके साथ सदैव अन्याय होता। सिसरो निर्भय होकर ऐसे समय अपने भाषण द्वारा उनका विरोध करता।

कुछ लोगों का मत है कि सिसरो अवसरवादी था, किन्तु उस समय की परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि कभी उसे सीजर के विरोधी के रूप में खड़ा होना पड़ता था और कभी उसका समर्थन करते हुए उसे उसकी प्रशंसा करनी पड़ती।

उस समय गणतन्त्र का अन्त हो रहा था। नगर में सर्वत्र अव्यवस्था फैली हुई थी। राज्य में एक नहीं, बीस गृहयुद्ध चल रहे थे। सिसरो की हत्या की इतनी अधिक आशंका थी कि उसे एक छोटी सेना और गुप्तचर रखना पड़ता था।

सिसरो को यह विदित हो जाता था कि कब मिलान और सार्डिनिया से हथियार बन्द गिरोह रोम आ रहा है और वह उन्हें अपने यहाँ नियुक्त कर लेता था। जब रोम में सार्डिनिया के लोगों की नागरिकता अस्वीकृत होती तो सिसरो कहता कि यदि ये नागरिक अधिकार से वंचित हैं तो उनको अपनी सेना में ले लेना चाहिये।

इसमें सन्देह नहीं कि सिसरो अत्यन्त महत्वाकांक्षी था। वह राज्य में उच्च से उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अवकाश लेना चाहता था। निर्धन और दुर्बल का वह सदैव हो पन्न लेता था।

सिसरो ने अपने साहित्य में जिन अनेक उद्धरणों तथा कथा-प्रसंगों का उल्लेख किया है उनसे तत्कालीन साहित्य का भी परिचय प्राप्त हो जाता है। 'एनियस' का सुन्दरतम अंश सिसरो ने उत्कृष्ट कवित्व के निदर्शन के लिए उद्धृत किया है और इसी के फलस्वरूप साहित्य की यह अमर निधि सुरक्षित है अन्यथा आज वह अन्यत्र कहीं प्राप्य नहीं।

सिसरो की दार्शनिक विचारधारा कर्तव्य शास्त्र के प्रश्न पर 'स्टोइक' दर्शन की ओर झुकाव लिए हुए है। यह इतने उच्च नैतिक स्तर को है कि ईसाई लेखक सेन्ट जेरोम तथा सेन्ट आगस्टाइन ने भी उसकी महत्ता स्वीकार की है। सिसरो के जीवन-दर्शन का आधार कर्तव्य है। इसलिए वह इस बात पर आग्रह करता है कि मनुष्य अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को समाजहित के अधीन रखे। उसके मत से सुख का माप-दण्ड ईमानदारी है। व्यक्तिगत लाभ और आत्मसुख की इच्छा या प्रलोभन को ईमानदारी द्वारा दबाया जाना चाहिये। मनुष्य में सबसे सबल प्रेरणा सत्य के प्रति उसका प्रेम है और उसी प्रेरणा से हम ज्ञान, संयम और सौन्दर्य की खोज में लगते हैं।

सिसरो के अनुसार सदाचार के चार प्रधान अंश हैं—सत्य, सामाजिक न्याय, सहस और सन्तुलन। सिसरो सदाचार में सन्तुलन को अधिक महत्व देता है। उसके मत से मनुष्य को सत्य की खोज में इतना नहीं खो जाना चाहिए कि वह अपने क्रियाशील जीवन के आवश्यक कर्तव्यों की उपेक्षा कर दे। अठारहवीं शताब्दी तक अंग्रेजी तथा अन्य साहित्य के लेखक सिसरो की धारा-प्रवाह वक्तव्य शैली तथा उसकी प्रभावकारिणी शक्ति का अनुगमन एवं अनुकरण करते रहे।

सिसरो ने पत्र लेखन-प्रणाली द्वारा काव्य सर्जन की अभिनव पद्धति प्रवर्तित की थी। उसके लिखे हुए पत्रों से तत्कालीन जीवन की अनेक

अमूल्य बातों का रहस्योद्घाटन होता है। उसके लिखे हुए पत्रों में अत्यन्त स्वाभाविकता है। उन्हें पढ़ने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे सब वर्णित दृश्य हमारी आँखों के सम्मुख उपस्थित हो जाते हैं।

अठारहवीं शताब्दी में जितने भी उत्कृष्ट पत्र लेखक अंग्रेजी भाषा में हुए उन सभी ने सर्वसम्मत होकर सिसरो को अपना आचार्य माना।

सिसरो के पश्चात् उसके प्रभाव के रहते हुए भी लैटिन गद्य पतनोन्मुख हो गया। इस समय जो अनेक लेखक हुए उनमें पेट्रोनीयस का व्यंग्य उल्लेखनीय है। पेट्रोनीयस रोमन सम्राट नीरो का मित्र था। उसने रोम के सामाजिक जीवन का मनोरंजक यथार्थवादी चित्रण किया है। उसकी रचना खण्डित रूप में मिलती है और आधुनिक उपन्यास से साम्य रखती हुई लैटिन साहित्य में अपने ढंग की अकेली है। इसमें समाज के एक वर्ग का सच्चा, किन्तु अत्यन्त मनोरञ्जक चित्र है।

पेट्रोनीयस के सौ वर्ष बाद एप्पुलियस का 'गोल्डेन ऐस' प्रकाशित हुआ। इसमें 'क्यूपिड' और 'शेयी' का मनोहारी रोमान्स वर्णित है। एप्पुलियस की यह काल्पनिक और मनोरञ्जक रचना लैटिन साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती है। पेट्रोनीयस और एप्पुलियस की रचनाओं से ही आधुनिक उपन्यासों का जन्म हुआ है। इन दोनों लैटिन लेखकों ने ही उपन्यासों का स्वरूप साहित्य को दिया है।

सिसरो की परम्परा में ही पत्र-लेखन प्रणाली द्वारा नवयुवक प्लिनी ने साहित्य का एक विशिष्ट भण्डार समृद्ध किया। वह प्रसिद्ध इतिहासकार टैसिटस का मित्र और अनुगामी था तथा सम्राट ट्रेजन का प्रिय-पात्र भी था। चाचा वृद्ध प्लिनी ने उसकी शिक्षा-दीक्षा पर प्रारम्भ से ही ध्यान रखा और उसी के परिणाम-स्वरूप नवयुवक प्लिनी समाज में सम्माननीय सिद्धान्तवादी के पद तक पहुँच सका। नवयुवक प्लिनी के पत्रों का महत्व इसीलिए विशेष है कि उनमें तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक जीवन की भाँकी मिलती है।

रोम में जब ईसाई धर्म का प्रचार हुआ तो लैटिन भाषा का भी उसके साथ ही साथ प्रसार हुआ। रोमन कैथोलिक चर्च की भाषा आज भी लैटिन ही है। इस प्रकार अनेक शताब्दियों तक, जब कि भाषाओं का विकास हो रहा था, योरोप के बौद्धिक जन समुदाय की भाषा लैटिन ही थी। समस्त योरोप में शिक्षित व्यक्ति को लैटिन भाषा का ज्ञान रखना आवश्यक समझा जाता था।

शताब्दियों तक लैटिन भाषा के जीवित रहने का कारण यह है कि एक समय रोम ही विश्व का केन्द्र था, उसकी ही सत्ता-महत्ता सर्वत्र स्थापित थी। बहुत काल से धार्मिक तथा अन्य पुस्तकों की रचना लैटिन भाषा में ही होती रही। प्राचीन रोम के अवसान के अनन्तर भी लैटिन में प्रख्यात पुस्तकों का प्रणयन होता रहा। चौथी तथा पांचवीं शताब्दी में सेन्ट आगस्टाइन ने 'कनफेशन' और 'सिटी ऑव गार्ड' लिखी। इस समय सेन्ट टामस एक्वीनस ने लैटिन में ही अपने प्रख्यात दार्शनिक एवं धार्मिक ग्रन्थों की रचना की। ये पुस्तकें आज भी रोमन चर्च की मान्य रचनाएं हैं। दार्शनिक स्पिनोजा ने भी लैटिन भाषा में ही अपने विचार व्यक्त किये।

आज यूनानी तथा लैटिन साहित्य की ओर लोगों की प्रवृत्ति पहले जैसी नहीं है। योरोप इन प्राचीन साहित्यिक परम्पराओं का पठन-पाठन पूर्ववत् नहीं करता, किन्तु इससे यह समझना कि लैटिन भाषा अस्त हो गई, भारी भ्रम होगा। पश्चिमी योरोप की प्रायः समस्त आधुनिक भाषाओं की धमनियों में लैटिन का रक्त आज भी प्रवाहित है। फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश और अंग्रेजी भाषाओं पर लैटिन का प्रभाव स्पष्ट अंकित है। उनका मूलाधार लैटिन भाषा ही है। आज भी योरोप के सभ्य जीवन की प्रायः सभी कार्य प्रणालियों में लैटिन का आधार लेना ही पड़ता है। लैटिन मृत भाषा नहीं कही जा सकती, वह अमर है। उसका मूल स्वरूप आधुनिक भाषाओं में चिरस्थायी है और रोम के इतिहास के साथ-साथ आगामी युगों में भी यह भाषा चिरस्मरणीय रहेगी।

हिन्दी साहित्य में अपने विषय की अकेली पुस्तक !

यूरोपीय साहित्यकार

लेखक ने अनेक वर्षों के घोर परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ को पूर्ण किया है यूरोप के साहित्य-महारथियों की जीवन-गाथा, उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियों का कथा-भाग और उनकी कला की विवेचना आदि प्रस्तुत कर पुस्तक को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाया गया है ।

मोनी की छुपाई और आकर्षक गेटअप देखकर आप मुग्ध हो जायेंगे ।

मूल्य केवल पाँच रुपये

काशी के प्रसिद्ध दैनिक 'आज' की सम्मति देखिये

इस पुस्तक के अध्ययन से न केवल यूरोपीय भाषाओं के प्रमुख साहित्यकारों का परिचय हो जाता है, बल्कि उस साहित्य के पठन मन की भी प्रेरणा प्राप्त होती है ।

बिहार के प्रतिष्ठित कहानी लेखक-श्री राधाकृष्ण की सम्मति है-

यूरोपीय साहित्यकार को पढ़कर तो अवाक् हो जाना पड़ा था ।
यूरोपीय साहित्यकार लाजवाब चीज है ।

हिन्दू विश्व विद्यालय, काशी में अंग्रेजी विभाग के रीडर प्रो०बी०एल० सहानी लिखते हैं--It is no more patch-work of books already available in English, but is an original contribution to the literature of criticism and is specifically intended for scholars already familiar with the subject.



